भाग-3

उद्यमी लभते सिद्धिम्
niesbud

आज़ादी का अमृत महोत्सव

स्वावलंबन की ओर

डॉ. पूनम सिन्हा
लेखिका एवं मुख्य संग्रहकर्ता

राष्ट्रीय उद्यमिता एवं लघु व्यवसाय विकास संस्थान
(कौशल विकास एवं उद्यमशीलता मंत्रालय, भारत सरकार)

स्वावलम्बन की ओर – भाग 3

राष्ट्रीय उद्यमिता एवम् लघु व्यवसाय विकास संस्थान (निसबड) द्वारा आयोजित विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों के तहत प्रशिक्षण प्राप्त कर उद्यम स्थापित करने वाले पच्चहत्तर (75) प्रतिभागियों के उद्यमी बनने की प्रेरकगाथा का तृतीय संस्करण।

सामाग्री संकलन एवम् लेखन
डा0 पूनम सिन्हा
निदेशक, निसबड
एंव
श्री अरूण बहादुर चन्द
मुख्य परामर्शदाता, निसबड

तृतीय संस्करण–2022

प्रकाशक

राष्ट्रीय उद्यमिता एवम् लघु व्यवसाय विकास संस्थान (निसबड)
(कौशल विकास एवम् उद्यमशीलता मंत्रालय, भारत सरकार)
प्रधान कार्यालय : ए–23, सेक्टर–62, संस्थानिक क्षेत्र, नोएडा, उ0प्र0
फोन नं– 0120–4017000, फैक्स नं–
वेबसाईट–www.niesbud.nic.in / www.niesbud.org

अनुराधा वेमूरी, भा.व.से.
महानिदेशक

Anuradha Vemuri, IFS
Director General

उद्यमी लभते सिद्धिम्
niesbud

प्राक्कथन

राष्ट्रीय उद्यमिता एवं लघु व्यवसाय विकास संस्थान समाज के सभी वर्गों विशेषकर युवाओं में उद्यमिता के प्रति जागरूकता को बढ़ाने के लिए ''स्वावलंबन की ओर'' पत्रिका प्रकाशित करने की पहल की है, जिसका तृतीय संस्करण संस्थान द्वारा प्रकाशित किया जा रहा है। संस्थान द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त कर अपनी उद्यमी सोच के बल पर सफलता के आयामों को प्राप्त करने वाले 75 उद्यमियों की संधर्ष से लेकर सफलता तक के सफर को संकलित किया गया है। मैं संस्थान को उपरोक्त उद्देश्य का सफलतापूर्वक संकलन, प्रकाशन और उद्यमिता विकास की दिशा में किये जा रहे उत्कृष्ट कार्य के लिऐ शुभकामनाऐं देती हूँ।

इस वर्ष आजादी की 75वीं वर्षगांठ का जश्न आजादी के अमृत महोत्सव के रूप में मनाया जा रहा है। भारत की आजादी के वीर, वीरांगनाओं, भारत के निर्माणकर्ताओं को नमन कर रहे है। यह वर्ष हर भारतीय के लिए ऐतिहासिक होने के साथ संकल्पों से भरा है। आत्मनिर्भर भारत का संकल्प, कौशल से कुशल भारत का संकल्प, विकासशील से विकसित भारत के संकल्प के तहत भारत को दुनिया की महाशक्ति बनाने के लिए आज समाज के सभी वर्गों विशेषकर आर्थिक,समाजिक रूप से कमजोर वर्गों को विकास की मुख्यधारा से जोडने के लिये उन्हें कौशल प्रदान कर कुशल बनाने के साथ ही उद्यमी विचारधारा से अभिप्रेरित कर उद्यम स्थापना के लिए सुखद आवरण प्रदान किया जा रहा है।

मुझे पूरा विश्वास है कि संस्थान के इस रचनात्मक प्रकाशन के माध्यम से देश के युवाओं को उद्यम स्थापना के लिए प्रेरित कर देश को वैश्विक उद्यम पारिस्थिकी क्षेत्र के रूप में विकसित करने की दिशा में एक सुखद प्रयास होगा। जिससे ,रोजगार सृजन की विचार धारा को बढ़ावा मिलेगा। इसी विश्वास के साथ सभी को सुखद भविष्य की कामना के साथ सहर्ष शुभकामनाऐं।

धन्यवाद,

(अनुराधा वेमूरी)
महानिदेशक, निसबड

THE NATIONAL INSTITUTE FOR ENTREPRENEURSHIP AND SMALL BUSINESS DEVELOPMENT
Ministry of Skill Development and Entrepreneurship, Govt. of India
ए-23, सैक्टर-62, (संस्थागत क्षेत्र), नौएडा-201309, उ.प्र. (भारत)
A-23, Sector-62, (Institutional Area), NOIDA-201309, U.P. (INDIA)
☎ : 91-120-4017001, 4017009
E-mail: dg@niesbud.gov.in Website: www.niesbud.nic.in / www.niesbud.org / www.niesbudtraining.org

डा. पूनम सिन्हा
निदेशक

Dr. Poonam Sinha
Director

उद्यमी लभते सिद्धिम्
niesbud

लेखकीय

''स्वावलम्बन की ओर'' भाग 1 एंव 2 को आप सब के मिले अपार स्नेह और समर्थन को देखते हुए संस्थान (निसबड) आजादी के अमृतकाल के अवसर पर ''स्वावलम्बन की ओर'' भाग 3 का प्रकाशन कर रहा है। संस्थान (निसबड) द्वारा पूर्व में प्रशिक्षित प्रतिभागी, जो वर्तमान में एक कुशल उद्यमी के रूप में स्वंय् को स्थापित कर रोजगार के अवसर विकसित करने के साथ–साथ युवा पीढी को अभिप्रेरित करने का कार्य कर रहे है। ऐसे 75 प्रतिभागियो के उद्यमी बनने की संघर्ष और सफलता गाथा को ''स्वावलम्बन की ओर'' भाग–3 को प्रकाशित कर रहे है। विगत वर्षों में विश्व ने कोरोना जैसी आपदा को देखा है, जिसने मानव स्वस्थ के साथ विश्व को आर्थिक, सामाजिक रूप से प्रभावित करने का कार्य किया। ये भारतीयों के कौशल और उद्यमी सोच का परिणाम ही है कि हम आज हम आत्मनिर्भर भारत, कौशल भारत, कुशल भारत, एक भारत श्रेष्ठ भारत, स्टार्टअप इंडिया के तहत विकसित भारत के संकल्प को सिद्धि तक पहुंचाने के लिये प्रतिबद्ध है।

विकसित भारत के निर्माण के लिये मानसिक गुलामी को खत्म कर, मांगने की जगह, देने की मानसिकता, अवसरों को उपलब्धी में बदलने की मानसिकता से ही विकसित भारत के प्रण को उद्यमी प्रयासों से पूर्ण किया जा सकता है। आज डिजीटल भारत, स्टार्टअप इंडिया को आकार देने वाले युवा ग्रामीण क्षेत्र, टायर 2 और 3 शहरों से आ रहे है। इसी उद्यमी चेतना को जन–जन में विकसित करने के उद्धेश्य को लेकर ''स्वावलम्बन की ओर'' का प्रकाशन किया जा रहा है।

कौशल विकास एवं उद्यमशीलता मंत्रालय, भारत सरकार के राष्ट्रीय संस्थान के रूप में कार्य करने वाले राष्ट्रीय उद्यमिता एवं लघु व्यवसाय विकास संस्थान ऐसे युवा जो परिस्थितिवश संसाधनों के अभाव में विकास की डगर से दूर अकुशल कर्मी के तौर पर अपना भविष्य तलाश रहे थे। ऐसे युवाओं को प्रशिक्षण के माध्यम से कुशल बनाकर अवसर को उपलब्धि में बदलने का हुनर सीखा कर इन्हें स्वालम्बीं बनाने का कार्य करता है। इस पुस्तक में देश के अलग–अलग क्षेत्रों से, परिवेशों से आने वाले 75 ऐसे ही उद्यमियों की कहानी का संकलन किया गया है, जिन्होनें निराशा, भविष्य के प्रति अस्पष्टता के भाव से बाहर निकल कर संस्थान से प्रशिक्षण प्राप्त कर न केवल स्वंय् को अपितु अपने साथ अन्यों को भी रोजगार से जोड़कर आत्मनिर्भर भारत के संकल्प को मजबूत करने का काम किया है।

इस पुस्तक को लिखने एवम् संग्रह करने में सभी संस्थानिक सदस्यों का सराहनीय प्रयास रहा है। मैं इस पुस्तक के संकलन, लेखन और प्रकाशन में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग करने वाले सभी सहयोगियों का आभार व्यक्त करती हूँ। हमारा यह प्रयास सकारात्मकता, अवसर, अभिज्ञान, चयन और उपलब्ध अवसरों को सार्थक कर उपलब्धि में बदलने का है।

हमारे इस प्रयास के प्रति आपके यदि कोई सुझाव एवं सराहना हो तो हम से जरूर साझा करें। आपका अंकलन और स्नेह ही हमारी प्रेरणा है। एक बेहतर कल उन्नत भारत की कामना के साथ सभी को प्रेरणा, संघर्ष एवं मार्गदर्शन से पूर्ण निसबड प्रशिक्षित उद्यमियों की कहानी संग्रह ''स्वालम्बन की ओर'' भाग–3 आप सभी के सम्मुख प्रस्तुत की जा रही है।

धन्यवाद,

पू०सिन्हा

डॉ0 पूनम सिन्हा
(निदेशक)
निसबड

THE NATIONAL INSTITUTE FOR ENTREPRENEURSHIP AND SMALL BUSINESS DEVELOPMENT
Ministry of Skill Development and Entrepreneurship, Govt. of India
ए-23, सैक्टर-62, (संस्थागत क्षेत्र), नौएडा-201309, उ. प्र. (भारत)
A-23, Sector-62, (Institutional Area), NOIDA-201309, U.P. (INDIA)
☎: 91-120-4017039
E-mail: director-ee@niesbud.gov.in, Website: www.niesbud.nic.in / www.niesbud.org / www.niesbudtraining.org

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	कहानी का नाम	पृष्ठ संख्या
1	प्रकाशमान वंदना	1–2
2	इको एडवेन्चर	3–4
3	ओट्रीनी	5–6
4	जैविक डिजिटलता	7–8
5	लिक सिप डिप	9–10
6	सक्षम	11–12
7	पैड गर्ल	13–14
8	काष्ठ संसार	15–16
9	केनसार्थक	17–18
10	फिजीकल से डिजीटल	19–20
11	लिल फार्म – एक जैविक संसार	21–22
12	अंकुरित होती कविता	23–24
13	ग्रेट हिमालय ट्रेक	25–26
14	सेना से स्वाद तक	27–28
15	उद्यम से उन्नति तक	29–30
16	रोजगार से स्वरोजगार की ओर	31–32
17	दीपिका राणा	33–34
18	एल्पी	35–36
19	गुंथते धागे – बुनते सपने	37–38
20	सेना से स्वालम्बन की ओर	39–40
21	श्री गणेश	41–42
22	आत्मनिर्भर मधु	43–44
23	पेपर मेकर	45–46
24	सॉल्यूशन पॉइट	47–48
25	''आरजे क्रिएशन वर्ल्ड'' :	49–50

niesbud

क्रम संख्या	कहानी का नाम	पृष्ठ संख्या
26	गंगा मशरूम	51–53
27	निर्भरता से आत्मनिर्भरता की बढते कदम	53–55
28	आवयश्कता से अविष्कार	56–57
29	एक कदम मजिंल की ओर	58–59
30	सपने हुए सकार – उद्यम को मिला आकार	60–61
31	सौंदर्य संसार	62–63
32	श्रृंगार से उद्यम आधार	64–65
33	विश्वास की डोर – उन्नति की ओर	66–67
34	परिधान से मिली पहचान	68–69
35	पिंकी– सशक्ता से समृद्धि	70–71
36	कर्म ही पूजा	72–73
37	उद्यम से मिली दिशा	74–75
38	सिलाई से मिली पहचान	76–77
39	सिलते कपडें बुनते सपने	79–81
40	आहनी	82–83
41	संघर्ष से सशक्ता, सशक्ता से सफलता	84–85
42	कैमरे की नजर से	86–87
43	बैग से टैग तक	88–89
44	उद्यम से मिली पहचान	90–91
45	खिलौने से खिलता उद्यम	92–93
46	सार्थक कदम	94–95
47	मेहनत का स्वाद	96–97
48	अभिनव प्रयोग	98–99
49	बढ़ते कदम	100
50	जीवन रेखा	101–102
51	जय मॉ चंडिका	103–104
52	उद्यम से महकता जीवन	105–106
53	सेल्वमुरुगन	107–109

क्रम संख्या	कहानी का नाम	पृष्ठ संख्या
54	आरंभ से आयाम तक	109–110
55	पहाड़ की बेटी	111–112
56	यारा	113–114
57	अन्नपूर्णा	115–116
58	रेवोल्ट्स एनर्जी	117–118
59	डिजीटल संसार	119–120
60	पवित्रा भवः	121–122
61	रोशनी की ओर	123–124
62	नाप तौल	125–126
63	सुई धागा	127–129
64	डिजीटल प्वांईट	130–131
65	वस्त्र संसार	132–133
66	सशक्त नारी : सशक्त राष्ट्र	134–135
67	विश्वास से भरी ममता	136–137
68	जस्ट क्लिक	138–139
69	आकार से साकार तक	140–141
70	डर्बी	142–143
71	डिजीटल पथ पर बढते कदम	144–145
72	कोशिश से कामयाबी तक	146–147
73	बदलती नारी : निखरती नारी	148–149
74	बढतें कदमों का साथी	150–151
75	डोगरा आर्ट	152–153

1. प्रकाशमान वंदना

उद्यमी का नाम	वंदना मुन्ना जी सराठे
उद्यम का नाम	इलेक्ट्रिशियन वर्क होम वायरिंग
उद्यम लागत	1,50000
उद्यम का स्थापित वर्ष	2020–21
अनुमानित वार्षिक आय	2.5 से 3.0 लाख
उद्यमी का पता	वाथोडा जिला नागपुर, महाराष्ट्र
कर्मचारियों की संख्या	01

प्रकाश को जीवन के, उन्नति के, उल्लास के प्रतीक के रूप में हम जानते और मानते है। प्राकृतिक माध्यमों के अलावा समय के साथ–साथ प्रकाश उत्सर्जित करने के माध्यमों में निरन्तर विकास हुआ है, इन्हीं माध्यमों में एक है विद्युत।

विद्युत पर हमारी बढती निर्भरता के कारण यह रोजगार के बडें स्रोत के रूप में विकसित हुआ है। आज हर भवन न केवल हमें जगमग दिखाई देता है बलकि हमारी सुविधा के कई विद्युत संचालित उपकरण ऐसे हैं जो हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन गये है। महिला होकर इन विधुत तरंगो, तारों और सर्किटों के बीच अपना स्वरोजगार स्थापित करने वाली वंदना मुन्ना जी सराठे ने महिला सशक्तिकरण और उद्यमिता को असल मे परिभाषित किया है।

शाहिल नगर, वाथोडा, नागपुर, महाराष्ट्र की रहने वाली 23 वर्षीय वंदना मुन्ना जी सराठे ने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा पूर्ण कर इलेक्ट्रिशियन ट्रेड में बी.ई की शिक्षा प्राप्त की है। अमुमन

लडकियां इलेक्ट्रिशियन ट्रेड में कम ही प्रवेश लेती है पर वंदना का मानना था कि जो कार्य पुरूष करते हो उसे हम क्यों नही सकते है।

बी.ई की शिक्षा पूर्ण होने के पश्चात अपनी अजीविका संवर्धन के रूप में वह इलेक्ट्रिशियन का ही कार्य करना चाहती थी पर उसकी शुरूआत को लेकर उसके मन में कई संचय थे। अपने मन में उठ रहे प्रश्नों की खोज में वह निसबड द्वारा नागपुर में आयोजित उद्यमिता विकास कार्यक्रम तक ले आये।

प्रशिक्षण के दौरान उद्यम स्थापना, संचालन, प्रबन्धन जैसे विभिन्न विषयों की विस्तरित जानकारी प्राप्त कर वो कहती है कि मेरे मन में जो अपना स्वयं का कार्य करने एवं व्यवसाय खोलने का सपना था उसे निसबड के इस 15 दिवसीय प्रशिक्षण ने साकार कर दिया।

प्रशिक्षण पूर्ण होने के पश्चात मैने सबसे पहले इलेक्ट्रीकल हाउस वायरिंग हेतु उपयोग में आने वाले सारे उपकरण क्रय किये एवं अपना व्यवसाय 1.50 लाख रू0 की पूंजी लगाकर प्रारंभ किया। अब मै नये बनने वाले घरो की वायरिंग करने का कार्य लेती हूं जिसमें मै दो व्यक्तियों को रोजगार दे पाने में सक्षम हुई हूं।

2. ईको एडवेन्चर

उद्यमी का नाम	रणवीर सिंह
उद्यम का नाम	टाईगर फॉल एक्वाटिक कैम्प एंड रेस्टोरेन्ट
उद्यम लागत	10,00000 / –
उद्यम का स्थापित वर्ष	2000
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	20 सं 25 लाख
उद्यमी का पता	देहरादून
योजना का नाम	पी0एम0ई0जी0पी
कर्मचारियों की संख्या	**10**
उद्यम का प्रकार	सेवा का क्षेत्र

हिमालय की गोद में बसा पौराणिक मान्याताऔं और आस्था के केन्द्र के रूप में विख्यात उत्तराखंड जो सन् 2000 में एक पर्वतीय राज्य के रूप में अस्तित्व में आया है,जो अपनी प्रकृतिक सुन्दरता से और देव स्थानों से पर्यटको को आकर्षित करने के साथ साथ युवा को सहासिक पर्यटन व्यवसाय की तरफ भी आकर्षित कर रहा है।

ये कहानी एक ऐसे युवा की है जिसनें पहाड की चुनौतियों को स्वीकार कर उसके रमणीय स्थलों को रोजगार के साधन के रूप में अपनाकर न केवल अपनी आजीविका के साधन को विकसित किया है बलकिं अन्य के लिए भी रोजगार के अवसरों को विकसित करने का काम किया है।

मूल रूप से उत्तराखंड की राजधानी देहरादून के रहने वाले रणवीर सिंह को बचपन से ही पहाड अपनी ओर

अकर्षित करते थे। उसका यही जुनुन उसे उत्तरकाशी स्थित नेहरू पर्वतारोहण संस्थान ले आया। जहॉ से उन्होंने बेसिक तथा एडवांस कोर्स किया। यह वह समय था जब रणवीर ने तकनीकी रूप से पहाडों में जीवन को कैसे बेहतर जीया जाता है, यह सब सीखा। पर्वतारोहण संस्थान से प्रशिक्षित होने के पश्चात उन्होंने फ्री लांसर के रूप में कार्य कर विभिन्न व्यवसायिक,छात्र–छात्राऑं के समुहों को साहासिक खेलों का प्रशिक्षण किया।

इस क्षेत्र में प्रशिक्षित होने के साथ साथ कार्य अनुभव प्राप्त कर उन्होंने इसे ही अपने अजीविका के साधन के रूप में अपनाने का विचार मन में लाया। उनके प्रयासों को दिशा देने का काम किया निसबड ने उद्यमिता विकास कार्यक्रम का प्रशिक्षण प्राप्त कर संस्थान के सहयोग से उन्होंने प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम योजना के अन्तर्गत 10 लाख रु. का ऋृण प्राप्त किया और अस्तित्व में आया टाईगर फॉल एक्वाटिक कैम्प एंड रेस्टोरेन्ट।

देहरादून की चकराता तहसील के अन्तर्गत चकराता से लगभग 20 किमी आगे टाईगर फॉल के निकट स्थित टाईगर फॉल एक्वाटिक कैम्प एंड रेस्टोरेन्ट में रणवीर पयर्टकों को कैम्प अवासीय सुविधा के साथ इंडियन, चाईनीज और कोन्टीनैन्टल भोजन की सुविधा भी प्रदान करते है पर यह का मुख्य आकर्षण जिंप लाईनिंग,रिवर क्रोसिंग,वाटर रेपलिंग आदि साहसिक खेल है।

आज वर्तमान में रणवीर स्ंवम् के साथ अन्य 8 से 10 लोंगो की आमदनी का साधन है। 10 लाख के शुरूआती निवेश से प्रारंभ टाईगर फॉल एक्वाटिक कैम्प एंड रेस्टोरेन्ट से आज रणवीर 20 से 25 लाख रु. सालाना लाभ प्राप्त कर सभी को न केवल प्रकृति के करीब लाने को अपनाने को प्रेरित कर रहे है बंलकि पहाडों पर स्वरोजगार की सम्भावनाऑं को पखं दे रहे है।

3. ओट्रीनी

उद्यमी का नाम	डॉ शैलेश मिश्रा
उद्यम का नाम	ओट्रीनी इंडिया प्राईवेट लिमिटेड
उद्यम लागत	200000
उद्यम का स्थापित वर्ष	2015
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	75.0 से 80.0 लाख
उद्यमी का पता	गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश
कर्मचारियों की संख्या	27
उद्यम का प्रकार	उत्पादन

देश के प्रधानमंत्री जी कहते है " हमें देश में व्यवाहरिक बदलाव ला कर देश के युवाऔं के भीतर से नौकरी पाने की मानसिकता की जगह नौकरी देने की भावनाऔं और विचारों को विकसित करना है। यदि कोई उद्यम पांच लोगो को रोजगार भी दे पा रहा है तो वह देश को आगे बडाने में एक मील के पत्थर के रूप में कार्य कर रहा है।

हमारा देश अबादी की दृष्टि से विश्व के सबसे युवा देशों में एक है और यही युवा आत्मनिर्भर भारत के संकल्प को सिद्वि तक पहुँचाने के सबसे महत्वपुर्ण आयाम है। यह कहानी भी एक ऐसे युवा की है, जिसनें नौकरी के एक सुखद जीवन को छोडकर स्वरोजगार के संघर्ष पथ को चुना।

आबादी की दृष्टि से देश का पहले राज्य, उत्तरप्रदेश के गाजियाबाद में स्थित ओट्रीनी इंडिया प्राईवेट लिमिटेड के संस्थापक डॉ शैलेश मिश्रा की कहानी आज के युवा उद्यमी विचारधारा के युवाओं के लिए प्रेरणा है।

तकनीकी उच्च शिक्षा (एम.एससी, एम.टेक और पी.एच.डी.)प्राप्त कर एक अन्तराष्ट्रीय इलैक्ट्रोनिक कम्पनी में उच्च पद पर कार्य करने लगें। नौकरी में पैसा,अराम सब था नही था तो बस खुद से अपने देश अपने देशवासियों के लिये कुछ करने का स्वतन्त्र भाव। बस यही बैचेनी और स्वंम् से कुछ करने का जज्बा ने शैलेश को नौकरी को अलविदा कहने को प्रेरित किया। हांलकि यह फैसला इतना सहज कभी भी नही था पर घरवालों के सहयोग ने उनकी उममीदों को और भी मजबुत किया। स्वरोजगार की शुरूआत और भविष्यों की अकांक्षाऔं के मार्गदर्शन के लिये वो संस्थान (निसबड) के सम्पक्र मे आये जहॉ से प्रशिक्षण प्राप्त कर उनके उद्यम स्थापना के सपने को एक दिशा प्रदान हुई।

सन् 2015 में किराये पर ली गई जगह पर 200000 रूपये के शुरूआती निवेश कर एकल स्वमित्व फर्म के रूप में ओट्रीनी की शुरूआत हुई। अपने अनुभव के आधार पर वह वह घरेलू और व्यवसायिक प्रयोगों के लिये इलैक्ट्रानिक्स उपकरणों का निर्माण करने लगें। लगातार बडता प्रदुषणओर संकम्रण जहॉ एक ओर सभी के लिये चिंता का विषय रहा है। वही इसे अवसर के रूप में लेते हुऐ हवा को शुद्व करने, संक्रमण को सिमित या खत्म करने के लिये इलैक्ट्रनिक उत्पादों की श्रृख्ंला बनायी। आज उत्पादों की सॅख्या और उद्यम का अकार दोंनों ही बड रहे है।

शैलेश के उद्यम में उनकी माता किरण कुमारी जी का बहुत अहम और सक्रिय योगदान है। वो कहती है शैलेश के नौकरी छोडने के फैसले से वो कभी भी असहज नही हुई क्योंकि शैलेश हर कार्य बडे सोच विचार और समर्पित होकर करता है।हर अभिभावक को अपने बच्चों को उद्यम के लिये अभिप्रेरित करना चाहिये, क्योंकि अगर रोजगाार देने वाले ही नही होगे तो रोजगार के अवसर बडेगे कैसे?

आज ंप्रोपराईटर फर्म से ओट्रीनी इंडिया एक प्राईवेट लिमिटेड कम्पनी बन गई है। 27 से ज्यादा कर्मचारियों के साथ शैलेश का यह सफर आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य को पाने की दिशा में एक ऐसा सकारात्मक कदम है,जो भविष्य के सशक्त भारत में युवाऔं की अहम भागीदारी को दिखाता है।

4. जैविक डिजिटलता

उद्यमी का नाम	हार्दिक रावत
उद्यम का नाम	जैविक डिजीटल
उद्यम लागत	60,000 ⁄ –
उद्यम का स्थापित वर्ष	2020–21
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	30–35 लाख
उद्यमी का पता	सोनीपत, हरियाणा
कर्मचारियों की संख्या	**10**
उद्यम का प्रकार	कृषि

तकनीक के इस दौर में फिजिकल से डिजीटल होती जिन्दगी में मनुष्य अपने दैनिक उपभोग की वस्तुओं के साथ साथ अपने खाने की अधिकतर पदार्थों के लिये आज पैकेट बन्द उत्पादों पर निर्भर है,जिसका सीधा सीधा प्रतिकूल प्रभाव हमारे स्वस्थ पर दिखता है। ऐसे में अधिकतर लोग जैविक उत्पादों की तरफ आकर्षित हो रहे है जिस कारण जैविक उत्पाद न केवल अच्छे स्वास्थ्य के प्रतीक बल्कि स्वरोजगार के साधन के रुप में भी विकसित हो रहा है। यही कारण है कि यह क्षेत्र आजीविका संवर्धन के तौर पर विशेषकर युवाऔं को अपनी ओर आकर्षित कर रहा है।

कृषि और अपने दुग्ध उत्पादन के लिये पुरे देश में प्रसिद्व हरियाणा,सोनीपत के रहने वाले हार्दिक रावत ने तकनीकी शिक्षा के रुप में इंजीनियरिग से स्नातक करने के बाद व्यावासयिक शिक्षा के रुप में एमबीए करने के बाद तकनीकी प्रौधोगिकी के क्षेत्र में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों में6 वर्षों तक नौकरी करने के बाद अपने कौशल के आधार पर अपना स्वंम् का रोजगार स्थापित करने का मन बनाया। मूलरुप से कृषक परिवेश से आने वाले हाार्दिक ने जैविक खाद्य उत्पादों के उत्पादन के लिये खेती व्यवसाय को तो चुना पर उसे वह अपने कार्य अनुभव के साथ जोडकर करना चाहते थे।

कार्य की शुरुवात करते हुए उन्होंने जैविक डिजीटल नाम से ऑनलाईन साईड बनाकर अपने कार्य को शुरु किया। जैविक कृषि की उन्नत तकनीकों के साथ उद्यमिता को बेहतर रुप से जानने के लिये उन्होंने निसबड द्वारा आयोजित उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिभाग किया। हार्दिक बताते है ये उनकी जिन्दगी का यह बडा सुखद बदलाव था।

संस्थान के मार्गदर्शन से नेशनल सीड कॉर्पोरेशन से उन्नत किस्मों के बीजो को विक्रय कर उनका रोपण किया गया। लगभग 30 से 40 फसलों जिसमें मुख्यतः गाजर, मूली,मैथी,पालक,धनिया,हल्दी आदि है। सभी सब्जीयों को जैविक मानकों पर प्रमाणित कराने के साथ साथ उनकी गुणवत्ता को बनाये रखते हुऐ उपभोक्ताओं तक पहुॅचाने का कार्य किया जा रहा है।

शुरूवाती 50से 60 हजार के निवेश के साथ प्रारम्भ जैविक डिजीटल आज अपने जैविक उत्पादों के प्रति अपने उपभोक्ताओं में विश्वास बनाने में कामयाब हुआ है। उसी का कारण है कि आज हार्दिक अपने साथ 10 लोगों को रोजगार देकर उनकी आजीविका का साधन बने है। इसके साथ साथ वह वार्षिक 30 से 35 लाख के टर्नओवर पर कार्य कर रहे है।

किस प्रकार से अपनी परम्परागत सीख को अपने कौशल से, आज और आने वाले कल के लिये आधार बनाकर उद्यमिता को प्रदशित किया जाता है, इसके जीवन्त और जैविक रूप में निखर रहे हार्दिक को हमारी हार्दिक शुभकामनाऐं।

5. लिक सिप डिप

उद्यमी का नाम	हर्षित तनेजा
उद्यम का नाम	लिक सिप डिप प्राईवेट लिमिटेड
उद्यम लागत	8,50,000रू0
उद्यम का स्थापित वर्ष	2020–21
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	70 लाख
उद्यमी का पता	तिलक नगर, दिल्ली
कर्मचारियों की संख्या	03
उद्यम का प्रकार	सेवा कार्य

देश की दिल कही जाने वाली,देश की राजधानी दिल्ली, देश के कौने कौने से आने वाले हर भारतीय के लिये उम्मीद का वो दरवाजा है जिसके पीछे वो अपने सपनों को साकार होते देखता है। कहते है दिल्ली दिल वालों की है, यह हर रोज लाखों लोग अपने काम पर निकलते है ताकि वो अपने और अपनों के दिल में खुद की जगह बना पाये। इसी दिलवालों के शहर में रहने वाले हर्षित तनेजा ने हर किसी के दिल में बस जाने का रास्ता उनके पेट से बनाया।

दिल्ली के रहने वाले हर्षित तनेजा बचपन से अपनी माता जी को किचन में अलग अलग पकवान बनाते देखकर उनको भी खाना पकाने और उसे सजाकर परोसने का मानो एक शौक सा हो गया था। मेधावी और जिज्ञासू छात्र के रूप में अपनी माध्यमिक शिक्षा प्राप्त कर अपने सपनों को आकार देने के लिये उन्होंने पूसा इस्टीट्यूट ऑफ होटल मैनेंजमैंट से स्नातक की शिक्षा प्राप्त की

है। पूसा में अपनी शिक्षा के द्वितीय वर्ष में कॉलेज फेस्ट में उन्होंने अपना एक फूड स्टॉल लगाया। उनकी उम्मीद से कही ज्यादा उन्होंने 45000 रू0 की आय की, इस प्रयास ने उनको इतना उत्साहित किया कि उन्होंने अपनी पढाई के दौरान ही अपने कॉलेज मित्र के साथ एक प्राईवेट लिमिटेड कम्पनी स्थापित की,जिसको नाम दिया लिक सिप डिप।

अपने उद्यम को विस्तारित और व्यावस्थित रूप से चलाने के लिये उन्होंने निसबड से सम्पक्र किया और प्रशिक्षण प्राप्त कर उद्यम स्थापना,संचालन और सतत विकास की बरीकियों को जाना। इस कम्पनी के तहत उन्होंने कैंटरिंग सर्विस, कॉरपोरेट इवेन्ट, फेस्ट,फूड डिलीवरी आदि के माध्यम से आम व्यक्ति से लेकर सरकारी और कॉरपोरेट कार्यालयों तक अपने कार्य को विस्तारित किया। उनकी कम्पनी के सह संस्थापक मृर्दुल चावला अपने ग्प्रहकों को बनाने और बडाने के लिये उनसे सम्पक्र स्थापित करते है तो दुसरी तरफ हर्षित अपने कर्मचारियों और खाने की गुणवत्ता को देखने का कार्य करते है।

आज लिक सिप डिप अपने 09 कर्मचारियों के साथ 70,00,000 रू0 का टर्नओवर करने में कागयाब हो पाया है।हर्षित अपनी इस कामयाबी में जितना प्रयास अपनी मेहनत का मानते है उतना ही वो निसबड के मार्गदर्शन को भी महत्वपूर्ण बताते है जिस उम्र में बच्चे अपने ने विकल्प तलाश करते है, उस उम्र में हर्षित ने उद्यम स्थापित कर युवाओं को प्रेरणा और दिशा देने का काम किया है।

6. सक्षम

उद्यमी का नाम	कविता कुमार
उद्यम का नाम	सक्षम रसोई
उद्यम लागत	50,000/–
उद्यम का स्थापित वर्ष	2020
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	18.0 से 20.0 लाख
उद्यमी का पता	दिल्ली
कर्मचारियों की संख्या	10
उद्यम का प्रकार	सेवा

मानव प्रजाति के विकास में विपदायें भी कुछ कम नही आई है,कुछ ऐसी ही चुनौती कोरोना के रूप में सामने आई। इस प्रतिकुल परिस्थिति में जो अपने कर्मबल और उद्यमी विचारधारा से चुनौतियों को बोना बना दे वास्तव में वही उद्यमी है। महिला सृजन,कुशल प्रबंधन का प्रतीक होने के साथ ही रचनात्मकता की प्रतिमुर्ति भी है। कुछ कलाओं में मानों वह बचपन से सिद्वहस्त होती है उनमें एक है स्वादिष्ट खाना बनाना और सुन्दर तरीके से उसे परोसना। कुछ इसे अपने घर तक सीमित रखती है तो कुछ इसे व्यवसायिक रूप देकर उद्यम के पटल पर सफलता की नई गाथा को लिखती है।

यह कहानी भी एक ऐसी महिला की है जिन्होंने अपने हुनर से उद्यमिता की अवधारणा को अपनाकर न केवल अपनी आर्थिक और समाजिक प्रतिष्ठा को बढाया बंलकि अपने साथ अन्य महिलाओं को भी सशक्त करने का काम किया है।

दिल्ली की रहने वाली कविता कुमार जोकि निसबड से प्रशिक्षित होकर प्रशिक्षण से मिले मार्गदर्शन के आधार पर अपना उद्यम स्थापित करने का मन बना रही थी कि दुनिया के साथ साथ देश में कोरोना के कहर ने उनके अंकुरित होते विचार को मानो रोक सा दिया। लॉकडाउन की प्रक्रिया ने एकल रूप से निवास कर रहे कही लोग, जो बाहर से (होटल,रेस्टोरेंट) खाना खाते थे। उन सभी के सामने खाना का संकट गहरा गया।

इसी चुनौती को अवसर के रूप में लेकर सन् 2020 में कविता ने सक्षम रसोई को शुरू किया। अपने साथ ग्रहणियों को रोजगार के अवसर दिलाने के साथ अपने उपभोक्ताओं को उचित मुल्य पर स्वदिष्ट और पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराने का काम किया।

50000 रू से प्रारम्भ सक्षम रसोई आज 10 महिलाओं के साथ मासिक 1.20 लाख के टर्नओवर के साथ कार्य कर रही है।

अपने उद्यम के सुगम संचालन और सफलता के विषय में बताते हुऐ कविता कहती है 'हर महिला किसी न किसी रूप में रसोई से जुडी है, जो उन्हें खाना पकाने में माहिर करने के साथ ही कुशल प्रबंधीय कौशल में भी निपुर्ण करती है। सक्षम रसोई की सफलता का राजं हर एक कार्य सहयोगी है।'

7. पैड गर्ल

उद्यमी का नाम	प्रींसी वर्मा
उद्यम का नाम	न्यू फैन्सी सेनेटरी नैंपकिंन
उद्यम लागत	12,00,000 रू | 09,55,000 रू0 (पीएमईजीपी)
उद्यम का स्थापित वर्ष	2022
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	10.0 –12.0 लाख
उद्यमी का पता	देहरादून, उत्तराखंड
कर्मचारियों की संख्या	12
उद्यम का प्रकार	उत्पादन

प्रकृति ने महिलाओं को सृजनात्मक शक्ति देने के साथ साथ बहुत सी शरीरिक चुनौतियां भी दी है। जिन पर समाज की रूढिवादी सोच के कारण महिलायें अपनी तकलीफ को दुसरे को बताकर सुधारात्मक पहल की बजाय उसे स्वंय् में समेटे रह जाती है। ऐसी ही एक दिक्कत है मासिकधर्म है, जिसके प्रभाव को सैनेटरी नैपकिंन के प्रयोग से काफी हद तक कम किया जा सकता है पर यह दुर्भाग्यपूर्ण है आज भी कही महिलाऐं इसका उपयोग जानकारी और पहुॅच के अभाव में नही कर पाती है। कुछ इसे अपनी नियती मान बैठती है तो कुछ इसे अपनी जिम्मेदारी मानकर सभी क ो इसके उपयोग के लिये जागरूक करती है। यह कहनी भी एक ऐसी किशोरी की है, जो महज 20 साल की उम्र में इस मुहिम को आगे बडाने का काम कर रही है।

उत्तराखंड की राजधानी देहरादून के रामपुर कंला के रहने वाले राजेश वर्मा के पैदा हुई प्रींसी चार भाई–बहनों में सबसे बडी है।

पिता किसी निजी कम्पनी में कार्य करते थे। बचपन से ही जिज्ञासू प्रवृति की प्रींसी के मन में कही प्रश्न रहते, जिनका जबाब वो खोजकर ही रहती थी।

अपने बचपन से किशोरावस्था तक आते आते वैचारिक बदलाव के साथ साथ शरीरिक परिवर्तन भी आये,इनकी बदलाव ने उसकी सोच को इसके समाधान के विषय में सैनेटरी नैपकिंन बनाने की ठान ली।

संस्थान के सम्पक्र में आयी प्रींसी को अपने सपने को सकार करने का मौका मिला। प्रशिक्षण के साथ ही अपने सैनेटरी नैपकिंग उत्पादन के लिये प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम के तहत 9,55,000रू0 का आवेदन किया। ऋृण स्वीकृत होने पर अस्तित्व में आया न्यू फैन्सी सैनेंटरी नैपकिंन।

आज 20 वर्ष की आयु में 12वीं में पढने के साथ साथ प्रींसी मसिक 20000रू0 की आय अर्जित करने के साथ ही अन्यों के रोजगार का साधन भी है। इन सब से बडी बात यह है कि उन्होंने जो सपना देखा था, आज उसे वह संस्थान के सहयोग से पुरा कर पाई है। वो कहती है उनका लक्ष्य अपने उत्पाद को हर महिला तक पहॅुचना है।

8. काष्ठ संसार

उद्यमी का नाम	प्रीति अजय
उद्यम का नाम	हिनंगवुड फर्नीचर मेकिंग शॉप
उद्यम लागत	2,00,000
उद्यम का स्थापित वर्ष	2020–21
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	2.5 से 3.0 लाख
उद्यमी का पता	सर्वोदय नगर वाथोडा जिला नागपुर, महाराष्ट्र
कर्मचारियों की संख्या	03
उद्यम का प्रकार	निर्माण

स्वतन्त्रता के बाद से ही देश में लैंगिक समानता के लिये लगातार सुधारात्मक कदम उठाये जा रहे है। यही कारण है कि आज 19 प्रतिशत से अधिक माहिलायें विभिन्न कार्यक्षेत्र में अपनी मजबूत उपस्थित दर्ज करा रही है। आज माहिलायें सभी क्षेत्रों में चाहे परम्परागत हो या गैर परम्परागत सभी उद्योगों में अपना लौहा मनवा रही है। ऐसी ही एक उद्यमी है प्रीति अजय हिनगें जिन्होंने काष्टकला (फर्नीचर) उद्योग स्थापित कर अन्य माहिलाओं के लिये सम्भावनाओं के द्वार खोले है।

सर्वोदय नगर वाथोडा जिला नागपुर,

महाराष्ट्र की रहने वाली प्रीति का जन्म एक गरीब परिवार में हुआ। उन्होंने 10 वीं तक की शिक्षा अपने नजदीकी विद्याालय से ग्रहण की है। पारिवारिक कारणें से वह अपनी उच्च शिक्षा प्राप्त नही कर पायी। बचपन से ही प्रीति को लकडियों को जोड तोड कर कुछ नया बनाने का शौक था, अपने इसी शौक के कारण समय के साथ उनकी रूचि इस कार्य की ओर बडती गई और उन्होंने इसे ही अपने व्यवसायिक विकल्प के रूप में चुनने का निर्णय लिया। कौशल से परिपूर्ण प्रीति उद्यम स्थापना और उसके संचालन से सम्बधिंत विषयों के बारे में पूर्णतः अनभिज्ञ थी।

अपने मित्रों से प्राप्त जानकारी के आधार पर उसने निसबड नागपुर स्थित प्रशिक्षण केंद्र से 15 दिवसीय उद्यमिता विकास कार्य पर प्रशिक्षण प्राप्त किया तथा प्रशिक्षण के दौरान उन्हें अपने कला कौशल को निखारने तथा नवीन व्यवसाय को प्रारंभ करने हेतु प्रशिक्षकों द्वारा उचित मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है । प्रशिक्षण पूर्ण करने के बाद उन्होंने अपनी रूचि के अनुसार अपने परिवार की जमा पूंजी और रिश्तेदारों के सहयोग से 200000 लाख रूपये निवेश कर वुड फर्नीचर मेकिंग के व्यवसाय की शुरूआत की है।

अपने व्यवसाय के विषय में बताते हुए प्रीति कहती है कि वुड फर्नीचर मेकिंग कार्य की अच्छी मांग होने के कारण मेरे द्वारा बनाया हुआ सामान हाथो हाथ बिक जाता है तथा इस व्यवसाय से मै प्रतिमाह 20 से 25 हजार रू0 लाभ अर्जित कर रही हूं। मैंने दो कामगारों के साथ स्वयं इस कार्य से रोजगार प्राप्त कर रही हूं।

कहते है ठान लो तो जीत है, इन्ही शब्दों को प्रीति ने चित्रार्थ कर दिखाया है। आज स्वरोजगार स्थापित कर अन्यों के रोजगार का साधन बनकर प्रीति आत्मनिर्भर भारत के संकल्प को सिद्दि तक पहुॅचाने में अनपा महत्वपूर्ण योगदान दे रही है।

9. केनसार्थक

उद्यमी का नाम	रूबी भटनागर
उद्यम का नाम	केनसार्थक एंन्टरप्राईजेज,
उद्यम लागत	15,00,000 (10,00,000रू–पी.एम.ई.जी.पी)
उद्यम का स्थापित वर्ष	2019
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	रू07,00,000
उद्यमी का पता	हल्द्वानी, नैनीताल, उत्तराखंड
कर्मचारियों की संख्या	
उद्यम का प्रकार	

महिला न केवल सृजन की प्रतिरूप है बंलकि कुशल प्रबंधीय, रचनात्मकता और उद्यमी विचारधारा की प्रतिक भी है। इस बात को यर्थात में सकार रूप देने वाली रूबी भटनागर की कहनी भी कुछ ऐसे ही बंया करती है। देवभूमि उत्तराखंड के सरोवर नगरी नैनीताल के हल्द्वानी, की रहने वाली रूबी भट्नागर ने वर्श 2017 मे संस्थान (निसबड) द्वारा आयोजित जूट बैग पर आधारित उद्यमिता विकास कार्यक्रम मे प्रतिभाग किया। प्रशिक्षण से प्राप्त मार्गदर्शन ने उनके सपनों को दिशा देने का कार्य किया,जिसके फलस्वरूप संस्थान के सहयोग से उन्होंने मार्च 2019 में जूट बैग निर्माण के लिये पीएमईजीपी योजना में आवेदन कर 10 लाख का ऋण प्राप्त किया और अस्तित्व में आया 'केनसार्थक ऐन्टरप्राईजेज'। उद्यम की शुरूआती चरण मे उन्हें संस्थान से जूट बैग बनानें का पहला ऑर्डर मिला। ईकाई ने अभी कार्य करना प्रारम्भ किया ही था कि चौनोतियों का पहाड कोविट महामारी के रूप में खडा हो गया। विस्तार लेता हुआ उद्यम सिमटने

लगा। ऐसी प्रतिकुल परिस्थिति की चुनौती को स्वीकार करते हुऐ रूबी ने संस्थान से प्राप्त परामर्श पर मास्क निर्माण करना शुरू किया। उनके इस प्रयास में उन्हें संस्थान, जिला उद्योग केन्द्र और अन्य शासकीय विभागों से सहयोग प्राप्त हुआ जिसके फलस्वरूप उन्होंने लगभग 30,000 मास्क का निर्माण और विक्रय किया। इस दौरान उन्हें 700 पीपी किट बनाने का ऑर्डर भी प्राप्त हुआ।

आज वर्तमान में 'केनसार्थक ऐन्टरप्राईजेज' केन्द्र तथा राज्य सरकार के विभिन्न विभागों, राश्ट्रीय जूट बोर्ड,दिल्ली के साथ साथ सीएसआर के तहत निजी उपक्रमों के साथ कार्य कर जूट निर्मित बैग, फाईल फोल्डर, वस्त्र निर्माण में विशेशरूप से शॉल निर्माण तथा विभिन्न प्रकार के हस्तशिल्प उत्पादं निर्माण कार्य कर स्थाई रूप से 12 महिलाओं के साथ साथ 50 अन्य लोगों के अस्थाई रोजगार का साधन भी है।

10. फिजीकल से डिजीटल

उद्यमी का नाम	हरविन्द्र सिंह
उद्यम का नाम	सॉफट्रोनिक
उद्यम लागत	2,50,000
उद्यम का स्थापित वर्ष	2001
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	20.0 –25.0 लाख
उद्यमी का पता	डोईवाला, देहरादून (मो0 9997755591)
कर्मचारियों की संख्या	10
उद्यम का प्रकार	सेवा

हमारे द्वारा किये गये प्रयासों की पराकाश्ठता ही हमारी उपलब्धियों को प्रदर्शित करती हैं। कुछ ऐसा ही वृतांत है देहरादून के हरविन्द्र सिंह का जिन्होंने अपने प्रयासों, मजबूत इच्छाशक्ति, कार्य के प्रति समर्पण भाव से सफलता के सोपानों को प्राप्त किया।

अपनी कहनी अपनी जुबानी कहते हुऐ वो बताते है– मेरा नाम हरविन्द्र सिंह है। मैं उत्तराखण्ड के जिला देहरादून के छोटे से कस्बे डोईवाला का निवासी हूॅं। मैं एक छोटे किसान परिवार से आता हूॅं। बचपन से मैंने संघर्शो से भर जीवन जीया है। आर्थिक अस्थिरिता और असुरक्षा के कारण परिवार द्वारा हमेशा इस बात पर जोर दिया गया कि पढ़ाई लिखाई करके कोई भी सरकारी नौकरी मिल जाये तभी जीवन सफल होगा अन्यथा जीवन में असफल ही कहलाओगे परन्तु बचपन से ही मुझे किसी नौकरी में रहकर एक जैसा सीमित संसाधनों वाला जीवन व्यतीत करना

बिल्कुल भी पसन्द नहीं था। मैं स्वयं का कोई व्यापार या कार्य करना चाहता था जिसके द्वारा मैं स्वंम् का उद्यम तो स्थपित कर और भी लोगों को रोजगार दे पाने के साथ अपनी प्रतिभा द्वारा जीवन में बड़ा मुकाम हासिल कर पाऊँ।

मुझे हमेशा नई–नई चीजें सीखना बहुत अच्छा लगता था। विज्ञान वर्ग में 12वीं तक की शिक्षा ग्रहण करते करते मैंने कम्प्यूटर डिप्लोमा भी उत्तीण कर लिया था। कम्प्यूटर पर कार्य करने और नई नई चीजें करने का मुझे बहुत शौक था जिसके चलते 12वीं कक्षा उत्तीण करने के पश्चात ही मेरी एक अच्छी आई.टी. कम्पनी में नौकरी लग गई। नौकरी के साथ साथ ग्रेजुएशन एवं पोस्ट ग्रेजुएशन, डिप्लोमा इन इलैक्ट्रानिक्स भी पूर्ण करा और अपने कौशल को बढ़ाया परन्तु पांच वर्श तक नौकरी करने के साथ साथ हमेशा एक ही बात मन में रही कि यह मेरी मंजिल यह नहीं है मुझे कुछ अपना और बड़ा कार्य करना है जिसके चलते सन् 2001 में पारिवारिक दबाव होने के बावजूद, सबके खिलाफ जाकर मैंने नौकरी छोड़ कर अपना व्यवसाय प्रारम्भ करने का फैसला लिया। सन् 2001 में ही नौकरी के दौरान सेविंग करके जमा की गई कुछ धनराशी एवं 75000 रुपये का बैंक लोन लेकर मैंने डोईवाला में एक सॉफ्ट्रानिक्स कम्प्यूटर के नाम से एक फर्म बनाकर डाटा ऐन्ट्री एंव डी.टी.पी का कार्य प्रारम्भ किया। पहले एक वर्श बहुत सारी दिक्कतों का सामना करना पड़ा परन्तु धीरे–धीरे मेरा काम चल निकला। साईबर कैफे के रुप में इण्टरनेट सर्विस उपलब्ध कराना व कम्प्यूटर द्वारा कलर प्रिंटिंग निकालने वाली पूरे डोईवाला ब्लाक क्षेत्र में मेरी सबसे पहला संस्थान था जिसने इस प्रकार की सेवाऐं प्रारम्भ करी थी उससे पहले पूरे क्षेत्र के लोगों को हर छोटे कार्य के लिए देहरादून शहर ही आना पड़ता था लिहाजा मेरी संस्था का कार्य पूरे क्षेत्र में जाना जाने लगा।

समय के साथ तकनीके विकसित होती गई पर काम का सिमित होता गया। मुझे महसुस होने लगा कि अब काम में विस्तार और बदलाव की जरूरत है मगर उसे बारे में मैं कोई निर्णय नही ले पा रहा था। लगभग सन् 2010 में निसबड संस्थान के सम्पक्र में आया और प्रशिक्षण प्राप्त किया जिससे मुझे सरकार द्वारा चलाई जा रही उद्यमिता कौशल विकास योजनाओं के बारे में पता चला। निसबड से प्रशिक्षण प्राप्त कर मैंने अब अपने क्षेत्रवासियों को भी कुशल बनाने का प्रण लिया। पिछले 10 वर्शों में हजारों महिलाओं,युवाओं को प्रशिक्षित कर उनको स्वरोजगार और रोजगार से जोडने का कार्य किया गया।

2020 में कोरोना महामारी ने जीवन एकदम बदल कर रख दिया। कही छोटे बडें उद्यमों पर भी इसका प्रतिकूल प्रभाव पडा। ऐसी प्रतिकूल परिस्थिति में हमने प्रशिक्षित और जरूरतमंद महिलाओं को साथ लेकर फेस मास्क, ईको फैंडली बैग, जूट बैग एवं जूट के अन्य उत्पाद बनाने कार्य प्रारम्भ किया, जिससे महिलाओं को लॉक डाउन जैसी गम्भीर परिस्थिति में भी लगातार रोजगार प्राप्त होता रहे और कोरोना से बचाव के लिये मास्क का उत्पादन भी निरन्तर रूप से जारी रहे। आज मुझे बताते हुए बेहद प्रसन्नता हो रही है कि मेरे द्वारा जो एक छोटा सा प्रयास संस्थान के मार्गदर्शन से किया गया था, वह आज 20 से भी अधिक लोगो के रोजगार का साधन है।

मैं निसबड संस्थान का धन्यवाद करना चाहता हूँ जिनके मार्ग दर्शन के फलस्वरुप मैं जीवन में सफलता प्राप्त कर सका हूँ एवं और बुलंदियों को छुने के सपने सजा पा रहा हूँ।

11. लिल फार्म– एक जैविक दुनिया

उद्यमी का नाम	शोभित पुण्डीर
उद्यम का नाम	लिल फार्म
उद्यम लागत	6,00,000रू0
उद्यम का स्थापित वर्ष	2019
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	9,60,000 रू0
उद्यमी का पता	
कर्मचारियों की संख्या	
उद्यम का प्रकार	कृषि आधारित उद्योग

आधुनिकता के इस दौर में जहॉ आज का युवा तकनीकों पर निर्भर होता जा रहा है अपने जीवन से जुड़ी अधिकतर चीजो के लिये वह कृत्रिम संसाधनों पर निर्भर होकर प्रकृति से उतने ही दूर हो रहा है। आज की हमारी जीवन शैली को देखते हुये, हमारे स्वास्थ्य के लिये अच्छे भोजन और अच्छे वातावरण की आवश्यकता है। इस विशय को लेकर आज बहुत सारे उद्यम् विकसित हुए है। जिन्होनें बहुत सारे युवाओं को आकर्शित किया है।

उत्तराखण्ड की राजधानी देहरादून से लगे सेलाकुई क्षेत्र के रहने वाले शोभित पुण्डीर की कहानी भी उन्ही युवाओ में से एक है जिन्होनें प्राकृतिक स्रोतों पर आधारित उद्योग को अपना कर न केवल अपनी आजीविका को अर्जित कर ओरो के

लिए रोजगार के साधन विकसित किये हैं।

किसान परिवार में जन्में शोभित ने अपनी शिक्षा देहरादून से पूर्ण करने के पश्चात एक निजी कम्पनी में कार्य करना प्रारम्भ किया। अपने कार्य के दौरान वह अधिकतर अनुभव करते कि यदि वह इतना प्रयास अपने स्वयं के उद्यम के लिए करते तो अपनी आय के साथ – साथ रोजगार के साधनो को ओर अधिक विकसित कर पाते। अपने स्वयं का कार्य करने का निर्णय लेते हुये उन्होनें नौकरी छोड़ दी । तीन भाइयों में सबसे छोटे शोभित ने संस्थान से प्रशिक्षण प्राप्त कर उद्यमिता के विशय में अपनी जानकारी को ओर भी पुख्ता किया।

संस्थान से मिले मार्गदर्शन के आधार पर उन्होनें अपनी पैतृक भूमि पर उन्नत किस्म से खाद्य ओर कृशि उद्योग को स्थापित करने का निर्णय लिया । शुरूवाती 500000रू0 के निवेश के साथ उन्होने पारिवारिक सहयोग से वर्श 2019 में लिल फार्म की स्थापना कर कार्य करना प्रारम्भ किया जिसके तहत उन्होनें जैविक खेती, जैविक खाद उत्पादन, शहद उत्पादन, खाद्य प्ररसंस्करण के साथ – साथ उक्त विशय पर उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे प्रशिक्षार्थियों को शिक्षण देना का कार्य भी कर रहें है।

पूर्व में नौकरी करने वाले शोभित आज 12 लोगो को रोजगार देकर न केवल अपना स्वरोजगार कर रहें है बल्कि उन युवाओं के लिये भी प्रेरणा है जो अपने कार्य को छोड कर, घर को छोड कर नौकरी की तालाश में अपने जीवन को खोज रहें है।

12. अकुंरित होती कविता

उद्यमी का नाम	कविता पाल
उद्यम का नाम	जैविक खाद उत्पादन
उद्यम लागत	450000रू0
उद्यम का स्थापित वर्ष	2021– 22
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	250000 रू0
उद्यमी का पता	
कर्मचारियों की संख्या	
उद्यम का प्रकार	उत्पादन

वर्मी कम्पोस्ट यानी केचुओ द्वारा तैयार की जाने वाली जैविक खाद हम बचपन से सुनते आये है कि केचुए किसानों के मित्र है, वा इसलिए क्योंकि केचुएं मिटी को उर्वरक बनाते है पर जैसे जैसे कृशि उत्पादों की मांग बड़ती गई वैसी खेती में उपज को रसायनों के हवाले किया जाता रहा और केचुओं पर निर्भरता भी कम हुई, और मित्रता भी रसायनों के प्रभाव से बढ़ते स्वास्थ्य कारणों ने हमें फिर से जैविक खान पान की औरी प्रेरित किया अब केचुओं से खाद खेतों से बाहर भी बनवाई जा रही है। जिसे वर्मी कम्पोस्ट, वर्मी वॉस के नाम से जाना जा रहा है। सबसे महत्वपूर्ण बात है कि वर्मी कम्पोस्ट अधिक व जैविक पैदावार, स्वास्थ्य सुरक्षा के साथ स्वरोजगार से जुडा कार्य भी है।

देहरादून के डोईवाला ब्लाक में रहने वाली उद्यमी कविता

पाल ने वर्मी कम्पोस्ट बनाने की पहल की उनको भी अनुमान नहीं था कि यह पहल तीन महिनें में ही विस्तार रूप लेती दिखेगी। वर्मी कम्पोस्ट को स्वरोजगार बनाने से पहले उन्होने संस्थान द्वारा सलाह लेकर संस्थान के मार्गदर्शन में अपना व्यवसाय की रूप रेखा तैयार कर उसे साकार रूप देने की योजना बनाई। शुरूवात में उन्होने किराये के भूमि लेकर अपना कार्य प्रारम्भ किया , वर्मी कम्पोस्ट के लिए गोबर की डिमांड हमेशा हमेशा रहती है, जिसकी पूर्ति आसपास के गांव या डेयरियों से की जाती थी। उन्होने 30 बेडस में लगभग 600 किलो केचुएं डालकर खाद तैयार की जाती है। आज कविता केचुओं के विक्रय के साथ 200 टन खाद का विक्रय भी कर रही है। जिससे वह वार्शिक रूप से 250000 रू0 का करोबार करने में सफल हो पाई है। इसके अतिरिक्त वह उत्तराखण्ड के अन्य जिलों में भी महिलाओं को प्रेरित कर जैविक खेती को बढ़ावा दे रही है।

13. ग्रेट ट्रैक हिमालय

उद्यमी का नाम	विकास सिंह पंवार, (मो0 7820070340)
उद्यम का नाम	ट्रेकिंग ऐजेन्सी
उद्यम लागत	800000रू0 (6,50000रू0—एम0एस0वाई0)
उद्यम का स्थापित वर्ष	
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	360000रू0
उद्यमी का पता	धराली, उत्तरकाशी
कर्मचारियों की संख्या	05
उद्यम का प्रकार	सेवा

उत्तराखंड नाम जहन में आते ही ऊँचे ऊँचे पहाड, नदियां और बर्फ की तस्वीर ऑखों के सामने बनने लगती है। हर साल लाखों पर्यटकों को अपनी और आकर्षित करने वाली ये खुबसूरत वादियॉ रोजगार की अपार सम्भावना भी खुद में समेटे है। किसी को पहाड का जीवन, पहाड जैसा लगता है तो किसी को यह रोंमाचित कर अवसरों से भरी नजर आती है।

उत्तरखंड के सीमान्त जिले उत्तरकाशी में गंगा क्षेत्र के निकट धराली के रहने वाले सेब कस्तकार/व्यापारी बच्ची सिंह पंवार के तीन बच्चों में एक विकास सिंह पंवार को बचपन से ही प्रकृति के प्रति विशेष आक्रषण था। ऊँचे ऊँचे पहाड उन्हें सदैव ही रोमंचित करते थे। यही वजह थी कि उन्होंने नेहरू पर्वतारोहण संस्थान से सभी सभी कोर्स करने के बाद उक्त संस्थान में प्रशिक्षक के रूप में कार्य किया। स्वतंत्र विचारो वाले विकास सदैव से ही अपना कार्य करना चाहते थे। उनके इस फैसले का स्वागत करते हुऐ उनके

पिताजी ने उनको परामर्श के लिये उद्यमिता विकास से जुडें संस्थानों/विभागों में जाने को कहा।

विकास ने संस्थान से प्रशिक्षण प्राप्त किया और मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना के तहत 650000रू0 का ऋण प्राप्त किया और अस्तित्व में आया ग्रेट ट्रैक हिमालय ट्रैकिंग ऐजेन्सी।

विजय अपने सपने को पुरा करने के साथ 05 अन्यों के रोजगार का साधन भी है। मासिक 30000 से 35000रू0 की आय अर्जित करने के साथ साथ वह अपने पिता के सेब कारोबार में भी सहयोग करते है।

14. सेना से स्वाद तक

उद्यमी का नाम	श्री विशाल कनौजिया (मो0 8106767081)
उद्यम का नाम	फूड कॉस्टा (**Food Costa**)
उद्यम लागत	550000
उद्यम का स्थापित वर्ष	2022
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	10.0 –12.0 लाख
उद्यमी का पता	मालदेवता, रायपुर, देहरादून
कर्मचारियों की संख्या	02
उद्यम का प्रकार	सेवा क्षेत्र

अगर मन में कुछ करने का जज्बा हो तो हर कार्य सफल हो सकता है बस जरूरत होती है अपने हुनर और कौशल को पहचानने की। जीवन में आगे बढ़ने का अवसर सबको मिलता है किन्तु कुछ ही लोग ऐसे होते हैं जो उस अवसर का मान रख सफलता प्राप्त कर पाते हैं और ऐसे ही लोग अपने परिश्रम से अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में सफल होते हैं। ऐसी ही एक कहानी है विशाल कनौजिया की जिनकी मेहनत ने उनके आगे विवश होकर उनको सफलता के पायदान में पहुँचा दिया।

विशाल का जन्म पर्वतीय राज्य उत्तराखण्ड की राजधानी देहरादून में हुआ। जिनकी शिक्षा दीक्षा देहरादून में ही हुई। तीन भाई बहनों में सबसे छोटे विशाल बचपन से ही पढ़ाई लिखाई में काफी होशियार थे। पिता सरकारी नौकरी में थे जिस कारण उनका बचपन सामान्य परिवेश में बीता। बचपन से ही उनको अपने जीवन में कुछ ऐसा कार्य करना था जिससे उनका एवं

उनके माँ बाप का नाम रोशन हो जिस कारण विशाल पढ़ाई पर ज्यादा जोर देते थे।

पढ़ाई के दौरान ही विशाल का चयन वर्श 2002 को भारतीय नौसैना में हो गया। अचानक ऐसा होना उनके सपनों को पँख लगने जैसा था। नौकरी ज्वॅायन करने के पश्चात विशाल ने भारत के कई शहरों में अपनी सेवाऐं दी और अपने देश की सेवा की जिस कारण उनमें देशभक्ति और अनुशासन कूट कूट कर भरा था और यही उनके आगामी जीवन को सुगम बनाने में भी सिद्ध हुआ।

विशाल का रिटायरमेन्ट 31.01.2022 को होना था, उससे कुछ समय पहले विशाल को उनके डीजीआर के माध्यम से ''उद्यमिता विकास कार्यक्रम के प्रशिक्षण हेतु संस्थान (निसबड),देहरादून में भेजा गया जिसके तहत उन्होने उद्यम स्थापना, संचारण एवं अवसर को पहचानना सीखा। प्रशिक्षण कार्यक्रम में उनको उद्यम स्थापना हेतु विभिन्न सरकारी विभागों द्वारा संचालित योजनाओं जैसे प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम (पी0एम0ई0जी0पी) एवं मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना के बारे में भी बताया गया और उनको वित्तीय प्रबन्धन के बारे में पता चला कि किस तरह हम विभिन्न सरकारी योजनाओं के अन्तर्गत ऋण हेतु आवेदन कर सकते हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रोडक्ट के विपणन की जानकारी भी प्रशिक्षार्थियों को प्रदान की गयी कि किस तरह अपने उत्पादों को बाजार से लिंकेज कर सकते हैं जिससे किस तरह लोगों तक आपके उत्पाद आसानी से पहुँच सकते हैं।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के आखिरी पड़ाव पर पहुँचते पहुँते विशाल का मन भी रिटायरमेन्ट के बाद घर में न बैठकर अपना व्यवसाय करने का बन चुका था। प्रशिक्षण के दौरान ही विशाल को एक नई दिशा मिली और उन्होने अपने विचारों को निर्णय में बदल दिया और जैसे की जहाँ चाह होती है वहीं राह भी बन जाती है। इस ही सोच को सार्थक करते हुऐ विशाल ने रिटायरमेन्ट के बाद मालदेवता, रायपुर में अपना उद्यम (रेस्टॉरेन्ट) स्थापित करा और इस तरह से अस्तित्व में आया ''फूड कॉस्टा''। उनके इस रेस्टॉरेन्ट द्वारा उनकी आमदनी लगभग रू0 30000 से 35000 प्रति महिना है, जिस के तहत आज उनके इस उद्यम द्वारा दो अन्य लोगों को भी रोजगार मिला हुआ है।

विशाल आज धन्यवाद देते है निसबड संस्थान का जिनके सहयोग एवं मार्गदर्शन द्वारा उनके मन में भी अपना व्यवसाय करने का विचार आया और वह आज गौरवान्वित हैं कि उनके इस व्यवसाय से कुछ अन्य लोगों को भी रोजगार मिला हुआ है।

15. उद्यम से उन्नति तक

उद्यमी का नाम	प्रमोद कुमार शर्मा
उद्यम का नाम	अमूल स्टोर कृपाल
उद्यम लागत	3.60 लाख रू0
उद्यम का स्थापित वर्ष	2021
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	04 –4.5 लाख रू0
उद्यमी का पता	पूर्वी दिल्ली, नई दिल्ली
कर्मचारियों की संख्या	02
उद्यम का प्रकार	सर्विस

हर भारतीय के गौरव की सूचक भारतीय सेना हम सभी की आन,बान और शान है। यह हर भारतीय के भीतर सेना का हिस्सा बनकर अपने सर्वच्च समर्पण देने की अतुरता या राष्ट्र के प्रति समर्पित करने की भावना कूट कूट कर भरी है। यह एक ऐसे ही एक सेना नायक की कहनी है, जिन्होंने अपने सेवाकाल में अपना राष्ट्रघर्म निभने के साथ साथ सेवानिर्वित होने के बाद भी उद्यम स्थापित कर राष्ट्र प्रगति में अपना योगदान दे रहे है।

मूल रूप से एटा, उ0प्र0 के रहने वाले प्रमोद कुमार का जन्म एटा उ0प्र0 में

हुआ। 06 जनों के परिवार में माता पिता के अलावा तीन भाई और एक बहन रहते थे। उनके पिता एक निजी कम्पनी में कार्यरत थे। सभी भाइयों और बहन की शिक्षा एटा में हुई। अपनी 12वीं की शिक्षा प्राप्त कर प्रमोद ने भारतीय सेना में जाने के अपने सपने को पुरा करने के लिये खुद तैयार किया। वर्ष 1987 में बरेली में हुई खुली भर्ती में उनका चयन भारतीय सेना में हुआ।

अपने सेवा काल के दौरान उनका विवाह हो गया और समय के साथ वह दो बच्चों के पिता भी बने। अपने कार्य के साथ साथ एक पिता के रूप में भी उन्होंने ने अपने दयित्व को अच्छे से निर्वाह किया। अपने सेवाकाल में देश के विभिन्न क्षेत्रों में जाने का अवसर ने उनके व्यवाहरिक कौशल को बडाने का काम किया है।

सेवानिर्वित काल में उन्हें महानिदेशक पुर्नावास के माध्यम से निसबड में प्रशिक्षण करने का अवसर मिला। प्रशिक्षण के दौरान उन्हें उद्यम स्थापना,संचालन,प्रबंधन और विकास के विषय में अलग अलग विशेषज्ञों द्वारा मिले ज्ञान को आर्जित किया।

वर्ष 2017 में सेवानिर्वित होने के बाद उन्होंने प्रशिक्षण से प्राप्त जानकारी के आधार पर एक चिप्स कम्पनी की डिस्टीब्यूटरशिप लेकर काम करना प्रारम्भ किया। किन्ही करणों से उन्हें इस काम को बन्द करना पडा। वर्ष 2019 में उन्होंने अमूल का आउटलेट लेकर कार्य पुनः कार्य करना प्रारम्भ किया। अपने व्यवहार और मेहनत से उन्होंने कम ही समय में अपने कार्य में प्रगति पायी।

आज प्रमोद कुमार शर्मा मासिक 35000 रू0 की आय सर्जित करने के साथ साथ एक अन्य व्यक्ति को रोजगार प्रदान कर आत्मनिर्भर रांष्ट्र के निर्माण में अपना योगदान दे रहे है।

16. रोजगार से स्वरोजगार की ओर

उद्यमी का नाम	श्री विशाल कुमार
उद्यम का नाम	विशाल मिल्क पार्लर,
उद्यम लागत	रू0 3,50,000.00
उद्यम का स्थापित वर्ष	2021
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	12.0 – 15.0 लाख
एफ0एस0एस0ए0आई पंजीकरण संख्या	30220416110374051
कर्मचारियों की संख्या	05
उद्यम का प्रकार	डेयरी फार्मिंग एवं दुग्ध उत्पाद

कहते हैं कि अगर इच्छा शक्ति दृढ़ हो तो हर राह आसान हो जाती है। ऐसी ही कहानी बयाँ करती है विशाल कुमार की जो कि बचपन से ही बहुत मेहनती ,ऊर्जावान और जमीन से जुड़े हुए व्यक्ति रहे हैं। मध्यम परिवार से जुड़ाव रखने वाले विशाल का बचपन बहुत ही संघर्शों भरा रहा है। पढ़ाई लिखाई करने के बाद जैसा हर व्यक्ति का सपना रहता है कि वह एक नौकरी करे, वैसा ही विशाल ने भी सोचा परन्तु नौकरी में सीमित आय होती है ऐसा सोचकर उनके मन में कई तरह के विचार आने लगे। काफी मानसिक संघर्शों के बाद विशाल ने अपना व्यवसाय शुरू करने का निर्णय लिया परन्तु उसे साकार करने के लिये सोच ही काफी नहीं थी उसके लिए प्रयास भी जरूरी होता है। वैसे बचपन से ही विशाल अपना कुछ व्यवसाय करना चाहते थे परन्तु क्या व्यवसाय करना है इस की उनको जानकारी नहीं थी।

कुछ समय पश्चात एक दिन विशाल की मुलाकात उसके दोस्त से उसके घर पर हुई जिसने विशाल को डेयरी फार्मिंग के बारे में बताया और उससे होने वाले लाभ के बारे में बताया। पहले तो विशाल ने इस ओर ध्यान नहीं दिया

परन्तु धीरे धीरे विशाल को बात समझ में आई और डेयरी फार्मिंग को उन्होने अपने व्यवसाय के रूप में चुनने की सोची। विशाल बचपन से ही स्वास्थ्य पर विशेश ध्यान देता था और उसे यह बात भी पता थी कि आजकल किस तरह मिलावटी दूध बाजार में उपलब्ध है जो कि लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डाल रहा है। वह दूध की खराब गुणवत्ता और उसके द्वारा उत्पादित वस्तुओं के उपयोग से होने वाले प्रभाव से चिन्तित भी थे तथा उन्हे यह भी पता था कि कैसी खराब गुणवत्ता वाले दूध को पैकेट और प्रोसेस दूध के नाम से बाजारों में उपलब्ध कराया जा रहा है इसलिए विशाल को डेयरी के व्यवसाय को एक अवसर के रूप में देखा और समय रहते इस व्यवसाय से सम्बन्धित बारिकियाँ सीखी। अब जब उन्हे अपने लिए एक मार्ग दिखा तब तक उन्हे यह अहसास भी हुआ कि उन्हे व्यवसाय को शुरू कैसे करना है और किस तरह व्यवसाय को चलाना है।

कहते हैं कि अगर इन्सान चाहे तो कुछ भी कर सकता है और इस ही दौरान विशाल को अपने ही क्षेत्र में निसबड संस्थान द्वारा चलाऐ जा रहे पी0एम0युवा कार्यक्रम (मेन्टरिंग कैम्प) के बारे में पता चला जिसमें ऐसे युवाओं को चुना जा रहा था जो कोई अपना व्यवसाय करना चाहते हों बस फिर क्या था विशाल को अंधेरे में एक किरण दिखाई दी और उन्होने तुरन्त जाकर अपना पंजीकरण उस कार्यक्रम में कराया। तीन दिनों के मेन्टरिंग कैम्प में उन्होने व्यवसाय से सम्बन्धित कई सारी बारिकियाँ सीखी जिससे उनके कौशल में निखार आया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में उन्हे संस्थान के प्रशिक्षकों द्वारा विभिन्न जानकारियाँ प्रदान की गयी जिसमें व्यवसाय को कैसे शुरू किया जाऐ, वित्तीय सहायता कहाँ कहाँ से प्राप्त की जा सकती है , उसकी मार्केटिंग एवं ऋण सम्बन्धी जानकारियाँ उनको प्रदान की गयी जिससे विशाल का मनोबल काफी हद तक बढ़ चुका था जिससे उन्हे अपना व्यवसाय शुरू करने में काफी मदद मिली।

कुछ समय पश्चात विशाल ने कुछ सहयोगियों के सहयोग से 3,50,000रू0 पूंजी लगाकर कुछ गाय खरीदी और दूध का व्यवसाय शुरू किया और धीरे धीरे अस्तित्व में आया ''विशाल मिल्क पार्लर'' जो कि अपने क्षेत्र में काफी अच्छा कार्य कर रहा है और इसके उत्पाद लोगों द्वारा भी पसन्द किये जा रहे हैं।

इसके साथ ही विशाल बिहार के छपरा जिले में रेलवे के टी स्टॉलों में अपने अतिरिक्त दूध और इसके उत्पादों की आपूर्ति करने की योजना भी बना रहे हैं। जो कि रेलवे स्टेशनों के टी स्टॉलों पर पर रखे जा सकें जिससे उनकी मार्केटिंग भी हो सके।

विशाल निसबड संस्थान का धन्यवाद करते हैं और सभी प्रशिक्षकों का भी धन्यवाद करते हैं कि संस्थान ने उनके सपनों को एक नई उड़ान दी है जिसके द्वारा आज वह इस मुकाम पर पहुँच चुके हैं। साथ ही साथ संस्थान द्वारा उनकी इकाई का एफ0एस0एस0ए0आई पंजीकरण भी करा दिया गया है।

17. परिधान से समाधान तक

उद्यमी का नाम	दीपिका राणा
उद्यमी का पता	किशनपुर, देहरादून, उत्तराखण्ड
उद्यम का नाम	दीपिका बुटिक
उद्यम लागत	50,000रू0
अनुमानित वार्षिक आय	1,80,000रू0

जेल का नाम जहन में आते ही हमारे सामने अपराधिक खुंखार चेहरे आने लगते हैं। हमारे मन मस्तिश्क में नकारात्मकाता के भाव उनके प्रति बनने लगते है। कारागार में रहने वाला हर कैदी किसी ना किसी अपराधिक कृत्य के चलते सजायापता होता है किन्तु वह स्थाई रूप से अपराधिक प्रवृति का हो यह जरूरी नहीं है। जीवन सभी को दूसरा मौका देता है कि वह अपने आप को आगे बढाने में अपना सहयोग कर सके। यह कहानी भी एक ऐसी महिला दीपिका राणा की है जिसके जीवन में कई अप्रत्याशित घटनायों ने उसका जीवन बिखेर कर रख दिया था। बावजूद उसके आज वह अपने कौशल, कुशल मार्गदर्शन और सकारात्मक सोच के साथ अपने जीवन को सामाजिक ओर अर्थिक विकास की ओर ले जा रही है।

फौजी परिवार में जन्मीं दीपिका राणा के पिता सेना से सूबेदार पद से सेवानिवृत हुए है। परिवार में सदैव ही अनुशासन के

साथ–साथ आगे बढने के लिए माता पिता का सहयोग हमेशा से मिलता रहा। यही कारण था कि स्नातक की शिक्षा पूर्ण करने के बाद अपनी बचपन की रूचि को ओर भी निखारने के लिए दीपिका ने प्थ्ज देहरादून से फैशन डिजाईनिंग का कोर्स किया।

वर्श 2007 में दीपिका का विवाह देहरादून के एक उद्यमी परिवार में हुआ विवाह के उपरान्त भी दीपिका ने अपने कौशल को बरकरार रखते हुए कई फैशन शो तथा प्रर्दशिनियें में बतौर फैशन डिजाईनर खूद को प्रदर्शित किया। परिवार का सहयोग अपनी इच्छा के अनुरूप कार्यो से उसकी जिन्दगी में खुस्हाली थी। किन्तु समय सदैव एक सा नही रहता। वर्श 2017 में दीपिका के जीवन मे भी समय ने ऐसी करवट बदली की एक पल में उसका सब कुछ बिखर कर रह गया। पति की असमय, अप्रकृतिक मृत्यु से वह टूट गयी। इसी अपराधिक वाद के चलते दीपिका को अपने जीवन का कुछ समय जिला कारागार देहरादून में बिताना पडा।

इसी को अपनी नियति मानकर वह एक कैदी के रूप में अपने जीवन को निराशा के साथ बढा रही थी। कारागार की भी अपनी एक दुनिया होती है। यह संघर्श भी है तो जीवन जीने की संभावना भी है। शिक्षा के अवसर भी हैं ओर हुनरमंद होने के अवसर भी हैं। कुछ ऐसे भी अवसर दीपिका की जिन्दगी में भी आये, जब संस्थान (निसबड) द्वारा जिला कारागार के सहयोग से कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन जिला कारागार में किया गया । यह दीपिका को बहुत कुछ नया सिखने के साथ–साथ अतित की कुंठित स्मृतियों को भुला कर सकारात्मक दृश्टिकोण को अपनाकर जीवन मे आगे बढने का हौसला भी मिला।

वर्श 2019 में दीपिका करावास से रिहा हुई अब उसके सामने सामाजिक जीवन के साथ–साथ अर्थिक सबलता की भी चुनौती थी। इस ऐसे कठिन चुनौतीपूर्ण समय में संस्थान में दीपिका को सहयोग किया कि वह अपने हुनर से अपनी समाजिक प्रतिश्ठा पाने के साथ–साथ अपनी अजिविका को भी अर्जित कर पाये। आज दीपिका 15000 हजार रु0 मासिक आय के साथ आगे बढ रही है। जीवन की दशा ओर दिशा हमारे व्यक्तिगत क्षमताओं पर निर्भर नही है हमारा दृश्टिकोण हमे मिल रहा मार्गदर्शन तय करता है कि हम जीवन मे किस दिशा की ओर आगे बढ पायेंगें।

18. एल्पी

उद्यमी का नाम	अलका जोशी
उद्यम का नाम	एल्पी इन्टरप्राईजेज
उद्यम लागत	7,50,000/– लाख
उद्यम का स्थापित वर्ष	2020
अनुमानित वार्षिक आय	3 लाख रू
उद्यमी का पता	निकट छरवा, विकास नगर, देहरादून
योजना का नाम	(पी.एम.ई.जी.पी)
कर्मचारियों की संख्या	
उद्यम का प्रकार	पेपर ग्लास बाउल निर्माण ईकाई

भारत आज विश्व पटल पर एक युवा राश्ट्र के रूप में पहचाना जाता है। देश की 65% से अधिक की आबादी युवा है जिस कारण उम्मीद के रूप में युवाओ से आस लगाये देश सतत् रूप से विकास पथ पर अग्रसर है। ऐसे अपने सभी युवाओं के लिए, जो भविश्य में स्वमं को उद्यमी रूप में स्थापित कर अपने आने वाले कल को समृद्व बनाने की दिशा में कार्य कर रहे हैं। उन सभी के अलका जोशी सफलता के एक जिवान्त उदाहरण के रूप में खुद को स्थापित किया है।

उत्तराखण्ड राज्य की राजधानी

देहरादून के निकट छरवा, विकास नगर की रहने वाली अलका जोशी किशोर अवस्था से ही समाजिक सरोकार से जुडे कामों से जुडी रही। स्वतंत्र भाव से कार्य करने जैसे उद्यमी गुण उनके व्यवहार में प्रारम्भ से ही थे। सभी को साथ लेकर आगे बढना अलका ने अपने परिवार से सीखा था, जिस कारण महिला को साथ लेकर उनकी अजिविका संवंर्धन के लिए उन्होने समूह से लेकर कलस्टर कार्यों में अपनी अहम भूमिका निभाई हैं। वह अलका कलास्टर फेडेरेशन की अध्यक्ष भी हैं।

बचपन से ही रचनात्मक कार्यो के प्रति अलका का रूझान रहा, जिस कारण वह सदैव चीजों को लेकर उनमें जोड–तोड कर कुछ नया बनाने का प्रयास करती रहती हैं। अपने इस शौक को अलका ने अपने स्वरोजगार के रूप में चुनने का फैसला किया। इसी तलाश से वह निसबड के संम्पक्र में आई और प्राप्त जानकारी और सहयोग के आधार पर उन्होने कागज तथा शीशे के उत्पादों की निर्माण ईकाई प्रारम्भ किया। पीएमईजीपी योजना के अर्न्तगत उद्यम स्थापित करनें के लिए उन्होंनें निसबड के सहयोग से आवेदन किया। ऋण स्वीकृत होने के पश्चात उन्होने छरवा, विकासनगर में अपनी निर्माण ईकई प्रारम्भ की है। कोरोना के प्रतिकुल समय में सब की तरह अलका को भी प्रभावित किया। किन्तु हर रात के बाद रोशन सवेरा आता है। इस विचार और विश्वास के साथ वह अडिग अपने कार्य पर बढ रही है। आज अपने उद्यम से अलका रूपयें25000 ⁄ –प्रति माह बचत कर औरों के रोजगार का साघन भी है।

वह कहती है कि परिस्थितिपश वह अपनी उच्च शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाई है किन्तु वह समाज को शिक्षित, कुशल और मुल्यपरक बनाना चाहती है। सभी को रोजगार मिले इसके लिए स्वरोजगार ही एकमात्र विकल्प है।

19. गुंथते धागे –बुनते सपने

उद्यमी का नाम	फामिदा बेगम
उद्यम का नाम	फामिदा नीटिंग
उद्यम लागत	1100000 / —
उद्यम का स्थापित वर्ष	2020 —21
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	20.0 — 25.0लाख
उद्यमी का पता	कुमाऊँ कॉलोनी, उजाला अस्पताल के सामने, मानपुर रोड, काशीपुर
कर्मचारियों की संख्या	06
उद्यम का प्रकार	सिलाई,बुनाई

सन् 1986 में उत्तराखण्ड के तराई क्षेत्र काशीपुर में इन्तजार हुसैन अंसारी जी के घर में एक पुत्री का जन्म हुआ जिसका नाम फामिदा बेगम रखा। पिता एक प्राइवेट नौकरी करते थे। फामिदा के सात भाई बहन थे। पिता की आय इतनी नहीं थी कि वे अपनी इतनी कम तन्ख्वा में इतने बड़े परिवार का भरण पोषण कर पाते। जिम्मेदारियों के चलते वे शारिरिक रूप से कमजोर होने लगे थे। फामिदा का बचपन बड़े अभावों के बीच बीता। बचपन से ही फामिदा को पढ़ने लिखने का शौक था लेकिन अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को देखते हुऐ फामिदा ने अपने सपने को विराम दे दिया था। फामिदा बचपन से ही अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को संभालना चाहती थी परन्तु कोई रास्ता नहीं बन पा रहा था। परन्तु फामिदा ने हिम्मत नहीं हारी और अपने हौसले को बुलंद रखा। धीरे–धीरे फामिदा के पिता को उसकी विवाह की चिन्ता सताने लगी और उसके पश्चात उसका विवाह हो गया। विवाह के पश्चात भी फातिमा के मन से

पढ़ाई का मोह भंग नहीं हुआ और उसने शिक्षिका बनने के लिए बी0ए0 के साथ साथ बी0एड0 भी किया।

अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद फामिदा ने एक प्राइवेट स्कूल में नौकरी की शुरूआत करी। कुछ समय तक तो उनका मन स्कूल में लगा परन्तु स्कूल से मानदेय उनको मिलता था वह बस नाममात्र ही था। जिससे उनकी जिम्मेदारियाँ पूरी नहीं हो पा रही थी। उनका मन स्कूल की नौकरी से हटने लगा और उन्होने नौकरी न करने और कुछ अपना स्वरोजगार करने का फैसला किया।

ससुराल पक्ष पहले से ही हैण्डलूम का काम करते थे जिन्हे देखकर फामिदा ने भी अपने ससुरालियों का हाथ बँटाने की सोची। हाथ बटाँने के साथ साथ उनकी रूचि भी इस कार्य की ओर बढ़ने लगी जिसे देखकर उनके ससुराल वाले भी उनका सहयोग करने लगे और उन्होने अपने इस कार्य को बढ़ाने के लिए उत्तराखण्ड हैण्डलूम डेवलपमेन्ट कॉपर्रेशन (UHLDC) से प्रशिक्षण भी प्राप्त किया । प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात फामिदा के काम और हुनर में निखार आया।

इसी के चलते फामिदा को हैण्डलूम एक्सपो, हैदराबाद में प्रतिभाग करने का मौका मिला जिससे उन्हे कई नई और रोचक जानकारियाँ सीखने को मिली। एक्सपो में उन्होने सीख कि ऐसे कई उत्पाद है जो हम बना सकते हैं जैसे किचन एपेरल, दन्ना, पोछा इत्यादि। परन्तु अपने इस कार्य को बढ़ाने के लिए और पूंजी की आवश्यकता थी जो कि अभी उनके पास नहीं थी।

ऐसी सोच के साथ फामिदा ने अपने कारोबार को बढ़ाने की सोची और कहते हैं कि जहाँ चाह होती है वहाँ राह भी मिल ही जाती है और इसी सोच के साथ फामिदा को निसबड संस्थान के बारे में पता चला, जहां से उनके मन में एक उम्मीद की किरन जागी। निसबड संस्थान के द्वारा उन्हे पी0एम0ई0जी0पी योजना के बारे में पता चला जिसके चलते उन्होने वर्ष 2020 में इस योजना के तहत ऋण के लिए आवेदन किया। यह वह दौर था जब पूरी दुनिया में लोग एक कोरोना नामक महामारी का सामना कर रहे थे। इस काल में पूरी दुनिया लॉकडाउन की अवधि का सामना कर रही थी। सरकारों द्वारा भी यह घोषणा करी गई थी कोई बाहर न जाए और किसी अन्य व्यक्ति या वस्तु को न छुए जिससे महामारी न फैले। मानो दुनिया रूक सी गई हो। ऐसी विषम परिस्थिति में भी फामिदा ने हार नहीं मानी और अपने सपनों को टूटने नहीं दिया। वह अपने इरादों को मजबूत कर चुकि थी।

ऐसे दौर में भी फामिदा ने हिम्मत नहीं हारी फिर उनका रू0 1100000/— का ऋण स्वीकृत हो गया। जैसे ही उनका ऋण स्वीकृत हुआ उनकी खुशी का ठिकाना न रहा और उन्होने मई 2020 में मशीनरी एवं अन्य उपकरण खरीद कर कार्य की शुरूआत करी। ये उनकी मेहनत का नतीजा है कि एक छोटी सी शुरूआत करने वाली लड़की आज रू0 40000 प्रति माह का लाभांश प्राप्त कर रही है और आज उन्होने 21 लोगों का रोजगार दिया हुआ है जिसमें से 06 लोग उत्पादन का कार्य देख रहे हैं और 15 लोग विपणन का कार्य देख रहे हैं।

आज फामिदा अपने क्षेत्र की एक जाना माना और परिचित नाम है, और वह कई ऐसे लोगों के लिए प्रेरणा श्रोत है जो करना तो बहुत कुछ चाहते हैं परन्तु थोड़ी सी मुश्किलों में हार मान लेते हैं।

20. सेना से स्ववबलम्बन की और

उद्यमी का नाम	भूपेन्द्र सिंह/भोपाल सिह
उद्यम का नाम	बी स्योर (Be Sure) सैनिक कौन्टिन
उद्यम लागत	12,00,000
उद्यम का स्थापित वर्ष	सन् 2022
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	36.0–40.0लाख
उद्यमी का पता	कोटद्वार, पौंडी गढवाल, उत्तराखंड
योजना का नाम	12,00,000 रू0 (पीएमईजीपी)
कर्मचारियों की संख्या	04
उद्यम का प्रकार	व्यापार

भारतीय सैना हर भारतीय के लिये गार्व और सम्मान का सूचक है। भारतीय सैना के तीन अंगो में से एक वायु सेना आकाश की उचाईयों पर अपने पराक्रम को प्रदर्शित कर सबको रोमांचित और गौरवान्वित महसूस कराती है। अधिकतर युवाओं को अपनी ओर आकर्शित करने सामाजिक जीवन मे उद्यमिता को अपनाकर स्वरोजगार को एक सशक्त आजीविका स्रोत के रूप में प्रदर्शित किया है।

उत्तराखंड के गढवाल मंडल में स्थित पौंडी जिला एक सैनिक बहुल क्षैत्र के रूप में जाना एंव यहाॅ भूपेन्द्र सिंह का जन्म हुआ। भूपेन्द्र का पालन पोषण सैना के परिवेश में हुआ और इसी माहौल से प्रेरित होकर भूपेन्द्र ने भी भारतीय सैना में जाने का निर्णय लिया। अपनी स्नातक की शिक्षाा पुर्ण करने के बाद वर्ष 2002 में भारतीय वायु सैना में चयनित होकर वह समर्पित भाव से राष्ट्र सेवा में लग गये।

अपने सेवाकाल में उन्हें महानिदेशक पुर्नावास के माध्यम से वर्ष 2022 में संस्थान में प्रशिक्षण पाने का अवसर मिला जहॉ उन्हें उद्यमिता के विषय में और वर्तमान परिपेक्ष में उसकी महत्ता के विषय में जाना,कैसे उद्यम को स्थापित,संचालित और विकसित किया जाता है। यह सब जानकारी प्राप्त कर संस्थान के मार्गदर्शन पर उन्होंने अपना उद्यम स्थपित करने का मन बना लिया।

अपनी छुट्टियों के दौरान बाजार सर्वेक्षण कर उन्होंने सैनिक कैंटिन (किराना स्टोर) खोलने के लिये संस्थान से सम्पक्र किया। सरकारी सेवा में होने के कारण वह किसी भी योजना के लाभार्थी नही हो सकते थे, जिस कारण उनके पिताजी ने मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना के अन्तर्गत आवेदन कर 10,00,000 (दस लाख) रूपये का अनुदानिक ऋृण प्राप्त किया और दिनांक 10.08.2022 को वजूद में आया वी स्योर (ठमॅ नतम) सैनिक कौन्टिन।

आज 02 अन्य लोंगो को रोजगार देने के साथ ही दैनिक रूप से 10000 से 15000 का वस्तु विक्रय करने वाले भुपेन्द्र भविष्य में अपने सेवाकाल में अर्जित अनुभव के आधार पर साहसिक खेल पाक्र भी खोलना चाहते है, जिसकी योजना वो संस्थान के मार्गदर्शन में कर रहे है।

21. श्री गणेश

उद्यमी का नाम	चॉदनी
उद्यम का नाम	श्री गणेश
उद्यम लागत	20,000/—
उद्यम का स्थापित वर्ष	2020
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	1.2 से 1.4 लाख
उद्यमी का पता	बेगुसराय, बिहार
योजना का नाम	मशरूम उत्पादन
कर्मचारियों की संख्या	01
उद्यम का प्रकार	कृषि

संर्घषों के पथ पर जो खुद को समर्पित कर अविरल प्रयासरत रहता है सफलता स्वतः ही उसके समक्ष नतमस्तक हो जाती है। ऐसी ही संर्घषशील और समर्पित भाव की जीवंत उदहारण है भारतीय महिलायें। कुछ ऐसी ही कहनी बेगुसराय, बिहार से आने वाली चॉदनी देवी की भी है।

जिला मुख्यालय बेगुसराय से तकरीबन 10 किमी दुरी पर स्थित रांचीयाही गांव में रहने वाली चॉदनी एक निम्न आय वर्ग वाले परिवार से आती है अपनी आजीविका के लिये पति दैनिक मजदुरी का काम किया करते थे और चॉदनी भी मजदुरी कार्य कर उनका सहयोग करती थी।

संस्थान से प्रशिक्षित चॉदनी बताती है कि उसे अपने साथियों के साथ बेगुसराय में मशरूम प्रशिक्षण में प्रतिभाग करने का अवसर मिला जहॉ एक माह तक उन्होने मशरूम

उत्पादन का प्रशिक्षण लिया। अपनी मेहनत की कमाई से बचत की गई 5000 रू के प्रारभिंक निवेश से उन्होंने सन् 2020 में मशरूम उत्पादन का कार्य प्रारंभ किया पर कोरोना के आगाज ने मानो उसकी उम्मीदों पर पानी फेर दिया। किसी तरह से स्थानीय बजार में बने उत्पाद का विक्रय कर अपनी लागत का कुछ अंश बचा पाने मे वो सफल हो पायी।

अपनी हिम्मत को उम्मीदो में समेटे चॉदनी ने अगस्त माह में पुनः अपना कार्य करना शुरू ही किया था कि बाढ ने एक बार फिर उसके सपनों को अपने संग बहा ले गई।

कहते है कोशिश करने वालों की कभी हार नही होती। कुछ इसी प्रकार के भाव मन में लिये संस्थान के मार्गदर्शन और अपनी हिम्मत के दम पर चॉदनी ने 15000 रू के निवेश से एक बार फिर से मशरूम उत्पादन का कार्य प्रारंभ किया। अपने शुरूआती आमदानी के तौर पर पहले महिनें ही उसने 9000 रू का मुनाफा कमाया।

अब मानों उसके काम का वास्तविक श्री गणेश हुआ था। शायद इसी लिये उसने अपनी ईकाई का नाम श्री गणेश मशरूम उत्पादन रखा। संस्थान के सहयोग से उन्होंने अपनी ईकाई का एफएसएसएआई पजिंकरण भी करवा लिया है।

वर्तमान में चॉदनी केवल मशरूम का उत्पादन ही नही कर रही है बंलकि उसके विभिन्न उत्पाद भी बना कर यह सिद्व कर रही है के परस्थिति चाहे केसी भी हो अपकी मनस्थिति अपकी सफलता के आयामें को गढती है।

22. आत्मनिर्भर मधु

उद्यमी का नाम	मधु
उद्यम का नाम	सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र
उद्यम लागत	200000
उद्यम का स्थापित वर्ष	2020
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	1.2 से 1.5 लाख
उद्यमी का पता	बडहरिया, बिहार
कर्मचारियों की संख्या	01
उद्यम का प्रकार	सेवा

भारत के उत्तर पूर्वी में स्थित अपनी ऐतिहासिक विरासत के लिये प्रसिद्व होने के साथ जनसॅंख्या की दृष्टि से देश के तीसरे सबसे बडें राज्य बिहार के बडहरिया की रहने वाली मधु देवी ने सही मायनो में उद्यमिता के अर्थ को परिभाषित किया हे।

अधिकतर किशोरियॉं/महिलायें सिलाई को अपने शौक के लिये सिखना पंसद करती है। कुछ इसे समय के साथ भूला लेती है तो कुछ इसे अपना व्यवसाय बना कर न केवल अपनी आजीविका के सशक्त करती है बंलकि अपने साथ अन्यों के रोजगार का साघन भी बनती है।

समय के साथ साथ भारत में महिलाओं कर्मकारों की सॅंख्या लगातार बड रही है और इसमें बडी सॅंख्या महिला उद्यमियों की रही है। इन्ही महिलाऔं में एक है मधु। मधु ने सिलाई प्रशिक्षण प्राप्त कर यह कौशल औरो तक पहुॅंचाने के

उददेश्य से सन् 2020 में अपना प्रशिक्षण केन्द्र खोला, जिसमें उन्होंने वस्त्र निर्माण का प्रशिक्षण देना प्रारंभ किया इससे पहले मधु का काम अपनी रफ्तार, कोरोना की बडती रफ्तार ने उसके उद्यम की गति थाम ली।

शुरू होते करोबार को एकदम से बन्द होता देखा मधु पूरी तरह से टूट गई। अब न विचार और न ही हिम्मत,कुछ भी नही था जो उसे हौंसला दे पाता फिर से उठ खडें होने का। ऐसे में अपने साथियों से मिली जानकारी से उन्होंने संस्थान द्वारा आयोजित 3 दिवसीय मेंट्रेरशिप शिविर में प्रतिभाग किया। जहॉ उन्होंने उद्यम के चयन, स्थापना, संचालन, प्रबंधन औा सतत विकास की महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई।

संस्थान के सहयोग से उन्होंने अपनी वित्तीय योजना को बैंक में प्रस्तुत कर 200000रू का ऋृण प्राप्त कर अपने सपनों को उडान देने का प्रयास किया। मधु के प्रस्ताव को बैंक ने स्वीकार कर उसके उद्यम को अकार देने का कार्य किया। संस्थान से प्राप्त मार्गदर्शन`के आधार पर उसने अपने उद्यम का पजिंकरण (उद्योग आधार) करवाकर अपने काम को आगे बडाया। आज सिलाई प्रशिक्षण के साथ साथ वह सौंदर्य उत्पादों को भी होलसेल रूप से विक्रय कर रही है।

अपने इस कार्य से वो अन्य और भी महिलाओं के रोजगार का साधन बनकर सम्भविंत उद्यमियों के लिये प्रेरणा प्रदायक है।

23. पेपर मेकर

उद्यमी का नाम	संगीता देवी
उद्यम का नाम	संगीता, पेपर कप प्लेट उद्योग
उद्यम लागत	6,50000
उद्यम का स्थापित वर्ष	2020–21
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	18.0 से 20.0 लाख
उद्यमी का पता	बिहार
कर्मचारियों की संख्या	04
उद्यम का प्रकार	उत्पादन निर्माण

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि भारत एक विकासशील देश है और निरन्तर विकसित होने की ओर प्रयासरत है। हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री जी का भी विज़न है कि हमारा देश आत्मनिर्भर बने और यह तभी सम्भव है जब सभी उत्पाद हमारे देश में ही बने और बाहर देशों से हमें उत्पादों को न खरीदना पड़े। आत्मनिर्भर बनने के लिए हम सभी को अपने आप को किसी न किसी माध्यम से छोटे या बड़े उद्यम से जोड़ना पड़ेगा।

इसी क्रम में हमारे देश में पहल भी शुरू हो चुकी है और कई लोग बजाय नौकरी के अपने उद्यम को तवज्जों दे रहे हैं। ऐसी ही कहानी है संगीता देवी की जो मध्यम परिवार से ताल्लुक रखती है। संगीता का पति एक प्राइवेट स्कूल में पढ़ाता है और साथ ही साथ कुछ ट्यूशन भी पढ़ाता है जिससे उनके घर का खर्चा चल पाता है परन्तु पति की सीमित आय के कारण कई बार मन की इच्छाओं को मार कर परिवार चलाना पड़ता है।

फिर कोरोना महामारी के दौरान एक दौर ऐसा भी आया जिसने रही सही कसर भी निकाल दी। इस समय मनुश्य की नौकरियों पर भी संकट आया। लॉकडाउन के कारण कई कार्यालय बंद हो गए थे। प्राइवेट संस्थान, स्कूल भी बंद हो गए थे। लोगों की तन्ख्वाह आधी हो गई थी और कई संस्थाऐं तन्ख्वाह देने में भी सक्षम नहीं हो पा रहे थे जिस कारण लोगों के आगे आर्थिकी का संकट खड़ा हो गया था। ऐसे में आय के श्रोत को बढ़ाने के लिए संगीता और उनके पति ने गंभीरता से अन्य विकल्पों के बारे में सोचना शुरू किया।

कुछ समय पश्चात उन्होने अपना व्यवसाय करने की सोची क्योंकि उस समय यही उनको एक बेहतर विकल्प दिख रहा था। लेकिन अचानक ऐसी परिस्थिति का आना उनके सामने कई चुनौतियों को भी बुलावा दे रहा था। उनके पति के मन में कई व्यवसायो का विकल्प था परन्तु उन्होने पेपर कप प्लेट निर्माण का व्यवसाय शुरू करने की सोची जिसका उन्हे अनुभव तो नहीं था परन्तु आत्मविश्वास जरूर था। क्योंकि उनका परिचित यह कार्य पहले से कर रहा था इसलिए उन्हे भी यह कार्य करने का हौसला मिला। संगीता के पति ने पेपर कप प्लेट निर्माण व्यवसाय का बाजार सर्वेक्षण भी किया जिससे उन्हे काफी ज्ञान प्राप्त हुआ। लेकिन इस कार्य को करने का उनके पास कोई प्रशिक्षण नहीं था इसलिए उन्हे कुछ अधूरापन लग रहा था। वह कुछ इस व्यवसाय से सम्बन्धित प्रशिक्षण लेना चाह रही थी तभी संगीता को निसबड संस्थान द्वारा आयोजित पी0एम0युवा योजना द्वारा प्रायोजक मेन्टरिंग कैम्प के बारे में पता चला। इस कैम्प के बारे में सुना भी बहुत था और इसी उद्देश्य के साथ उसने अपना पंजीकरण इस प्रशिक्षण शिविर में कराया। इस कार्यक्रम में उन्होने बहुत कुछ सीखा जिसकी उन्हे तलाश थी जैसे उद्यम कैसे शुरू किया जाए, उद्यम अवसर को पहचानना, सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न विभागों की योजनाओं के बारे में भी उनको पता चला। पी0एम0ई0जी0पी योजना के अन्तर्गत बैंको द्वारा ऋण किस प्रकार लिया जा सकता है , और यह किस प्रकार हमारी वित्तीय प्रबन्धन में सहायक होता है। प्रशिक्षण कार्यक्रम में बहुत सी नई चीजें संगीता द्वारा सीखी गई जिसका उनको पहले से पता नहीं था। इसी प्रशिक्षण कार्यक्रम में उन्हे विपणन के गुण भी बताऐ गये जिसके तहत उन्हे अपने उत्पादों को बाजार तक पहुँचाने में मदद भी मिली जिससे उनका उत्साह देखते ही बनता था। उनके उत्पाद विवाह समारोह में भी पहुँचाए जाते हैं जिसके लिए कच्चा माल उन्होने खरीद कर रख लिया है।

प्रशिक्षण के बाद मानो संगीता के सपनों को पँख लग गये हों। वह धन्यवाद भी देती है निसबड का और उनके प्रशिक्षकों का जिन्होने इस तरह के प्रशिक्षण का आयोजन उनके क्षेत्र में किया। और साथ ही साथ उनके द्वारा बनाऐ हुए उत्पादों का बाजार एवं सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म से लिंकेज भी कराया जिसके तहत उनके उत्पाद बाजारो में भी उपलब्ध हो चुके हैं एवं इनके उद्यम का आधार पंजीकरण भी कराया गया है।

24. सॉल्यूशन प्वांईट

उद्यमी का नाम	मुकेश कुंधरा
उद्यम का नाम	ऑल सब्जेक्ट सॉल्यूशन पॉइट कोचिंग सेंटर’
उद्यम लागत	100000/—
उद्यम का स्थापित वर्ष	15 जून 2020
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	3.0 से 4.0 लाख
उद्यमी का पता	F/124 करण विहार, सुल्तानपुरी, दिल्ली
कर्मचारियों की संख्या	02
उद्यम का प्रकार	सेवा

शिक्षा किसी भी सभ्य समाज के मूलक के रूप में कार्य कर मानव सभ्यता को पूर्वान्तर से ही विकसित करने का कार्य कर रही है। शायद इसीलिए कहा गया है कि शिक्षा के बिना व्यक्ति का और शिक्षित व्यक्तियों के बिना सामाज की परिकल्पना नही की जा सकती ।

जहां एक ओर सामाज को शिक्षित करना एक सामाजिक सरोकार का कार्य माना जाता है, वहीं आज शिक्षा के माध्यम से युवाओं को ओर भी अवसर युक्त कराने का कार्य सरकारी और निजी प्रयासो से सतत रूप से किया जा रहा है। यह कहानी भी एक ऐसे युवा की है जिसने स्वयं खुद शिक्षित होकर अन्यों को भी शिक्षित कर रोजगार युक्त करने का कार्य कर रहें है।

सुल्तानपुरी दिल्ली के कर्ण विहार के रहने वाले मुकेश कुंधरा एक युवा उद्यमी हैं जिन्होने शिक्षा को न केवल अपने व्यक्तित्व के विकास के लिये अपितु अपनी

आजीविका संवर्द्धन के स्रोत के रूप में अपना कर अपने आप को आर्थिक और सामाजिक रुप से सशक्त करने का कार्य किया है।

मुकेश ने संस्थान (निसबड़)द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्य में प्रतिभाग कर वहां से प्रेरित होने के पश्चात 2020 में मुकेश ने एक दूसरे कर्मचारी के साथ मिलकर ''ऑल सब्जेक्ट सॉल्यूशन पॉइट कोचिंग सेंटर'' के नाम से एक कोचिंग सेंटर खोला वे कक्षा एक से बी.ए. तक के छात्रों को न्यूनतम प्रभार्य शुल्क में कंप्यूटर और अंग्रेजी बोलने वाले पाठयक्रम के क्षेत्र में शिक्षा प्रदान करते है। और यहां तक कि उन्हें राज्य चयन आयोग सहित विभिन्न सरकारी परीक्षा फॉर्म भरने में सहायता करते हैं।

वह इस प्रशिक्षण से उपलब्ध व्यावसायिक अवसरों के बारे में और अपने वर्तमान उद्यम् को कैसे बढ़ाया जाए, इस बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करनें में सक्षम थे। पी एम युवा, निसबड़ की टीम ने उनके उद्यम् के उद्योग आधार पंजीकरण और अन्य दस्तावेजी आवश्यकताओं को पूरा करनें में भी उनकी मदद की मुकेश का वर्तमान लक्ष्य अपना स्वयं का सी.एस.सी सेंटर खोलने में सक्षम होना है। जिसमें वह आधार कार्ड पंजीकरण सहित अधिक क्षेत्रों में मदद करना चाहता है।

इसके अतिरिक्त, वह अधिक प्रमाणपत्र – आधारित पाठ्यक्रमों को शामिल करके अपने कोचिंग सेंटर को समृद्ध बनाने की योजना बना रहें है और सब खर्चे पूर्ण करने के पश्चात वह महिने का 15000 से 20000 रू0 तक बचा लेते है।

काम और दूरदृश्टि के प्रति उनका समर्पण मुकेश जैसे भविश्य के कई अन्य उद्यमियों के लिये एक प्रेरणा है।

25. आर.जे. क्रिएशन वर्ल्ड

उद्यमी का नाम	रजनी यादव
उद्यम का नाम	आर.जे. क्रिएशन वर्ल्ड
उद्यम लागत	20000
उद्यम का स्थापित वर्ष	जनवरी 2020
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	1.8–2.0 लाख
उद्यमी का पता	खोड़ा कॉलोनी, नई दिल्ली
कर्मचारियों की संख्या	**02**
उद्यम का प्रकार	सेवा का क्षेत्र

आज के मौजुदा समय में जहॉ युवा अपने आजीविका संवर्धन के लिये रोजगार की लालसा लिये अपने भविश्य को सुरक्षित करने का सपना बुनते है। वही दूसरी तरफ कुछ युवा ऐसे भी हैं जो स्वरोजगार को अपनाकर अपने साथ ओरों के रोजगार का भी साघन बन रहै है।

कुछ ऐसी ही कहानी,खोड़ा कॉलोनी,मयूर विहार, दिल्ली की रहने वाली रजनी यादव की भी है। अपनी प्राराम्भिक शिक्षा के बाद रजनी ने अपनी रूचि को शिक्षा में परिवर्तित कर आजिविका का स्रोत बनाने का निर्णय किया, जिसके फलस्वरू रजनी ने आईटीआई, मयूर विहार, दिल्ली से एक साल का फैशन डिजाइनिंग का कोर्स किया।

आईटीआई में प्रशिक्षण के दौरान रजनी ने पीएम युवा

योजना के अन्तर्गत उद्यमिता विकास कार्यक्रम में प्रतिभाग कर कार्यक्रम के दौरान , उद्यम् , विपणन, ग्राहक विभाजन,व्यावसायिक विचार और व्यवसाय योजना स्थापित करने के विभिन्न पहलुओं के बारे में सीखा।

पीएम युवा कार्यक्रम में प्रतिभाग करने के दौरान प्रशिक्षको ने रजनी यादव के हुनर का अवलोकन किया तथा सत्र के दौरान उन्हें आईटीआई के संकायो ने उसे सूट सिलने का काम सौपा उसने जोश के साथ कार्य लिया और उत्पाद को समय पर वितरित किया और गुण्वत्ता सुनिश्चित की।

उन्होनें अपने काम को सुचारू रूप से चलाने के लिये घर वालों की सहायता से 10000 (दस हजार) की धनराशि से एक सिलाई मशीन खरीदी जिसके सहयोग से उन्होने घर से ही अपने काम को चलाया। उन्होनें जनवरी 2020 में आईटीआई मे अयोजित उद्यमिता प्रतियोगिता की स्टार्टअप श्रेणी में प्रथम रनर अप का पुरस्कार जीता। इस पुरस्कार से वह वह बहुत प्रेरित हुई। प्रतियोगिता के परिणाम और रजनी की लगन ने उसके उद्यम स्थपित करने के निर्णय को और भी मजबुत किया, जिसके फलस्वरूप फरवरी 2020 में उसने ''आरजे क्रिएशन वर्ल्ड'' नाम से अपना सिलाई उद्यम स्थपित किया।

वर्तमान में रजनी ने कपडो के क्षेत्र में उद्यम स्थापित कर साड़ी और सूट पर नये–नये डिजाइनों से कपडों को तैयार कर रही हैं तथा जो लोग समारोह आदि के लिये अधिक कीमती कपडे नही खरीद सकते है उनकी सुविधा के अनुसार रजनी तैयार कपड़े किराये पर भी उपलब्ध करा रही है। कल तक अपनी छोटी बडी जरूरतों के लिये घरवालों पर अश्रित रहने वाली रजनी आज न केवल अपनी आय सें अपनी जरूरतों को पुरा कर रही है बंलकि महीने का 8000–10000 रूपये तक बचा लेती है। छोटी उम्र में रजनी की कार्य के प्रति कर्मठता और समर्पण देखकर उसके आस पास रहने वाले लोग भी उससे प्रेरित होतें है।

26. गंगा मशरूम

उद्यमी का नाम	श्रीमती रेखा देवी
उद्यम का नाम	माँ गंगा मशरूम उत्पादन
उद्यम का पता	रायचियाही, बेगूसराय, बिहार
उद्यम लागत	20,000
एफ0एस0एस0ए0आई पंजीकरण	आरईएफ संख्या 30220405110289903
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	1.2–1.5 लाख
उत्पाद	मशरूम, सूखा मशरूम, पाउडर मशरूम इत्यादि
उद्यम का स्थापित वर्ष	2021
कर्मचारियों की संख्या	02

श्रीमती रेखा देवी रायचियाही, बेगूसराय, बिहार की रहने वाली है जिन्होने अपनी मेहनत के दम पर ऐसा मुकाम हासिल किया जो शायद ही कभी उन्हाने सोचा होगा क्योंकि एक मध्यम परिवार से सम्बन्ध रखने वाली महिला को सबसे पहले अपने परिवार की जिम्मेदारियों का निर्वहन भी करना होता है। इसके बाद ही समय निकालकर वह अन्य कार्यों के बारे में सोच सकती है। इस ही तरह का कार्य रेखा देवी द्वारा भी किया गया जिसने अपने पारिवारिक जिम्मेदारियों का निर्वहन करते हुए अपने परिवार के हितार्थ एवं परिवार की आमदनी बढ़ाने हेतु अपने मशरूम उत्पादन से सम्बन्धित व्यवसाय करने की सोची। वर्श 2021 में मशरूम क प्रशिक्षण लेने के बाद उन्होने अपना व्यवसाय शुरू किया और इस व्यवसाय को आगे बढ़ाने की सोची। कुछ समय बाद उनको इसका अच्छा मुनाफा भी मिला जिसके बाद रेखा का मनोबल भी मिला।

बस फिर मानो रेखा के सपनों का पँख से लग गये हों और उन्होने कुछ सहयोगियों की मदद से थोड़ी ज्यादा पूंजी के निवेश से मशरूम उत्पाद का कार्य और उससे निर्मित होने वाली वस्तुओं जैसे मशरूम आचार, सूखा मशरूम, पाउडर मशरूम इत्यादि का कार्य किया। परन्तु होनी को कुछ और ही मन्जूर था और उनका क्षेत्र बाढ़ की चपेट में

आ गया जिस कारण उनकी उपज को भारी नुकसान हुआ। रेखा को यह एक सदमें के समान था जिससे वह पूरी तरह से टूट चुकी थी। निराशा के कारण उसने एक बार यह कार्य को छोड़ने की भी सोची परन्तु पारिवारिक जिम्मेदारियों के चलते उसने एक बार फिर हिम्मत करी और दुबारा इस कार्य को करने की सोची। कहते हैं कि मनुश्य अगर एक बार हार मान ले तो कई बार जीती हुई बाजी भी हार जाता है। रेखा ने अपने साथ ऐसा नहीं होने दिया और दुबारा से मेहनत कर अपने व्यवसाय को खड़ा किया परन्तु इस बार उसने थोड़ा प्रशिक्षण लेने की भी सोची।

इसी बीच रेखा को निसबड संस्थान द्वारा संचालित पी0एम0युवा के तीन दिवसीय मेन्टरिंग कैम्प (शिविर) के बारे में भी पता चला जिसमें जिज्ञासा वस उन्होने भी अपना पंजीकरण कराया जिसमें उन्होने उद्यमिता एवं व्यवसाय से सम्बन्धित जानकारियाँ जुटाई। तीन दिवसिय प्रशिक्षण कार्यक्रम में उन्हे उद्यम एवं अवसर को पहचानने की कला सीखी। इसमें आने वाली चुनौतियों और उसका निवारण भी कार्यक्रम में बताया गया। साथ ही साथ सरकारी योजनाओं और बैंकों द्वारा ऋण हेतु आवेदन की प्रक्रिया भी उन्होने सीखी जिसमें पी0एम0ई0जी0पी योजना के बारे में भी उनको बताया गया जिससे उनको वित्तीय प्रबन्धन में भी सहयोग मिला। उद्यम की स्थापना से लेकर विपणन एवं बाजार से लिंकेज तक का सहयोग संस्थान द्वारा उनको प्राप्त हुआ।

अब रेखा का अपने उत्पादों जैसे मशरूम आचार, मशरूम पाउडर, सूखा मशरूम एवं मशरूम से निर्मित उत्पादों को मांगों के अनुसार स्थानीय बाजार तक पहुँचाने की योजना है जिससे उनके उत्पाद अधिक से अधिक स्थानों में लोगों के लिए उपलब्ध हो सकें। रेखा धन्यवाद करती है निसबड संस्थान का जिनके मार्गदर्शन में उन्होने अपने उद्यम को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया और उनके उद्यम का एफ0एस0एस0ए0आई के अन्तर्गत पंजीकरण भी कराया और उन्हे आश्वस्त भी किया गया जिसमें कि भविश्य में भी उनको हैण्डहोल्डिंग सहायता जो भी सम्भव हो प्रदान की जाएगी और किसी एजेंसी द्वारा उनके उत्पादों का विपणन भी कराया जाएगा जिसके तहत उनके उत्पादों की प्रदर्शनी भी समय समय पर स्टॉलों में लगाई जाएगी।

27. निर्भरता से आत्मनिर्भरता की बडते कदम

उद्यमी का नाम	श्रीमती सुमन देवी
उद्यम का नाम	श्री साईं मशरूम उत्पादन केंद्र
उद्यम लागत	20000
उद्यम का स्थापित वर्ष	2021
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	1.4 –1.8 लाख
उद्यमी का पता	डब्ल्यू–3, रचियाही, बेगूसराय, बिहार
कर्मचारियों की संख्या	**02**
उद्यम का प्रकार	उत्पादन का क्षेत्र
उद्यम आधार	उद्यम–बीआर–06–0010278

जैसा कि हर व्यक्ति का सपना होता है कि वह जीवन में कुछ बड़ा काम करे ताकि वह औरों के लिए भी प्रेरणा श्रोत बन सके। वैसे ही सपने कभी सुमन ने भी देखे थे और उसे पूरा करने के लिए उत्साहित भी थी। एक महिला होने के नाते सुमन की कई घरेलु जिम्मेदारियाँ भी थी जिसको उन्हाने अपनी कमी के रूप में नहीं अपितु अपनी शक्ति के रूप में उभारा। पति की आमदनी इतनी नहीं थी कि जिससे उनका घर ठीक से चल सके। इसलिए सुमन थोड़ी चिन्तित भी रहती थी कि किस तरह घर की आय बढ़ाने में पति का सहयोग कर सके। आमतौर पर ग्रामीण परिवेश में औरतों को घर की चार दिवारी के अन्दर का कार्य ही करने को दिया जाता है परन्तु यहाँ पर सुमन को अपने पति का भी सहयोग मिलने लगा था। सुमन कुछ अपना व्यवसाय करना चाहती थी। परन्तु व्यवसाय की बारिकियाँ अभी तक सुमन ने नहीं सीखी थी इसलिए यह कार्य उनको थोड़ा मुश्किल लगने लगा रहा था।

सुमन पहले से मांगानुसार थोड़ी बहुत सिलाई का कार्य कर रही थी परन्तु इससे कुछ खास आय नही हो रही थी और पारिवारिक आमदनी में भी कुछ खास बढ़ोत्तरी नहीं हो रही थी। जिसके चलते सुमन ने कुछ अलग व्यवसाय

करने की सोची और पति के सहयोग से 27 वर्श की आयु में वर्श 2021 में मशरूम उत्पादन के क्षेत्र में कार्य करने की सोची और कुछ सहयोगियों की मददन से एक टीम बनाकर मशरूम उत्पादन का कार्य शुरू किया और धीरे धीरे मशरूम उत्पादन केन्द्र खोला। इस क्षेत्र में सुमन ने अपनी मेहनत से इससे सम्बन्धित प्रशिक्षण प्राप्त किया परन्तु यह प्रशिक्षण कुछ अधूरा सा लग रहा था।

शुरूवाती दिनों में सुमन ने कुछ सहयोगियों की मदद से रू0 3,000.00 की पूंजी लगाकर मशरूम उत्पादन का कार्य किया जैसा कि हर नए कार्य की शुरूवात में कार्य थोड़ा कठिन सा लगता है बस जरूरत होती है मजबूत इरादे की। इसी सोच के साथ सुमन ने मजबूत इरादों के साथ इस कार्य की शुरूआत करी जिसमें काफी हद तक वह सफल भी रही और इसके सुखद परिणाम भी देखने को मिले। धीरे धीरे सुमन का आत्मविश्वास बढ़ता चला गया। सुमन को परिवार का सहयोग भी मिलने लगा था। जिससे उसका आत्मविश्वास अलग ही दिखने लगा था। उसका कार्य जब तक अपने पड़ाव पर पहुँच पाता तब तक समय ने ऐसी करवट बदली कि उनका और आस पास का क्षेत्र बाढ़ की ग्रस्त में आ गया जिससे क्षेत्र को काफी नुकसान पहुँचा और उनकी फसल को भी काफी नुकसान पहुँचा जिससे मशरूम का उत्पादन न होने के कारण उनके व्यवसाय को काफी नुकसान पहुँचा।

सुमन इस नुकसान को झेल नहीं पाई और अन्दर से वह काफी टूट चुकी थी। वह जीवन के इस मोड़ पर थी कि उसे कुछ भी नहीं सूझ रहा था। समय के साथ साथ सुमन ने अपने मन को समझाया और वह अपने आप को इस सदमे से उभारने का प्रयास कर ही रही थी कि तभी उसे निसबड संस्थान द्वारा आयोजित मेन्टरिंग कैम्प के बारे में पता चला। इस कार्यक्रम के बारे में उनको कुछ खास नहीं पता था परन्तु उसने वहाँ जाकर कार्यक्रम के बारे में जाना जिसमें उसे पता चला कि इसमें अपने उद्यम से सम्बन्धित जानकारियाँ बताई जाऐंगी। तो मानो सुमन के टूटे हुए मन को एक रोशनी की किरण दिखाई दी हो। उसने तुरन्त उस प्रशिक्षण कार्यक्रम में अपना पंजीकरण करा लिया।

कार्यक्रम में उन्हे अपना उद्यम कैसे शुरू करें इसके बारे में बताया गया। साथ ही साथ सरकार द्वारा विभिन्न योजनाओं के बारे में भी बताया गया कि किन किन

योजनाओं के तहत आप अपने उद्यम हेतु ऋण ले सकते हैं तथा किस तरह आप पैकेजिंग एवं मार्केटिंग कर सकते हैं। कौन कौन से विभाग हमारे उद्यम को लगाने एवं चलाने में मदद कर सकते हैं इसकी विस्तृत जानकारी भी प्रदान की गयी। कुल मिलाकर यह प्रशिक्षण कार्यक्रम हमारे लिए एक नई आशा कि किरण लेकर आया। सुमन धन्यवाद करती है निसबड संस्थान का जिसने उनके क्षेत्र में इस तरह के प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया और जो उन लोगों को एक आशा कि किरण दिखाई जो अपना स्वरोजगार करना चाहते हैं परन्तु उनके सामने वित्तीय प्रबन्धन एवं जानकारी का अभाव रहता है। निसबड ने हैण्डहोल्डिंग सपोर्ट द्वारा सुमन के उद्यम का उद्यम आधार भी किया जिसके तहत उनका उद्यम ''श्री साई मशरूम उत्पादन केन्द्र'' के रूप में पंजीकृत हुआ और साथ ही साथ उनके उद्यम के एफ0एस0एस0ए0आई पंजीकरण हेतु आवेदन भी किया गया जिसकी पंजीकरण संख्या भी बहुत जल्द ही उनको प्राप्त हो जाएगी। साथ ही साथ निसबड संस्थान द्वारा उन्हे आश्वस्त भी किया गया कि भविश्य में भी उनके उद्यम से सम्बन्धित सहयोग उन्हे समय समय पर प्रदान किया जाएगा। उनके यह जानकर भी खुशी हुई कि उनके उत्पाद को बड़े बाजारों में ग्राहकों तक पहुँचाया जाएगा।

सुमन कहती है कि इस प्रशिक्षण की वजह से उसके कौशल को एक नया रूप मिला है और वह आज जो कुछ भी है वह अपनी मेहनत, लगन और प्रशिक्षण कार्यक्रम में आए सभी प्रशिक्षकों की वजह से है । वह धन्यवाद करती है कौशल विकास एवं उद्यमशीलता मंत्रालय का , निसबड संस्थान का जिनके सौजन्य से वह अपने हुनर को पहचान पाई और अपने व्यवसाय को एक नई पहचान दिला पाई। सुमन आज अपने क्षेत्र में किसी परिचय की मुहताज नहीं है।

28. आवयश्कता से अविष्कार

उद्यमी का नाम	गौरव देवतारे
उद्यम का नाम	ग्रामीण कार्बाइड फायर गन का अभिनव प्रयोग
उद्यम लागत	20000
उद्यम का स्थापित वर्ष	सन् 2020
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	1.5–2.0 लाख
उद्यमी का पता	पोस्ट पंजारा, ताह, रामटेक, जिला नागपुर, नागपूर, महाराष्ट्र
कर्मचारियों की संख्या	**02**
उद्यम का प्रकार	

कहते है आवयश्कता ही अविष्कार की जननी है, अपने उदय से लेकर आज तक मनुष्य की विकास प्रक्रिया में कही प्रतिकुल पडाव भी आये बावजुद इसके प्रकृति की बनाई सबसे उत्कृष्ट कृति मनुष्य अपनी अभिव्यक्ति,अपनी अनुसंधानात्मक प्रवृति तथा अपनी रचनात्मकता से विकास के नये आयामों को स्थपित कर जीवन को सुगम बनाने का अनवरत प्रयास करता रहता है।

नागपुर जिले के रामटेक गांव में एक किसान परिवार में जन्में गौरव देवतारे बचपन से ही खोजी प्रवृति के थे। चीजों को जोडने तोडनें की आदत उनके व्यावहार से जा नही पाई और इसी आदत के कारण पडने की अपेक्षा उनका मन प्रयोग करने में ज्यादा लगता। चार भाई बहनों के परिवार में दो बड़ी बहनों की शादी हो चुकी तथा और छोटी बहन अभी पढ़ाई कर रही है। अपनी प्रारभिंक शिक्षा के बाद गौरव ने सरकारी आईटीआई, रामटेक से आईटीआई (वेल्डर) से अपना पाठयक्रम पूरा कर परिवार की आर्थिक जरूरत अनुसार एक कपड़े की दुकान में काम करना प्रारंभ किया।

वो हमेशा देखते कि कैसे किसानों को अपनी उपज बचाने के लिये जगंली पशुऔ और पक्षियों की समस्या से जुझना पडतां यह एक लम्बें समय से किसानों की समस्या रही है। गौरव भी अपने माता पिता के साथ खेती का काम करते थे अपनी फसल को बचाने के लिये कही सुरक्षा उपाय भी करते थे पर पशु,पक्षियों के आगे सब बेकार ही सिद्व होता।

अपने स्वरोजगार की चाह ने उन्हें पीएमयुवा योजनाार्तगत ईडीपी कार्यक्रम में प्रतिभाग किया जिससे उन्हें एक नई सोच मिली ।इसईडीपी कार्यक्रम में उन्होने हानि और लाभ का महत्व कैसे करें। बैंक से धन की व्यवस्था,व्यवसाय योजना और अनुभव भी प्राप्त किया ।सत्र के दौरान की गई गतिविधियां गौरव के बहुत काम आई उन्होंने यूट्यूब और अन्य डिजीटल माध्यमों से जगंली जानवरों से फसलों को सुरक्षित करने के उपाय खोजने लगे। ध्वानि अवधारणा पर काम करते हुए गौरव ने एक उत्पाद तैयार किया जिसे उन्होंने "कार्बाइड फायर गन" का नाम दिया है।

कार्बाइड और पानी को अगर नियत्रितं किया जाए तो एक गैस पैदा होती है। यह गैस से उत्पन्न विस्फोटजानवरों को डराने के लिए काफी तेज आवाज पैदा करता है। जिसकी आवाज सुनकर जगंली जानवर कई किलो मीटर तक पास नहीं आ पाते जिससे उन्हें जगंली जानवरों से काफी राहत मिली और वो अपने खतों को अच्छी पैदावार दे पाये।

गौरव ने अपने खेतों में ही इसका एक प्लाटं लगाया जिसमें उन्होने कुछ गैस के पाईप बिछाये और कार्बाइड को फायर करके गैस तैयार की जब उन्होने देखा की जगंली जानवर इस गैस से डर रहें है तो लोगों ने भी गौरव को प्रोत्साहित किया, और अपने अपने खेतों में डेमो भी लगवाया है।,

अपने इस नवाचार उत्पाद को अधिकृत करने की दिशा में वो कार्य कर रहे है। 250 रूपये प्रति यूनिट पर 70 से 80 रूपये का अनुमानित मुनाफा के अधार पर वो कार्य योजना को बडाने में लगे है।

अभी तक गौरव ने अपने दोस्तों और सहयोगियों का काफी सहयोग मिला अभी तक गौरव ने 350 ईकाईयां बेची है और प्रतिमाह 10,000 रू0 का मुनाफा भी कमाया है। गौरव इसका पूरा श्रेय निसबड के तहत मिले प्रशिक्षण को देते है।

29. एक कदम मजिंल की ओर

उद्यमी का नाम	शिवानी
उद्यम का नाम	चप्पल ईकाई
उद्यम लागत	8.50 लाख
उद्यम का स्थापित वर्ष	2021
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	6.0 –6.5 लाख
उद्यमी का पता	ग्राम पो0 ओ0 सभावाला जिला देहरादून उत्तराखण्ड
योजना का नाम	8,00,000रू0 (प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम)
कर्मचारियों की संख्या	08

इस दुनिया में हर किसी के छोटे बडे सपने होते है और उन सपनों को पाने के लिये वह सघर्शों के पथ पर बिना थके बिना रूके बडता ही रहता है। किसी का सपना उडता तो किसी का चलना पर शिवानी का सपना था बडते कदमों को मजबूती देता।

भारत के हिमालयी राज्यो में से एक उत्तराखंड की राजधानी देहरादून के सभावाला में एक निम्न माध्यम वर्ग के परिवार में शिवानी का जन्म हुआ। जीवन की मूल आवश्कताऔं के अभावों में बचपन बीता जहॉ बच्चे आसमान में उडतें हवाई जहाज को देख कर उसे चलाने और उस पर बैठने की चाहत रखते है वही शिवानी दौडतें पैरे के नीचे हवाई चप्पल की इच्छा ही कर पाती। बडतें समय के साथ शिवानी के जीवन में भी बदलाव आये उनका विवाह अपने ही गॉव के रहने वाले अमित के साथ हो गयी। शादी के बाद भी शिवानी ने अपने सपनो में रंग भरना जारी रखा, अपने पति के साथ

मिलकर चप्पल उत्पादन का कार्य प्रारम्भ करने का मन बना लिया पर पूँजी के साथ मशीन,कच्चा माल क्रय,उत्पादन विक्रय के लिऐ उचित मार्गदर्शन की आवयश्कता अब भी थी।

कहते है, जब आप ठान लेते है तो रास्ते खुद ब खुद आप से मिलने शुरू हो जाते है। किसी परिचित के माध्यम से शिवानी को संस्थान के विशय में जानकारी प्राप्त हुई। संस्थान से प्राप्त परामर्श पर उसने प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम के तहत चप्पल उत्पादन हेतु 8.50 लााख का ऋण लिया। संस्थन से प्रशिक्षण प्राप्त कर उद्यम के संचालन, प्रबन्घन की जाानकारी ली और उसे अपने उद्यम में अपनाया।

कोरोना काल की इस आपात स्थिति में भी शिवानी 8 लोगो की आजिविका का साधन बनी हुई है। वह कहती है आज हम बड़े स्तर पर चप्पल उत्पादन का कार्य करने में सफल हुए। जिसमें हमने अपने ग्रम की लडकियों और महिलाओं को भी रोजगार उपलब्ध करवाया, और आज हमारा चप्पल उत्पादन का कार्य बहुत अच्छे से चल रहा है और इसमें हम चप्पल, सैडिल, फैंसी चप्पल, लेडिज चप्पल, पीयु की चप्पल इत्यादि तैयार करके अच्छे दामों पर बाजार में भी विक्रय कर रहे हैं आज हम बहुत खुश है, और हमें यहां काम करके बहुत अच्छा लगता है।

बढ़ना ही जीवन है और जो हौसलें के साथ अपनी मजिंलो की तरफ बड रहे है हम हर उस पथिक के पथ के साथी है।

30. सपनों हुए सकार – उद्यम को मिला आकार

उद्यमी का नाम	फरहान अली
उद्यम का नाम	मतस्य पालन
उद्यम लागत	600000
उद्यम का स्थापित वर्ष	2020 –21
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	8.0 – 10.0 लाख
उद्यमी का पता	सहसपुर, देहरादून
कर्मचारियों की संख्या	04
उद्यम का प्रकार	मतस्य पालन

संसाधनों का अभाव कभी भी योग्यता पर भारी नही होता है। इसे चितार्थ कर फरहान ने न केवल स्वंम् स्वरोजगार की राह चुनी बंलाकि औरों के भी रोजगार के नये अवसर उत्पन्न किये।

सहसपुर,देहरादून के रहने वाले फरहान बचपन से ही एक होनहार छात्र थे। वह पढाई के अलावा अन्य विद्यालय गतिविधियों में हमेशा सक्रिय रहते।

विज्ञान संवर्ग से स्नातकोत्तर की शिक्षा ग्रहण करने के बाद उंन्होने कुछ समय तक नौकरी करने का फैसला किया। फरहान हमेशा से उद्यमी विचारों के थे और यही कारण था कि वह स्वंम् का उद्यम स्थापित करना चाहते थे पर परिवार की आर्थिक स्थिति इतनी मजबूत नही थी कि वह नौकरी छोडने का फैसला कर पाये। उद्यम के प्रति हमेशा जिज्ञासित रहने वाले फरहान आस पास की सभंवनाऔ को तलाशने का प्रयास करते रहतें थे।

कहते है शिदत से की गई कोशिश कभी बेकार नही जाती। एक रोज फरहान को संस्थान द्वारा आयोजित प्रशिक्षण

के विशय में पता चला मानो जिस राह की उसको तलाश थी वो उन्हे मिल गई हो। संस्थान से प्राप्त मार्गदर्शन से फरहान ने अपने आस पास की संभावनाऔ को तलाशने का काम शुरू कर दिया। अपनी शिक्षा,इच्छा और बजार मांग के अनुसार उन्होंने मतस्य पालन का कार्य प्रारम्भ किया।

अपने कुशल व्यवहार और गुणवत्ता के साथ जल्द ही उन्होंने अपने उद्यम को अच्छी स्तिथि में ला दिया।स्वस्थ्य आपदा के इस मुश्किल समय में भी फरहान कही परिवारों के आय के साधन है। वो कहते है यादि हम स्वंम् पर विश्वास करते है तो हर वो चीज पा सकते है जिसकी उम्मीद स्वंम् से करते है।

31. सौंदर्य संसार

उद्यमी का नाम	मीनू बाला
उद्यम का नाम	मीनू पार्लर
उद्यम लागत	20000
उद्यम का स्थापित वर्ष	2020–21
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	2.0 –2.5 लाख
उद्यमी का पता	मकान न0.–41, गुरू रविदास नगर, जालन्धर
कर्मचारियों की संख्या	02
उद्यम का प्रकार	सेवा का क्षेत्र

रूप सज्जा, श्रंगाार न केवल व्यक्तित्व को आकर्शक बनाती है अपितु स्वरोजगार एवं रोजगार का एक विस्तृत पटल भी है, इसी सम्भावना के सकार रूप दिया है जलान्धर की रहने वाली मीनू ने, निम्न आय वर्ग के परिवार से आने वाली मीनू आज अपनी आजिविका का साधन स्वंम् है।

अपने बारे में बताते हुऐ वो कहती है –मेरा नाम मीनू बाला है। मेरे पति का नाम प्रमोद कुमार है।काफी समय से अपने आप को आत्म निर्भर बनाने की सोच रही थी क्यों कि बचपन से ही मुझे अपना कुछ उद्यम लगाना था। मैं काफी जगह पर जा जा कर हार चुकी थी। परन्तु अचानक मुझे अपने शहर में राष्ट्रीय उद्यमिता विकास एवं लघु व्यवसाय विकास संस्थान(निसबड) द्वारा चलाए जा रहे उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम के बारे मे पता चला तथा मैं पूछताछ कर उक्त दिए गए पते पर गयी। वहाँ पर मुझे संस्थान के प्रतिनिधि मिले तथा उन्होने मुझे प्रशिक्षण कार्यक्रम के बारे में

बताया जहाँ जाकर मुझे ऐसा लगा की जैसे यहीं से मेरी मंजिल की शुरूवात है।

प्रशिक्षकों की बातों ने मुझे बहुत प्रभावित किया और मैंने उक्त उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षण लेना प्रारम्भ कर दिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में सबको आत्म निर्भर बनाने के गुण भी सिखाऐ गये। वहाँ पर हमें उद्यम स्थापना, विभागों से जुडी योजनाओं के बारे में भी बताया गया जिससे हमें काफी ज्ञान मिला। समय समय पर हमें प्रोत्साहित भी किया गया। जब मैं यहाँ पर आई तब मुझे यहाँ पर आकर बहुत अच्छा लगा। प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान मेरा आत्म विश्वास भी बढ़ता चला गया। धीरे धीरे मुझे लगा कि मेरे सपनों को पंख लग गये हों। यहाँ पर आने के बाद मैं जान पाई कि अगर मनुष्य को कुछ काम शुरू करना हो तो सबसे पहले खुद पर विश्वास करना बहुत जरूरी है। यहाँ पर मैडम(प्रशिक्षक) ने हमें बहुत महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करी जो कि मुझे पहले नहीं पता थी। प्रशिक्षण कार्यक्रम में हमें बताया गया कि हम अपने हुनर को अपनाकर किस तरह अपने जीवन में सफल बन सकते हैं।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में हमें ऑन लाइन के माध्यम से भी प्रशिक्षकों के विभिन्न सत्रों का लाभ प्राप्त हुआ। हमें क्षेत्रीय भ्रमण पर भी ले जाया गया जहाँ पर हमने बहुत सी बातें जानी जो कि एक उद्यमी के लिए बहुत आवश्यक हैं। हमें यह भी बताया गया कि उद्यम स्थापित करने के लिए बाजार सर्वेक्षण कितना महत्वपूर्ण है। उसी के अनुसार हमें कार्य करना चाहिए।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान हमें उद्यम में बैंकिंग सेवा से किस तरह की मदद मिल सकती है यह भी जानकारी हमें दी गयी। यह जानकारी देने के लिए बैंकिंग सेवा से जुड़े अधिकारी भी आए जिन्होने हमारा मार्गदर्शन किया और हमें काफी महत्वपूर्ण जानकारी दी। स्वरोजगार शुरू करने के लिए हमें किस ऋण आवेदन की प्रक्रिया के बारे में बताया। जो कि हमारे लिए बेहद फायदेमंद रहा।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में हमें सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाऔं के विशय में बताया कि किस तरह से हम इस योजना में आवेदन कर सकते हैं और किस तरह से हम इसका लाभ ले सकते हैं। इन सभी जानकारी से मुझे हर क्षेत्र में बहुत ज्यादा सहायता मिली और उस ही का परिणाम है कि आज मेरा अपना पार्लर है जिससे मैं अपने पैरों पर खड़ी हो पाई हूँ। मैं महीने का 4000 से 5000 रूपये तक कमा लेती हूँ जिस कारण मैं बहुत खुश हूँ। मुझे इस बात पर गर्व भी है कि मैं अपने परिवार की आर्थिकी को मजबूत कर रही हूँ और उनकी मदद कर रही हूँ।

32. श्रृंगार से उद्यम आधार

उद्यमी का नाम	सुषमा
उद्यम का नाम	श्रृगार पार्लर
उद्यम लागत	50000
उद्यम का स्थापित वर्ष	2020 –21
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	2.0 –2.5लाख
उद्यमी का पता	143, न्यू रविदास नगर, बस्ती दानिशमन्दा, जालन्धर
कर्मचारियों की संख्या	02
उद्यम का प्रकार	सेवा का क्षेत्र

श्रृंगार करना हर मनुश्य की प्रवृति है, विशेशकर महिलाओं के भीतर यह रचनात्मक गुण पुरूशों की अपेक्षा अधिक पाया जाता है। हम समाज के किसी भी आर्थिक वर्ग से सम्बन्धित हो पर यह प्रकृत गुण हमारे भीतर रहता है।आंतरिक सज्जा क साथ ब्राह्य रूप सज्जा केवल आकर्शण मात्र नही है, यह हमारे व्यक्तित्व निखार का एक पहलू भी है, इसी कारण रूप सज्जा आज एक व्यापक उद्योग के तौर पर पनप कर सुखद भविश्य के लिये आकर्शित करता नजर आता है।

दानिशमन्दा,जलन्धर की रहने वाली सुषमा ने भी रूप सज्जा को व्यवसायिक तौर पर अपनाकर न केवल अपनी आय सृजित करी, अपितु अन्य लोगों के आजीविका संवर्धन का माध्यम बनी।गरीब परिवार मे जन्मी सुषमा के पिता की आय दैनिक आय पर निर्भर थी। जिससे परिवार का गुजर बसर चलता था। अपनी इसी आय से उन्होंने अपने बच्चों की शिक्षा–दीक्षा और भरण पोशण किया।

अपनी कहनी अपनी जुबानी कहते हुऐ वो बताती है –मेरा नाम सुषमा है तथा मेरे पिता का नाम भीशन पाल है। मैं जालन्धर में रहती हूँ। मैं बचपन से ही बहुत जिज्ञासु प्रवृत्ति की थी,अपनी इसी प्रवृत्ति के कारण मुझे कार्य को सीखने का बहुत शौक था। यही कारण था कि मैं स्वतन्त्र भाव से कार्य करना चहती थी।

जीवन बढ़ता गया और उन्मीदें कम होती गयी। कहॉ से शुरूआत हो यही समझ में नही आ रहा था। लगातार प्रयासरत् रहने का ही कारण था कि मुझे किसी माध्यम से पता चला कि हमारे शहर में संस्थान (निसबड) द्वारा उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जाना है। उद्यमिता के बारे में कोई विशेष जानकारी न होने के कारण मैने दिए गये पते पर जाकर प्रशिक्षण कार्यक्रम से सम्बन्धित जानकारी ली। वहाँ पर मौजूद संस्थान के प्रतिनिधियों ने मुझे उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम के बारे में बताया जिससे मेरे मन में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होने लगा।

इसी ऊर्जा के साथ मैने उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिभाग करा। हमें विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों द्वारा भिन्न–भिन्न प्रकार की जानकारियाँ दी गयी जिसमें हमें बहुत सारी जानकारियाँ हासिल हुई। उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम में हमें स्वरोजगार स्थापना हेतु राज्य एवं भारत सरकार द्वारा चलायी जा रही विभिन्न योजनाओं के बारे में बताया गया जिसमें पी0एम0ई0जी0पी योजना में हम किस तरह ऋण हेतु आवेदन कर सकते है तथा योजना के अन्य लाभों के बारे में बताया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में बैंक अधिकारियों द्वारा हमें वित्तीय प्रबन्धन पर भी जानकारी दी गयी तथा हमें ऋण सम्बन्धी बहुत महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्रदान की गयी। समस्त विशेषज्ञों ने हमें समय समय पर बहुत अच्छी एवं महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्रदान करी जिससे मेरा मार्गदर्शन हुआ और मैं बहुत ही प्रोत्साहित हुई। हमें बाजार सर्वेक्षण के बारे में जानकारी दी गयी जिसमें हमें बाजार मूल्य, भाव के बारे में जानकारी हासिल हुई। हमारे प्रोत्साहन हेतु संस्थान के प्रतिनिधियों द्वारा एक सफल उद्यमी के साथ हमारा साक्षात्कार कराया जिससे हमारा मनोबल और बढ़ गया। अब मुझे लगने लगा था कि मेरा जीवन सफल तभी हो सकता है जब मैं प्रशिक्षण कार्यक्रम में सीखी गयी जानकारियों को अपने हुनर में शामिल करूँ और अपने जीवन में उतार पॉऊ।

उन सभी वक्ताओं का जिन्होने मुझे इस उद्यमिता प्रशिक्षण का महत्व बताया और इन्ही की वजह से मैंने अपना एक ब्यूटी पार्लर खोल पाने में सफल हो पाई हूँ, जिससे मुझे रू0 8000 से 10000 रू0 तक की आमदनी हो जाती है और अपने इस हुनर से मैं किसी पर बोझ न बनकर अपनी खुद की जरूरतें पुरी कर लेती हूँ, जिसके लिये मुझे पहले दुसरों पर निर्भर रहना पडता था।

33. विश्वास की डोर – उन्नति की ओर

उद्यमी का नाम	जमुना
उद्यम का नाम	जमुना नीटिंग उद्योग
उद्यम लागत	50000
उद्यम का स्थापित वर्ष	2020 –21
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	7.0 –8.0 लाख
उद्यमी का पता	थिरूथिराईपॉडी, तिरूवरूर, तमिलनाडु
कर्मचारियों की संख्या	03
उद्यम का प्रकार	निर्माण कार्य

भारत दुनिया का सबसे बडा लोकतंत्र होने के साथ ही तेजी से बडती हुई अर्थव्यावस्था भी है, जिस कारण दुनिया भर के विख्यात उत्पादक यह कारोबार करने के लिऐ लालायित रहते है। यही कारण है कि इसे अवसरों से परिपुर्ण धरती भी कहा गया है। कही संस्कृतियों और सभ्यताओं को खुद में समाहित इस महान देश का एक सच यह भी है कि यह मैला ढोने जैसी कुप्रथा एक लम्बे समय तक चलती रही, जिसनें समाज के वर्ग को विकास की गति से काफी पीछे रखा। आज इस कुप्रथा के अन्त के बाद भी यह तबका हो रहे मानवीय विकास में अन्यों की अपेक्षा पीछे ही है। किन्तु अपने कर्मबल से परिस्थितियों को पीछे छोड अपना भाग्य अपने हाथों लिखने वाले ही सही मायनों में उद्यमी है। यह कहनी एक ऐसी ही महिला की है, जिसनें हलातों का रोना रोने की बजाए संघर्शों की डोर से

अपने सपनों को बुन रही है।

तमिलनाडु के तिरूवरूर जिले की रहने वाली जमुना का जन्म तियचिलापल्ली जिले के नागंवरम गॉव में हुआ। जमुना का परिवार मैला ढोने का कार्य करता था, उस समय मैला ढोने का वैज्ञानिक तरीका अमल में नही लाया जाता था। भाई बहनों में सबसे बडी जमुना का बचपन संघर्शों में ही बीता। वह सुबह भाई बहनों का ख्याल रखती दिन में पिता के साथ मैला ढोने का काम और शाम को ईघन (खाना बनाने के लिऐ) के लिऐ लकडी चुगने का काम करती। 18 वर्श की आयु में जमुना का विवाह तिरूवरूर जिले के मुरगेशन के साथ हो गया, वह भी मैला ढोनेका कार्य करता था। समय के साथ मानवीय रूप से मैला ढोने का कार्य प्रतिबंधित हो गया पर रोजगार के लिऐ सफाई का कार्य ही किया जाता रहा। सरकारी और गैर सरकारी संस्थाऒं के माध्यम से इस वर्ग के उत्थान के लिऐ कही विकास कार्य चलाये गये। जहॉ जमुना ने संस्थान द्वारा अयोजित प्रशिक्षण में सिलाई बुनाई कार्य सीखा। सिलाई बुनाई के साथ साथ उसनें उद्यमिता को भी जाना। आज जमुना दरी बुनने का कार्य करती और उसके दोनों बच्चे स्कूल जाते है। अपने इस कार्य से वह महिने की 4500 से 5000 रू. तक की कमाई कर लेती है।

अपने काम के विशय में बताते हुऐ जमुना कहती है कि वह कभी स्कूल नही जा पाई इसका अफसोस तो रहेगा पर उसके बच्चे स्कूल जा कर पढ लिख रहे है इसकी खुशी है। वह बताती है कि वह दरी बुनने का कार्य करती है जो विक्रय के लिऐ उसके ही साथ प्रशिक्षण प्राप्त की हुई दो लडकियॉ जो थोडा पढी लिखी है,वह निकट के बजार में जाती है। वह भी इससे 3500रू. महिना कमा लेती है।

जमुना कहती है समय बदलने के लिये आसमान की ओर देख कर प्रभु से मदद मॉगने से अच्छा है कि स्ंवय् को हुनरमंद बनाकर काबिल बनो और दोनों हाथ जोडकर प्रभु का धन्यावाद करो।

34. परिधान से मिली पहचान

उद्यमी का नाम	कंचन
उद्यम का नाम	कंचन बुटीक
उद्यम लागत	20000
उद्यम का स्थापित वर्ष	2020 –21
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	3.0 – 3.5 लाख
उद्यमी का पता	72, न्यू रसीला नगर, बस्ती दानिशमन्दा, जालन्धर
कर्मचारियों की संख्या	02
उद्यम का प्रकार	सेवा

मेरा नाम कंचन है तथा मेरे पति का नाम सुनील कुमार है। मैं जालन्धर में रहती हूँ। कंचन शुरू से ही बहुत होनहार थी। इस ही प्रवृत्ति के कारण कंचन को कार्य सीखने का बहुत शौक था। बचपन से ही मेहनती एवं खुशमिज़ाजी स्वभाव होने के कारण कंचन हर कार्य को बड़े ही सफाई से करती थी। उसको पता था कि जीवन में सफलता हासिल करने के लिए बहुत सारी बातें जरूरी हैं लेकिन सबसे महत्वपूर्ण होता है आत्मविश्वास। जीवन में किसी मुकाम पर पहुँच चुके व्यक्तियों और कामयाब लोगों में हमको यह काबिलियत दिखाई देती है। कंचन भी उन्ही में से एक थी जो अपने जीवन में कुछ बड़ा मुकाम हासिल करना चाहती थी परन्तु कोई मार्गदर्शक न होने के कारण वह अपनी राह नहीं चुन पा रही थी।

अपनी बात कहते हुए कंचन कहती है कि एक दिन जब वह अपने भविष्य को लेकर चिंतित थी तभी किसी माध्यम से पता चला कि हमारे शहर में ही राष्ट्रीय उद्यमिता विकास एवं लघु व्यवसाय विकास संस्थान (निसबड) द्वारा

उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। उद्यमिता के बारे में मैने थोड़ा थोड़ा ही सुना था परन्तु इसकी कोई विशेष जानकारी नहीं थी। मैनें विज्ञापन में बताए गये पते पर जाकर उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम के बारे में जानना चाहा। मैने वहाँ पर मौजूद संस्थान के प्रतिनिधियों से उद्यमिता की जानकारी ली। फिर हमें साक्षात्कार के लिए भी बुलाया गया तथा चयन होने पर हमारा प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रारम्भ हो गया।

इसी ऊर्जा के साथ मैने उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिभाग करा। हमें विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों द्वारा भिन्न–भिन्न प्रकार की जानकारियाँ दी गयी जिसमें हमें बहुत सारी जानकारियाँ हासिल हुई। उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम में हमें स्वरोजगार स्थापना हेतु राज्य एवं भारत सरकार द्वारा चलायी जा रही विभिन्न योजनाओं के बारे में बताया गया जिसमें पी0एम0ई0जी0पी योजना अहम है। हमें मुद्रा लोन के बारे में भी बताया गया। इन योजनाओं में हम किस तरह ऋण हेतु आवेदन कर सकते है तथा योजना के अन्य लाभों के बारे में बताया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में बैंक अधिकारियों द्वारा हमें वित्तीय प्रबन्धन पर भी जानकारी दी गयी तथा हमें ऋण सम्बन्धी बहुत महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्रदान की गयी। समस्त विशेषज्ञों ने हमें समय समय पर बहुत अच्छी एवं महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्रदान करी जिससे मेरा मार्गदर्शन हुआ और मैं बहुत ही प्रोत्साहित हुई। हमें बाजार सर्वेक्षण के बारे में जानकारी दी गयी जिसमें हमें बाजार मूल्य, भाव के बारे में जानकारी हासिल हुई।

हमारे प्रोत्साहन हेतु संस्थान के प्रतिनिधियों द्वारा एक सफल उद्यमी के साथ हमारा साक्षात्कार कराया जिससे हमारा मनोबल और बढ़ गया। अब मुझे लगने लगा था कि मेरा जीवन सफल तभी हो सकता है जब मैं प्रशिक्षण कार्यक्रम में सीखी गयी जानकारियों को अपने हुनर में शामिल करूँ और अपने जीवन में उतार सकूँ क्यों कि सीखी गयी जानकारी अगर हम अपने जीवन में न उतारें तो सभी जानकारियाँ हमें वह लाभ नहीं दे पाऐंगी। इस ही सोच के साथ मैंने अपना स्वरोजगार स्थापित करने की सोची।

मैं अगर अपने अतीत और आज की तुलना करती हूँ तो मुझे बहुत बड़ा अन्तर दिखता है। मैं दिल से उन सभी वक्ताओं/विशेषज्ञों का धन्यवाद देना चाहूँगी जिन्होने मुझे इस उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का महत्व बताया और इन्ही की वजह से मैंने अपना सिलाई केन्द्र खोला जिससे मौजूदा समय में मुझे रू0 5000 तक की आमदनी हो जाती है और अपने इस हुनर से अपना खुद का खर्चा निकाल लेती हूँ तथा किसी पर बोझ न बन, आत्म निर्भर बन चुकी हूँ। निसबड संस्थान के सहयोग के लिए मैं उन सभी का आभार प्रकट करती हूँ जिन्होने हमें अपनी पहचान कराई और हमारे हुनर को बाहर निकालकर हमें एक नई पहचान दिलाई।

35. पिंकी– सशक्ता से सम्रद्धि

उद्यमी का नाम	पिंकी
उद्यम का नाम	पिंकी पार्लर
उद्यम लागत	25000
उद्यम का स्थापित वर्ष	2020 –21
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	1.4 –1.0 लाख
उद्यमी का पता	41/3, रविदास नगर बस्ती, दानिशमन्दा, जालन्धर
कर्मचारियों की संख्या	02
उद्यम का प्रकार	सेवा का क्षेत्र

मेरा नाम पिंकी है तथा मेरे पिता का नाम श्री रमेश लाल है। बचपन से ही संघर्ष पूर्ण जीवन बिताने वाले मेरे परिवार में सिर्फ मेरे पिता ही काम करते हैं तथा उन्की ही आमदनी से हमारा घर का खर्च मुश्किल से चलता है और मेरी माता जी एक गृहणी हैं। विगत दो वर्षों से लॉकडाउन के कारण पिता जी का काम भी बंद हो गया है और परिवार का भरण पोषण एवं गुजारा भत्ता भी नहीं हो पा रहा है।

हमारा परिवार बहुत मुश्किल हालातों से गुजर रहा है, मैं भी अपने परिवार की इस स्थिति को देखते हुए बहुत परेशान होती हूँ परन्तु कुछ कर नहीं पाती बस मन मार कर रह जाती हूँ। मैं चाहती हूँ कि इस मुश्किल घड़ी में अपने परिवार का हाथ बटाऊँ परन्तु पशिक्षण एवं ज्ञान के अभाव में आगे नहीं बढ़ पा रही हूँ।

एक दिन अचानक मुझे सूत्रों से पता चला कि आर्य समाज मंदिर में राष्ट्रीय उद्यमिता विकास एवं लघु व्यवसाय विकास संस्थान (निसबड) संस्थान द्वारा उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। मैं वहाँ पर गयी और वहाँ पर मौजूद संस्थान के प्रतिनिधियों से मिली और उन्होने मुझे उद्यमिता विकास कार्यक्रम के बारे में बताया जिससे मेरा मन भी वहाँ प्रशिक्षण लेने का हुआ।

उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमों में बहुत सारे विशेषज्ञों द्वारा विभिन्न प्रकार की जानकारियाँ दी गयी जिसमें हमें बहुत सारी जानकारियाँ हासिल हुई। उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम में हमें स्वरोजगार हेतु राज्य एवं भारत सरकार द्वारा चलायी जा रही विभिन्न योजनाओं के बारे में बताया गया जिसमें पी0एम0ई0जी0पी योजना में हम किस तरह ऋण हेतु आवेदन कर सकते है तथा योजना के अन्य लाभों के बारे में बताया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में बैंक अधिकारियों द्वारा भी हमें ऋण सम्बन्धी बहुत महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्रदान की गयी। समस्त प्रवक्ताओं ने हमें समय समय पर बहुत अच्छी एवं महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्रदान करी जिससे मेरा मार्गदर्शन हुआ और मैं बहुत ही प्रोत्साहित हुई। मुझे लगा कि अब मेरा जीवन सफल बन सकता है।

इन सभी प्रवक्ताओं एवं प्रशिक्षण का ही योगदान है जो आज मैने अपना एक पार्लर खोल रखा है जिससे मुझे रू0 5000 तक की आमदनी हो जाती है। जिससे मैं अपना खुद का खर्चा निकाल लेती हूँ तथा आत्म निर्भर बन चुकी हूँ। मैं धन्यवाद देती हूँ संस्थान एवं उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का जिन्होने मुझे आत्म निर्भर बनाया और आज मेरी जिंदगी बदल गयी।

36. कर्म ही पूजा

उद्यमी का नाम	पूजा
उद्यम का नाम	पूजा ब्यूटी पार्लर
उद्यम लागत	15000
उद्यम का स्थापित वर्ष	2019–20
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	01–1.5 लाख
उद्यमी का पता	46/47, न्यू रसीला नगर, बस्ती दानिशमंद, जालंधर
कर्मचारियों की संख्या	02
उद्यम का प्रकार	सेवा का क्षेत्र

मेरा नाम पूजा है तथा मेरे पिता का नाम अजय कुमार है। मैं जालन्धर में रहती हूँ। मेरा बचपन जालंधर में ही बीता। मेरी शिक्षा दीक्षा जालंधर में हुई। मेरा जन्म एक सामान्य परिवार में हुआ। सामान्य परिवार में होने के कारण जीवन काफी संघर्षपूण रहा। मैं कई बार अपने परिवार की आर्थिकी को बढ़ाना चाहती थी। जिससे परिवार की आय बढ़ सके और जीवन स्तर में सुधार हो सके। पढ़ाई के बाद मन नौकरी करने का हुआ परन्तु नौकरी में कई सारी औपचारिकताऐं होने के नाते कई बार मन हार जाता था। मन कई बार अशांत होता, ऐसा लगता जैसे जीवन निरर्थक होता जा रहा है।

तभी अचानक मुझे किसी मित्र के माध्यम से पता चला कि हमारे शहर में ही राष्ट्रीय उद्यमिता विकास एवं लघु व्यवसाय विकास संस्थान (निसबड) संस्थान द्वारा उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया

जा रहा है। मुझे उद्यमिता के बारे में कोई विशेष जानकारी नहीं थी। पर जहाँ चाह वहाँ राह को सार्थक करते हुए मैं प्रशिक्षण केन्द्र पर गयी और वहाँ पर मौजूद संस्थान/ प्रशिक्षण केन्द्र के प्रतिनिधियों एवं कर्मचारियों से मिली और उन्होने मुझे उद्यमिता विकास कार्यक्रम के बारे में बताया जिससे मेरा मन भी वहाँ प्रशिक्षण लेने का हुआ। प्रशिक्षण लेने से पूर्व ही मेरे मन में कई तरह की जिज्ञासाओं ने जन्म लेना शुरू कर दिया था मानों जैसा मेरे जीवन में आशा की एक नई किरण आने वाली है। देखते ही देखते मैने उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रवेश ले लिया और मेरा प्रशिक्षण शुरू हो गया।

संस्थान द्वारा उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमों में हमें विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों द्वारा भिन्न–भिन्न प्रकार की जानकारियाँ दी गयी जिसमें हमें बहुत सारी जानकारियाँ हासिल हुई। उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम में हमें स्वरोजगार हेतु राज्य एवं भारत सरकार द्वारा चलायी जा रही विभिन्न योजनाओं के बारे में बताया गया जिसमें पी0एम0ई0जी0पी योजना में हम किस तरह ऋण हेतु आवेदन कर सकते है तथा योजना के अन्य लाभों के बारे में बताया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में बैंक अधिकारियों द्वारा हमें वित्तीय प्रबन्धन पर भी जानकारी दी गयी तथा हमें ऋण सम्बन्धी बहुत महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्रदान की गयी। समस्त विशेषज्ञों ने हमें समय समय पर बहुत अच्छी एवं महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्रदान करी जिससे मेरा मार्गदर्शन हुआ और मैं बहुत ही प्रोत्साहित हुई। हमें बाजारी ज्ञान भी दिया गया तथा क्षेत्रीय भ्रमण भी कराया गया। जिससे हमें बहुत ज्यादा प्रोत्साहन मिला और ऐसा लगा जैसे मुझे अपने जीवन का लक्ष्य मिल गया हो। प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान हमें प्रोजेक्ट रिपोर्ट बनाने की जानकारी भी प्रदान की गयी जो कि मेरे लिए आगे चलकर काफी लाभप्रद रही।

अब मुझे लगने लगा था कि मेरा जीवन सफल तभी हो सकता है जब मैं प्रशिक्षण कार्यक्रम में सीखी गयी जानकारियों को अपने हुनर में शामिल करूँ और अपने कार्यक्षेत्र में उतार सकूँ जिससे प्रशिक्षण का लाभ भी मेरे कारोबार को मिल सके।

मैं धन्यवाद करती हूँ उन सभी प्रवक्ताओं का जिन्होने मुझे इस उद्यमिता प्रशिक्षण का महत्व बताया और इसकी बारिकियों से हमें अवगत कराया। इन्ही की वजह से मैंने अपना एक ब्यूटी पार्लर खोला है। जिससे मुझे रू0 5000 तक की आमदनी हो जाती है जिससे मैं अपना खुद का खर्चा निकाल लेती हूँ तथा किसी पर बोझ न बन, आत्म निर्भर बन चुकी हूँ। आज मैं धन्यवाद देती हूँ संस्थान एवं उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का जिन्होने मुझे आत्म निर्भर बनाया । किसी ने सच ही कहा है कि अगर मन में दृढ़ इच्छा शक्ति हो तो कोई काम नामुमकिन नहीं है।

37. उद्यम से मिली दिशा

उद्यमी का नाम	सिमरजीत कौर
उद्यम का नाम	किराना स्टोर
उद्यम लागत	70000
उद्यम का स्थापित वर्ष	2020–21
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	4.0 – 5.0 लाख
उद्यमी का पता	09, रसीला नगर, बस्ती दानिशमन्दा, जालन्धर
कर्मचारियों की संख्या	01
उद्यम का प्रकार	सेवा का क्षेत्र

मेरा नाम सिमरजीत कौर है तथा मेरे पति का नाम इन्द्रजीत सिंह है। मैं जालन्धर में रहती हूँ। बचपन से ही हमने बहुत संघर्ष किया है तथा कोरोना काल में लॉकडाउन होने के कारण हमारे कारोबार में बहुत फक्र पड़ा है। बचपन से ही मेहनती स्वभाव होने के कारण सिमरजीत कुछ अपना व्यवसाय करना चाहती थी।

एक दिन अचानक मुझे किसी माध्यम से पता चला कि हमारे शहर में ही राष्ट्रीय उद्यमिता विकास एवं लघु व्यवसाय विकास संस्थान (निसबड) संस्थान द्वारा उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। मुझे उद्यमिता के बारे में कोई विशेष जानकारी नहीं थी। मैं वहाँ पर गयी और वहाँ पर मौजूद संस्थान/ प्रशिक्षण केन्द्र के प्रतिनिधियों एवं कर्मचारियों से मिली और उन्होने मुझे उद्यमिता विकास कार्यक्रम के बारे में बताया जिससे मेरा मन भी वहाँ प्रशिक्षण लेने का हुआ।

उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमों में हमें विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों द्वारा भिन्न–भिन्न प्रकार की जानकारियाँ दी गयी जिसमें हमें बहुत सारी जानकारियाँ हासिल हुई। उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम में हमें स्वरोजगार हेतु राज्य एवं भारत सरकार द्वारा चलायी जा रही विभिन्न योजनाओं के बारे में बताया गया जिसमें पी0एम0ई0जी0पी योजना में हम किस तरह ऋण हेतु आवेदन कर सकते है तथा योजना के अन्य लाभों के बारे में बताया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में बैंक अधिकारियों द्वारा हमें वित्तीय प्रबन्धन पर भी जानकारी दी गयी तथा हमें ऋण सम्बन्धी बहुत महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्रदान की गयी। समस्त विशेषज्ञों ने हमें समय समय पर बहुत अच्छी एवं महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्रदान करी जिससे मेरा मार्गदर्शन हुआ और मैं बहुत ही प्रोत्साहित हुई। अब मुझे लगने लगा था कि मेरा जीवन सफल तभी हो सकता है जब मैं प्रशिक्षण कार्यक्रम में सीखी गयी जानकारियों को अपने हुनर में शामिल करूँ।

आज मैं धन्यवाद करती हूँ उन सभी प्रवक्ताओं का जिन्होने मुझे इस उद्यमिता प्रशिक्षण का महत्व बताया और इन्ही की वजह से मैंने अपना एक करयाना स्टोर खोला है। जिससे मुझे रू0 5000 तक की आमदनी हो जाती है जिससे मैं अपना खुद का खर्चा निकाल लेती हूँ तथा किसी पर बोझ न बन, आत्म निर्भर बन चुकी हूँ। मैं धन्यवाद देती हूँ संस्थान एवं उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का जिन्होने मुझे आत्म निर्भर बनाया ।

38. सिलाई से मिली पहचान

उद्यमी का नाम	सुनिता
उद्यम का नाम	सुनिता सिलाई सेन्टर
उद्यम लागत	18000
उद्यम का स्थापित वर्ष	2020 –21
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	1.5–2.0 लाख
उद्यमी का पता	मकान न0– 1970, भारगों कैंप, जालन्धर
कर्मचारियों की संख्या	02
उद्यम का प्रकार	सेवा का क्षेत्र

मेरा नाम सुनिता है तथा मेरे पति का नाम राकेश कुमार है। मैं जालन्धर में रहती हूँ। मुझे सिलाई, कढ़ाई का बहुत शौक है। । मेरा जन्म एक सामान्य परिवार में हुआ। सामान्य परिवार से होने के कारण जीवन काफी संघर्षपूण रहा। कमाई का कोई खास साधन नहीं था। बचपन से लेकर युवा अवस्था तक परिवार को काफी आर्थिक तंगी से गुजरना पड़ा। यह सब देख मन में काफी पीड़ा होती थी। घर का गुजारा बहुत ही मुश्किल से होता था। मैं कई बार अपने परिवार की आर्थिकी को बढ़ाना चाहती थी। जिससे परिवार की आय बढ़ सके और जीवन स्तर में सुधार हो सके।

जैसे जैसे बड़ी हुई घरवालों को मेरी शादी की चिन्ता भी सताने लगी जैसा कि हर परिवार वालों को होती है। शादी के बाद ससुराल भी सामान्य परिवार ही मिला। मैं वहाँ पर भी अपने परिवार का हाथ बटाना चाहती थी परन्तु कुछ समझ नहीं आ रहा था कि किस तरह से अपनी आर्थिक स्थिति को बेहतर करूँ। तभी

अचानक मुझे अपने किसी मित्र के माध्यम से पता चला कि हमारे शहर में ही राष्ट्रीय उद्यमिता विकास एवं लघु व्यवसाय विकास संस्थान (निसबड) संस्थान द्वारा आयोजित एवं राष्ट्रीय बैकवर्ड क्लास एवं फाइनेन्स डेवलपमेन्ट कॉर्परेशन (एनबीसीएफडीसी) द्वारा प्रायोजित उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। मुझे उद्यमिता से सम्बन्धित प्रशिक्षण कार्यक्रम का अनुभव नहीं था, पर जहाँ चाह वहाँ राह को सार्थक करते हुए मैं प्रशिक्षण केन्द्र पर गयी और वहाँ पर मौजूद संस्थान/ प्रशिक्षण केन्द्र के प्रतिनिधियों एवं कर्मचारियों से मिली और उन्होने मुझे उद्यमिता विकास कार्यक्रम के बारे में बताया जिससे मेरा प्रोत्साहन बढ़ा और मेरा मन भी वहाँ प्रशिक्षण लेने का हुआ। प्रशिक्षण लेने से पूर्व ही मेरे मन में कई तरह की जिज्ञासाओं ने जन्म लेना शुरू कर दिया था मानों जैसा मेरे जीवन में आशा की एक नई किरण आने वाली है।

संस्थान द्वारा उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमों में हमें विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों द्वारा भिन्न–भिन्न प्रकार की जानकारियाँ दी गयी जिसमें हमें बहुत सारी जानकारियाँ हासिल हुई। उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम में हमें स्वरोजगार हेतु राज्य एवं भारत सरकार द्वारा चलायी जा रही विभिन्न योजनाओं के बारे में बताया गया जिसमें पी0एम0ई0जी0पी योजना में हम किस तरह ऋण हेतु आवेदन कर सकते है तथा योजना के अन्य लाभों के बारे में बताया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में बैंक अधिकारियों द्वारा हमें वित्तीय प्रबन्धन पर भी जानकारी दी गयी तथा हमें ऋण सम्बन्धी बहुत महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्रदान की गयी। समस्त विशेषज्ञों ने हमें समय समय पर बहुत अच्छी एवं महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्रदान करी जिससे मेरा मार्गदर्शन हुआ और मैं बहुत ही प्रोत्साहित हुई। हमें बाजारी ज्ञान भी दिया गया तथा क्षेत्रीय भ्रमण भी कराया गया। जिससे हमें बहुत ज्यादा प्रोत्साहन मिला और ऐसा लगा जैसे मुझे अपने जीवन का लक्ष्य मिल गया हो। प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान हमें प्रोजेक्ट रिपोर्ट बनाने की जानकारी भी प्रदान की गयी जो कि मेरे लिए आगे चलकर काफी लाभप्रद रही। हमें यह भी सिखाया गया कि अपना स्वरोजगार शुरू करने से पहले हमें किन किन बातों का ध्यान रखना चाहिए तथा कौन कौन सी चीजें हमारे कार्य से सम्बन्धित हो सकती हैं।

अपना उद्यम लगाने के बाद हम किस तरह से अपने उद्यम का उद्यम/आधार रजिस्ट्रेशन कर सकते हैं जिससे हमारे व्यवसाय को राष्ट्रीय स्तर का बाजार मिल सके और हमारे उत्पाद बाजार देश विदेश में भी बिक सकें। जो कि हमारे लिए एक नया अनुभव था। बहुत सारी नई उम्मीद के साथ मैने अपने शौक को अपने जीवन स्तर के सुधार का माध्यम बनाया।

आज मुझे सोचकर बहुत ही खुशी होती है और मैं उन सभी प्रवक्ताओं का आभार प्रकट करती हूँ जिन्होने मुझे इस उद्यमिता प्रशिक्षण का महत्व बताया और इसकी बारिकियों से हमें अवगत कराया। जिस कारण मैंने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम को प्राथमिकता के आधार पर पूर्ण करा। इन्ही की वजह से मैंने अपना एक सिलाई सेन्टर खोला है। इस कार्य के लिए निसबड की ओर से हमें पूरा सहयोग दिया गया और जिनके सहयोग से मैंने यह उपलब्धि हासिल

करी। आज मैं मेहनत करके अपने पैरों पर खड़ी हो चुकी हूँ। इस सिलाई सेन्टर से पहले मुझे रू0 3000 से 4000 तक की आमदनी हो जाती थी परन्तु अब मुझे रू0 6000 तक की आमदनी हो जाती है जिससे मैं अपना खुद का खर्चा निकाल लेती हूँ तथा किसी पर बोझ न बन, आत्म निर्भर बन चुकी हूँ। मैं अपने साथ एक कर्मचारी और रखने की सोच रही हूँ। मैं धन्यवाद देती हूँ निसबड संस्थान एवं उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का जिन्होने मुझे आत्म निर्भर बनाया और मुझे अपने पैरों पर खड़ा किया । किसी ने सच ही कहा है कि अगर हमें सही मार्गदर्शन मिले और और हमारा लक्ष्य सही हो तो हम अपने लक्ष्य तक पहुँच सकते हैं।

39. सिलते कपडें बुनते सपने

उद्यमी का नाम	त्रिशला
उद्यम का नाम	त्रिशला सिलाई केन्द्र
उद्यम लागत	30000रू0
उद्यम का स्थापित वर्ष	2019
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	1.0 –1.2 लाख
उद्यमी का पता	**106,** न्यू रसीला नगर, बस्ती दानिशमन्दा, जालन्धर
कर्मचारियों की संख्या	01
उद्यम का प्रकार	

मेरा नाम त्रिशला है तथा मेरे पति का नाम अशोक कुमार है। मैं जालन्धर में रहती हूँ। मुझे सिलाई, कढ़ाई का बहुत शौक है। मेरा जन्म एक सामान्य परिवार में हुआ। सामान्य परिवार से होने के कारण जीवन काफी संघर्षपूण रहा। कमाई का कोई खास साधन नहीं था। हमने बचपन से ही एक कहावत सुनी थी कि मनुष्य के पास जितनी चादर हो उतने ही पैर उसको फैलाने चाहिए। उस ही कहावत को चरितार्थ करते हुए हमने बचपन से ही संघर्ष किया। सीमित संसाधन होने के बावजूद शुरूआत में मैने बहुत संघर्ष किया।

जैसा कि कबीर दास जी ने भी कहा है–

जिन खोया तिन पाइया, गहरे पानी पैठ,
मैं बपुरा बूढ़न डरा, रहा किनारे बैठ।

अर्थात जो लोग प्रयत्न करते हैं, वे कुछ ना कुछ वैसा पा ही लेते हैं, जैसा कोई गोताखोर पानी में उतर जाता है और कुछ न कुछ लेकर ही आता है। उनमें से कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो डूबने के डर से किनारे पर ही बैठे रहते हैं और कुछ नहीं कर पाते।

यह पंक्तियाँ मेरे लिए बहुत ही प्रेरणादायक साबित हुई जिसने मेरा जीवन ही बदल दिया। जैसे जैसे बड़ी हुई घरवालों को मेरी शादी की चिन्ता भी सताने लगी जैसा कि हर परिवार वालों को होती है। शादी के बाद ससुराल में सब कुछ नया नया था। घर, परिवार एवं वहाँ का माहौल को देखकर. शुरू शुरू में मुझे वहाँ के माहौल में ढलना मुश्किल सा लग रहा था। लेकिन कोशिशों के बाद मैं वहाँ एडजस्ट हो गयी। मैं वहाँ पर भी अपने परिवार का हाथ बटाँना चाहती थी परन्तु कुछ समझ नहीं आ रहा था कि किस तरह से अपनी राह तय करूँ। तभी अचानक मुझे अपने किसी मित्र के माध्यम से पता चला कि हमारे शहर में ही राष्ट्रीय उद्यमिता विकास एवं लघु व्यवसाय विकास संस्थान (निसबड) संस्थान द्वारा उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। मुझे उद्यमिता से सम्बन्धित प्रशिक्षण कार्यक्रम का अनुभव नहीं था, पर जहाँ चाह वहाँ राह को सार्थक करते हुए मैं प्रशिक्षण केन्द्र पर गयी और वहाँ पर मौजूद संस्थान/ प्रशिक्षण केन्द्र के प्रतिनिधियों एवं कर्मचारियों से मिली और उन्होने मुझे उद्यमिता विकास कार्यक्रम के बारे में बताया जिससे मेरा प्रोत्साहन बढ़ा और मेरा मन भी वहाँ प्रशिक्षण लेने का हुआ। प्रशिक्षण लेने से पूर्व ही मेरे मन में कई तरह की जिज्ञासाओं ने जन्म लेना शुरू कर दिया था मानों जैसा मेरे जीवन में आशा की एक नई किरण आने वाली है। संस्थान द्वारा आयोजित 15 दिवसीय उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमों में हमें विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों द्वारा भिन्न–भिन्न प्रकार की जानकारियाँ दी गयी जिसमें हमें बहुत सारी जानकारियाँ हासिल हुई। उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम में हमें स्वरोजगार हेतु राज्य एवं भारत सरकार द्वारा चलायी जा रही विभिन्न योजनाओं के बारे में बताया गया जिसमें पी0एम0ई0जी0पी योजना में हम किस तरह ऋण हेतु आवेदन कर सकते है तथा योजना के अन्य लाभों के बारे में बताया गया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में बैंक अधिकारियों द्वारा हमें वित्तीय प्रबन्धन पर भी जानकारी दी गयी तथा हमें ऋण सम्बन्धी बहुत महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्रदान की गयी। समस्त विशेषज्ञों ने हमें समय समय पर बहुत अच्छी एवं महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्रदान करी जिससे मेरा मार्गदर्शन हुआ और मैं बहुत ही प्रोत्साहित हुई। हमें बाजार ज्ञान भी दिया गया तथा क्षेत्रीय भ्रमण भी कराया गया। जिससे हमें बहुत ज्यादा प्रोत्साहन मिला और ऐसा लगा जैसे मुझे अपने जीवन का लक्ष्य मिल गया हो। प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान हमें प्रोजेक्ट रिपोर्ट बनाने की जानकारी भी प्रदान की गयी जो कि मेरे लिए आगे चलकर काफी लाभप्रद रही। हमें यह भी सिखाया गया कि अपना स्वरोजगार शुरू करने से पहले हमें किन किन बातों का ध्यान रखना चाहिए तथा कौन कौन सी चीजें हमारे कार्य से सम्बन्धित हो सकती हैं।

समय समय पर मुझे अपने गुरूओं का आर्शीवाद और उनका मार्गदर्शन मिलता रहा जिस कारण मैं अपना लक्ष्य तय कर पाई और मैं अपनी राह चुन पाई। मैं उन सभी प्रवक्ताओं का आभार प्रकट करती हूँ जिन्होने मुझे इस उद्यमिता

प्रशिक्षण का महत्व बताया और इसकी बारिकियों से हमें अवगत कराया। मैने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम को प्राथमिकता के आधार पर पूर्ण करा। इन्ही की वजह से मैंने अपना एक सिलाई सेन्टर खोला है। इस कार्य के लिए निसबड की ओर से हमें पूरा सहयोग दिया गया और जिनके सहयोग से मैंने यह उपलब्धि हासिल करी।

आज मैं मेहनत करके अपने पैरों पर खड़ी हो चुकी हूँ। इस सिलाई सेन्टर से पहले मुझे रू0 5000 से 6000 तक की आमदनी हो जाती थी,अब मुझे रू0 5000 तक की आमदनी हो जाती है जिससे मैं अपना खुद का खर्चा निकाल लेती हूँ तथा किसी पर बोझ न बन, आत्म निर्भर बन चुकी हूँ। मैं अपने साथ एक कर्मचारी और रखने की सोच रही हूँ। मैं धन्यवाद देती हूँ निसबड संस्थान एवं उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का जिन्होने मुझे आत्म निर्भर बनाया और मुझे अपने पैरों पर खड़ा किया । किसी ने सच ही कहा है कि अगर हमें सही मार्गदर्शन मिले और और हमारा लक्ष्य सही हो तो हम अपने लक्ष्य तक पहुँच सकते हैं।

यह त्रिशला की मेहनत का फल ही है जिसने आज उसको जीवन के इस स्थान पर पहुँचाया और वह खुद अन्य लोगों के लिए भी प्रेरणादायक बन चुकी है।

40. आहनी

उद्यमी का नाम	गनधाम सुनिथा
उद्यम का नाम	आहनी बुटिक सेन्टर
उद्यम लागत	1 लाख
उद्यम का स्थापित वर्ष	मार्च 2020
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	2.0 –2.5 लाख
उद्यमी का पता	यूनिवर्सिटी डब्बल, पोशामकोंडा रोड, वारंगल
कर्मचारियों की संख्या	02 महिला कर्मचारी
उद्यम का प्रकार	सर्विस

आन्ही बुटीक सेन्टर– सपने हुये हकीकत

सुनीथा एक 28 वर्शीय युवती है जो ऐसे समुदाय से तालुक रखती है जो आज हाशिये पर पहुँच चुका है। बचपन से ही सुनीथा को सिलाई एवं कढ़ाई का बहुत शौक था और वह शुरू से ही अपना बुटीक खोलना चाहती थी । परन्तु आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण उसने घर से ही सिलाई सीखी।

कुछ समय पश्चात सुनीथा परिवार सहित वारंगल,तेलंगाना चली गई और उसने अपने आप को जे0एस0एस0 द्वारा चलाऐ जा रहे तीन माह के प्रशिक्षण कार्यक्रम में पंजीकृत कराया। वह शुरू से ही कुछ अपना काम करना चाहती थी और जैसे ही उसे जे0एस0एस0 द्वारा चलाई जा रही इस

योजना के बारे में पता चला उसे लगा कि अब उसको मौका मिल गया है अपने सपनों को पंख लगाने का और उसने उस 18 घंटे की उद्यमिता विकास कार्यक्रम में प्रतिभाग किया। उसके पास कौशल था परन्तु जो उसके पास नहीं था वह यह ज्ञान था कि किस प्रकार सरकार हमारे उद्यम को लगाने में आर्थिक सहायता प्रदान कर सकती है। किस तरह हम ऋण के लिऐ आवेदन कर सकते हैं। यह सब बातों की जानकारी उसको उद्यमिता विकास कार्यक्रम में मिली और साथ ही साथ ग्राहकों को हम कैसे बेहतर सुविधा दे सकते हैं।

उसने इन प्रशिक्षण के दिनों में यह जाना कि हम किस तरह से अपने उद्यम को लगा सकते हैं और अपने काम को कैसे आगे बढ़ा सकते हैं। और इस काम में पी0एम0 युवा के गुरूजनों ने उसकी काफी मदद करी। जिससे उसका मनोबल बढ़ा और उसने अपने घर के बगल में एक किराये की दुकान ली और और मात्र 01 लाख रूपये लगाकर कच्चा माल एवं सिलाई मशीन आदि खरीदी।

आहनी बुटीक में महिलाओं एवं बच्चों के कपड़ों को सिलती है जैसे सूट, फ्रॉक आदि। उसमें उसने ग्राहकों की संख्या बढ़ाने के लिये साड़ी बेचने का काम भी शुरू कर दिया है जिससे उसकी आय बढ़ सके। उसने चिट फंड से लोन लेकर भी सिलाई मशीन खरीदी जिसकी किस्तें वह धीरे धीरे चुका रही हैं।

कोविड–19 महामारी से पूर्व उसकी आय लगभग रूपये 15000 प्रति महीना थी परन्तु लॉकडाउन के कारण उसकी काम एवं उसकी आय में थोड़ी कमी आई जिससे वह न तो अपना कच्चा माल मंगा पा रही है जिससे उसको अपनी दुकान का किराया भरना भी मुश्किल हो रहा है। उसे उम्मीद है कि एक बार जब स्थिति सामान्य होगी तो वह फिर से उसका काम सुचारू रूप से चलेगा जिसके अन्तर्गत वह साड़ी अन्य शहरों से मंगाएगी और फिर अन्य लोगों को भी अपने यहाँ रोजगार दे पाएगी।

इस दौरान उसने अपने प्रशिक्षकों द्वारा अपने उद्यम का उद्यम रजिस्ट्रेशन करवा दिया जिससे उसके उद्यम को एक नई पहचान मिल रही है। अनलॉक 2.0 के बाद से उसका कार्य थोड़ी बेहतर स्थिति में पहुँच चुका है।

एक बार उद्यम रजिस्ट्रेशन के बाद अब सुनीथा सरकारी योजना के अन्तर्गत ऋण के आवेदन के लिए सोच रही है जिससे वह अपने कार्य को शिखर तक पहुँचा सकती है। और लोगों के लिए भी सुनीथा एक उदाहरण है जिसने पी0एम0युवा और मेन्टर्स के सहयोग से अपने सपनों एवं कार्य को एक ऐसे मुकाम तक पहुँचाया जिससे उसके सपने हकीकत में बदल रहे है और इस ही वजह से वह आज अपना बुटीक खोलने में सफल रही।

41. संघर्ष से सशक्ता, सशक्ता से सफलता

उद्यमी का नाम	सधना सिंह
उद्यम का नाम	सधना ब्यूटी पार्लर
उद्यम लागत	30000 रू0
उद्यम का स्थापित वर्ष	2019
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	1.0 से 1.20 लाख रू0
उद्यमी का पता	नेएडा, उ.प्र.
कर्मचारियों की संख्या	01
उद्यम का प्रकार	सेवा क्षेत्र

एक समय था जब पुरूशों को ही परिवार का अन्नदाता माना जाता था और महिलाओं को मात्र घर गृहस्थी से जोड़ा जाता था, किन्तु आज के समय में तस्वीर बदल चुकी है। नारी सशक्तिकरण समाज की विचारधारा में नये नये परिवर्तन लाया है। कहा जाता है कि धैर्य, लगन और परिश्रम से ही सफलता की प्राप्ति होती है। इन सभी गुणों का प्रदर्शन करते हुये अपने लक्ष्य को प्राप्त करने वाली रूप में साधना सिंह ने वास्तव में महिला सशक्तिकरण और उद्यमिता को सही मायनों मेंपरिभाषित किया है।

उत्तरप्रदेश के प्रतापगढ में जन्मी साधना के पिता पोस्टमास्टर के पद पर कार्यरत थे।वह अपने बच्चों की शिक्षा के लिये सजग रहे

यही कारण था कि साधना ने अपनी बी0ए0 की शिक्षा पूर्ण की है। कुछ समय के बाद उनका विवाह प्रतापगढ के रहने वाले विनोद कुमार सिंह से हुआा। साधना के पति जैनपुर स्थित निजी कम्पनी में कार्यरत थे। बडतें समय के साथ परिवार भी बडता गया। दो बच्चों के बेहतर लालन पोषण की चाह में साधना के पति प्रतापगढ से नोएडा आ गये। किराये का कमरा और अन्य बडतें खर्चों को देखकर साधना ने अपने परिवार की आय बडानें में अपने पति का सहयो ग करने का मन बना लिया। नये शहर में रोजगार की तलाश उन्हें संस्थान की और ले आयी। संस्थान से प्रशिक्षण के दौरान मिली जानकारी के आधार पर अपना ब्यूटी पार्लर अपने ही धर से प्रारम्भ किया।

आज के समय मे साधनाने नोएड़ा में अलग से किराये पर जगह लेकर अपने काम को सुचारू रूप से चला रही है। आज साधना महिना के 8000 से 10000 के लगभग कमा कर अपनी आय को सृजित करने के साथ अपने परिवार को एक बेहतर आज और कल देने का कार्य कर रही है।

42. कैमेरे की नजर

उद्यमी का नाम	श्री संदीप कुमार
उद्यम का नाम	फोटों स्टूडियों एवम् साईबर कैफे
उद्यम लागत	5 लाख रू0
उद्यम का स्थापित वर्ष	13.11.2019
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	06 लाख रू0
उद्यमी का पता	काशीपुर, उद्यमसिंह नगर, उत्तराखण्ड
कर्मचारियों की संख्या	02 स्थायी एवम् 04 अस्थाई
उद्यम का प्रकार	सेवा

सन्दीप जो कि उद्यमसिंह नगर जिले के काशीपुर नामक स्थान से आते हैं। सन्दीप शुरूआत से ही काफी जुझारू प्रवृत्ति के स्वामी हैं। वर्श 2017 में उन्होने काशीपुर की सरकारी आई0टी0आई से वेल्डिंग का प्रशिक्षण प्राप्त किया। इसके पश्चात सन्दीप ने नौकरी की तलाश की और एक नौकरी करी परन्तु नौकरी में सीमित आय होने के कारण उन्हे लगा कि नौकरी से वह अपनी जरूरतों को पूरा नहीं कर सकते।

तब उसने अपना कुछ काम शुरू करने की सोची जिसके अन्तर्गत वर्श 2019 में रूपये 500000 की पूंजी के साथ दीपक फोटो स्टूडियो एवं साइबरकैफे की शुरूआत करी। उसने अपनी पूंजी में से कुछ पूंजी से कैमरा, कम्प्यूटर एवं किराये की दुकान की साज सज्जा क लिये खर्च किये।

काशीपुर की सरकारी आई0टी0आई जो कि पी0एम0युवा योजना के अन्तर्गत एक सम्बद्ध संस्थान है और आई0टी0आई के भूतपूर्व छात्र होने के नाते वह इस योजना को भली भाँती जानता था।

शुरूवाती दौर में सन्दीप के कुछ प्रमुख ग्राहक स्कूल, कॉलेज एवं युनिवर्सिटी के छात्र थे जो निरन्तर उनकी दुकान से फोटो खिंचवाने इत्यादि करने आते थे। निसबड संस्थान द्वारा उनको हैण्डहोल्डिंग सहायता प्रदान की गयी जिसमें उनका उद्योग आधार रजिस्ट्रेशन कराया गया जिससे उनका उद्योग आधार रजिस्ट्रेशन नम्बर न्झ12क0007878 उनको प्रदान किया गया। उनका पी0एम0ई0जी0पी योजना के अन्तर्गत ऋण के लिए आवेदन किया गया जिसके अन्तर्गत उनका 400000 का ऋण स्वीकृत किया गया। इस ऋण का उपयोग उन्होने नये उच्च तकनीक के कैमरा, कम्प्यूटर एवं फर्नीचर खरीदने में किया और उन्होने अपना कार्य को आगे बढ़ाया।

आज सन्दीप की वार्शिक टर्नओवर रूपये 1200000 है और उसने 6 अन्य लोगों को भी रोजगार दिया हुआ है। जिसमें से दो लोग दुकान की देख रेख करते हैं और चार अन्य लोग कार्य की आवश्यकतानुसार कार्य या कहें पार्ट टाइम कार्य करते हैं।

इस योजना ने उसको ऐसा प्लेटफॉर्म दिया जिससे उसने अपना व्यापार को आगे बढ़ाया और सरकारी योजना के अन्तर्गत ऋण हेतु आवेदन किया और उससे लाभ उठाया।

43. बैग बना टैग

उद्यमी का नाम	श्यामा
उद्यम का नाम	लक्ष्मी जूट बैग
उद्यम लागत	40000
उद्यम का स्थापित वर्ष	जून 2019
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	7.0 –7.5 लाख
उद्यमी का पता	नेनमणिक्कारा पंचायत जिला त्रिशुर, केरल
कर्मचारियों की संख्या	02
उद्यम का प्रकार	उत्पादन

आज मैं अपना परिचय बड़े गर्व के साथ दे रही हूं क्योंकि पीएम युवा के माधयम से मैं अपनी पहचान बना पाई हूं।

मैं श्यामा पत्नी श्री सुरेश निवास संस्थान नेनमणिक्कारा पंचायत जिला त्रिशुर, केरल की रहने वाली हूं। वह कोडकारा ब्लॉक से सांयथना एनएचजी की सदस्य हूं मैं अपना उद्यम शुरू करना चहती थी पर उसके लिए मेरे पास कोई पर्याप्त धन नहीं था जिसके लिये मैने अपने उद्यम को शुरू करने के लिये 40000 रू0 का ऋण करके स्आर्टअप ग्राम उद्यमिता कार्यक्रम एसवीईपी के हिस्से के रूप में अपना उद्यम शुरू किया। जून 2019 में घर से अपना उद्यम शुरू करने के

पश्चात् मेरे अनुसार इस कार्यक्रम की प्रक्रियाएं तुल्नात्मा रूप से कम लग रही थी, और इसलिए मैंने उसी का ही एक विकल्प चुना था। फिर मैने अपने उद्यम में जूट और कपड़े में विभिन्न उत्पादों का उत्पादन किया जिसमें फाईल फोल्डर, हैंड पर्स, एलबम कवर, आदि शामिल है। बने गये उत्पादों की कीमत 50 रू0 से 500 रू0 मात्र है। वही मैने सूपर मार्क्रेट, दुकानों, व्यापार मेलों और ऑनलाइन मोड के माध्यम से भी अपने उत्पादों का विपणन किया है। जिसमें मुझे काफी मुनाफा हुआ है। जिसमें मैं महिने का 50000.से 60000. का व्यापार करने में सक्षम हुई हुं, वही 20000 रू0 तक महिने में कमा लेती हूं। मैंने तिरवंतपुरम तक के सभी विभिन्न स्थानों पर विभिन्न व्यापार और मेलों में भाग लिया, मैंने सरस मेला, सुचित्वा मिशन तिरवंतपुरम मेला, मत्स्य पालन, एर्नाकुलम मेला, आदि जैसी कई छोटे और बड़े जगहों पर भाग लिया। मुझे आकाशवाणी में सफल उद्यमियों के रूप मुझे दैनिक देशभिमानी में एक लेख में भी सूचीबद्व किया गया, अभी मैने अपने उद्यम को अगले स्तर तक ले जाने और खुद की एक पहचान बनाने के लिए अपनी दुकान शुरू की योजना बनाई है।

कोविड19 की माहामारी के संकट और प्रसार को रोकने के लिए लॉकडाउन के दौरान हमने अपने उद्यम से मास्क, कपड़े के बैग, पीपीई किट की सिलाई करके अपना काम चलाया तथा अन्य लोगों को रोजगार देकर आजीविका देने में सक्षम रही। मेरे मुताबिक पीएम युवा से मिली प्रेरणा और मानसिक सहयोग ने मुझे आगे ब़डने में काफी मदद मिली । पीएम युवा के माध्यम से मैं आत्मविश्वास से भरपूर महिला उद्यमी के रूप में विकसित हुई ।

44. उद्यम से मिली पहचान

उद्यमी का नाम	सिनी निधि
उद्यम का नाम	सिनी बैकरी प्रोडेक्ट
उद्यम लागत	40000 रू0
उद्यम का स्थापित वर्ष	2019
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	02 – 2.4लाख रू0
उद्यमी का पता	त्रिशूर, केरल
कर्मचारियों की संख्या	01
उद्यम का प्रकार	उत्पादन

मेरा नाम सुश्री सिनी निधि है। मै केरल के त्रिशूर जिले की रहने वाली हूं। मैने सिविल इंजिनियर का डिप्लोमा किया है फिर मै एक हाउस वाईफ बनके अपना जीवन यापन कर कर रही थी । मै कुछ करना चाहती थी पर मेरे

धर वाले मुझे बाहर काम करना या बाहर भेजना पसन्द नहीं करते थे। एक दिन मैने अपने किसी दोस्त के व्हाट्सएप स्टेटस पे लगी केक की फोटो देखी जो कि उसने अपने द्यर पे बनाया था। यह देखकर मेरे अन्दर भी एक जोश आया कि क्यों ना मै भी अपना काम करूं जिससे मुझे आय भी हो और कुछ करने का सपना भी पूरा हो। वैसे भी मुझे बैंकिंग का पहले से ही बहुत शौक था, मैने बाजार से केक का सारा सामान लेकर आई और केक बनाना शुरू किया पहले मैं अपने पड़ोसियों के लिए केक बनाती थी , धीरे – धीरे मुझे बाहर से भी केक की डिमांड आने लग गई। पीएम युवा के माध्यम से मुझे अपनी द्यरेलु इकाई शुरू करने का सुझाव मिला। इस तरह से मैने अपना उद्यम नवीनतम बेक हाउस शुरू किया। मैंने अपने उद्यम को

बड़ाने के लिए केक की सजावट करना भी सिखा और विभिन्न प्रकार के डिजाईनर केक बनाने लगी। शुरूआती दिनों में मुझे यह लगता था कि और ग्राहक कैसे मिले आमतौर पर लोग बेकरी से केक खरीदते है ऐसे लोगो का दिल जितना और अपने घर के बने बेक हाउस से केक खरीदना और बेचना मेरे बहुत कठिन काम था। पर पीएम युवा के माध्यम से मेरे घर के बेक हाउस के बारे में सबको पता चला और लोग मेरे में केक लेने आने लगे और लोगों ने कुछ दिनों पहले भी ऑडर देने लगे। मैने बहुत सारी नकारात्मक टिप्पणियों का भी सामना किया। पर मैने अपना विश्वास और इरादा मजबुत रखा। और अपने काम को सकारात्मक सोच के साथ करती रही। अपने उद्यम को बड़े स्तर तक लेजाने के लिए मैंने पीएम युवा बूट कैंप ट्रेंनिग से आवश्यक ऋण लेकर एक नई शुरूआत की। और कुछ नये उत्पादों को बनाने लगी, जैसे पिज्जा, बर्गर, पेस्ट्री,सैंडिविच आदि उत्पाद बनाकर मार्केट में शामिल किया और मेरे उद्यम को एक नया मोड मिला और आज में महिने में 10000 से 20000 तक आय कर रही हूं। मैं पीएम युवा का बहुत आभार व्यक्त करना चाहती हूं जिन्होने मुझे मेरे सपने साकार करने का मौका दिया।

45. खिलौने से खिलता उद्यम

उद्यमी का नाम	सुमिता
उद्यम का नाम	सुमिता टॉय मैकिग
उद्यम लागत	200000रू0
उद्यम का स्थापित वर्ष	19 सितंबर 2019
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	2.0 –2.5 लाख
उद्यमी का पता	एरामल्लुर, अलाप्पुझा, केरल
कर्मचारियों की संख्या	03
उद्यम का प्रकार	उत्पादन

मेरा नाम सुमिता है। मैं केरल के अलाप्पुझा जिले के एरामल्लुर की रहने वाली हूं। मैने केरल सरकार तकनीकी शिक्षा पाठ्यक्रम पूरा किया। मैंने 2001 से लेकर 2013 तक एक खिलौना बनाने वाली कंपनी में काम किया था, 2015 के दौरान मेरे पति बीमार हो गये और मै बहुत परेशान हो गयी कुछ समझ नही आ रहा था, उस दौरान में एक कंम्पनी में आउटसोर्सिगं काम करती थी कंम्पनी से बाहर निकलने के बाद मैने अपने दोस्तो से मिलने का सोचा क्योंकि मेरे ज्यादातर दोस्त अच्छी कम्पनीयों में जॉब करते थे। जैसे मैं रास्ते से जा रही थी तो अचानक से मुझे उसी कंम्पनी के प्रबन्ध निदेशक श्री सतीश जी ने मुझे पूछा कि कहां जा रही हो तो पूरी बात बताई और बोला कि नौकरी की तलाश में जा रही हूंतो सतीश जी ने अगले दिन मुझे और मेरे पति को अपने कक्ष में बुलाया और नौकरी की बात

करके मुझे नौकरी पे रख लिया। 2 जनवरी 2017 को मैने पुनः खिलौना बनाने वाली कंपनी में काम करना शुरू कर दिया। मै 4 मशीनों में एक साथ काम करती थी। कई लोगों ने मुझसे काम सिखने के लिए सम्पंक्र किया मैने कई लोंगो को काम भी सिखाया और उनको अपने साथ भी जोड़ के भी रखा। पीएम युवा के माध्यम से मुझे बहुत सहयोग मिला। मैने जब अपना टॉय मैकिग का काम शुरू करना चाहा तो पीएम युवा ने मुझे बहुत सहयोग किया।19 सितंबर 2019 को अपने दोस्तो की मदद से मैने अपना उद्यम स्थापित किया और खुद की यूनिट लगाई मै अपने अपने दोस्तो का तथा पीएम युवा के सभी मेम्बर का धन्यबाद करना चाहूंगी आज मेरे साथ 3 और लोग को भी रोजगार मिला है। मै महिने में 10000 से 20000 तक कमा लेती हूं जिससे मेरे घर का गुजारा बड़े आसानी से चल रहा मैने अपने सपने धीरे – धीरे पूरे कर रही हूं।

46. सार्थक प्रयास

उद्यमी का नाम	सुश्री धन्या
उद्यम का नाम	मशरूम उत्पादन
उद्यम लागत	35000
उद्यम का स्थापित वर्ष	2019 –20
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	1.5 – 2.0लाख
उद्यमी का पता	त्रिशुर, केरल
कर्मचारियों की संख्या	02
उद्यम का प्रकार	उत्पादन

मैं सुश्री धन्या एम. एस केरल के त्रिशुर जिले के एडविलुंग पंचायत की रहने वाली है। जब मै स्नातक की पढ़ाई कर रही थी तो मेरी शादी हो गयी थी, पर मैने शादी के बाद भरी अपनी पढ़ाई जारी रखी। मै सरकारी नौकरी करना चाहती थी उसके लिए मै कोचिगं भी कर रही थी। और अपने शौक और परिवार साथ मिलकर मशरूम की खेती करती थी और उसी दौरान मुझे पता चला कि प्रधांनमत्री कौशल विकास योजना (पीएमकेवीवाई) मशरूम की खेती में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का विस्तार कर रही है। मै भी उस प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में गई जहां मैने देखा कि मशरूम की खेती के करने के लिए किन किन बातों का ध्यान रखना चाहिए और ये एक प्रकार का व्यवसाय है। मैंने मशरूम की खेती के बारे में सिखा, हमारा संयुक्त परिवार है जहां घर में परिवार के सदस्यों मात्र के लिए जगह हो

पाती है, परन्तु मैने फिर भी अपने घर पे ही मशरूम का व्यवसाय करना शुरू किया। जब मुझे लगा कि मुझे मशरूम से कुछ आय भी हो रही है। तो मैने सोचा कि क्यों ना मै अपना व्यवसाय और आगे बढाउ इसी सोच के साथ मैने अपना काम के लिए पीएम युवा से सम्पक्र किया जहां मैने एक कैंप के माध्यम से ट्रेंनिग में हिस्सा लिया वाकई ये मेरे लिए एक नया अनुभव था मैने इस ट्रेंनिग में अपने आप को आत्मनिर्भर बना लिया था और अपने आपको एक बिजनेस वूमन बनने के लिए पूरी तरह से तैयार कर लिया था मैने अपने परिवार से बात की और उसके बाद मैने मशरूम की खेती करने के लिए उपयुक्त घर लीज पर ले लिया था और मार्च तक मै उस घर में रहने लगी। जब कोरोना जैसी महामारी का प्रकोप पूरे देश में चल रहा था तो मै अपने घर में अपने व्यवसाय को पूरा ध्यान दे पा रही थी और मेरा काम अच्छे से चल रहा था । मैं स्वादिश्ट मशरूम, बटन मशरूम, मिल्की मशरूम, आदि उगाती हूं। मेरे साथ मेरा परिवार भी साथ देता है। में एक कंपोस्टिंग इकाई भी शुरू की योजना बनायी ताकि अपने उद्यम से बायो डिग्रेडेबल कचरे को जैव उर्वरकों में बदल दिया जा सके। आज मेरी महिने की इनकम 20000रू0 तक हो रही है।

मैं निसबड का आभार व्यक्त करती हूं जिन्होने मुझे अपनी पहचान बनाने का मौका दिया।

47. मेहनत का स्वाद

उद्यमी का नाम	आशा
उद्यम का नाम	केसी फूड प्रोडक्ट्स
उद्यम लागत	25000
उद्यम का स्थापित वर्ष	2016
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	7.0 – 8.0 लाख
उद्यमी का पता	अलाप्पुझा पट्टनक्कड़ पंचायत, केरल
कर्मचारियों की संख्या	04
उद्यम का प्रकार	उत्पादन

ये कहानी है प्रकृति की गोद में बसा प्रान्त, केरल की रहने वाली सुश्री आशा की, आशा केरल के अलाप्पुझा जिले के पट्टनक्कड़ पंचायत की रहने वाली है। आशा एक सक्षम गृहणी है आशा ने 2016 में अपना उद्यम शुरू किया, तब वह अपने उद्यम को पंजीकृत कराने में अंजान थी तब आशा जी अचार बनाने का काम करती थी जैसे आम,लहसून, खजूर, मछली आदि से अचार बनाती थी। आशा ने अपने आचार को केसी फूड प्रोडक्ट्स के नाम से बजार में उतारा था , आशा आचार बनाकर बाजार तथा अपने पड़ोसियों को बेचती थी। आशा अपने बनाये हुऐ आचार को कांच के जार में पैक करती थी और बाजार में बेचती थी। पर आशा अपनी मेहनत के हिसाब से बाजार में पूर्ति करने में विफल हो रही थी क्योंकि बाजार में उत्पादन की लागत बढ़ रही थी।

आशा के साथ उनकी माता जी भी उनके व्यवसाय में उनकी मदद करती है। आशा मन ही मन सही सोच रही थी की अपने व्यवसाय को और बेहतर तरीके से बाजार में कैसे लाया जा सके। उसके लिये आशा ने पैकिंग सॉल्यूसन कंपनी से सम्पक्र किया। उनके निर्दिशों के अनुसार वे अपने उत्पादों को सर्वोत्तम गुणवत्ता में पैक करने में सक्षम रही। जब आशा अपने उत्पादों को बाजार में ले गयी तो आशा को बहुत अच्छी प्रतिक्रिया का सामना करना पड़ा। क्योंकि आशा ने अपना उत्पाद मिट्टी के बर्तनों में पैक किया गया था। इसलिए आशा को छोटी दुकानों में अत्पाद बेचने में असमर्थ हो रही थी। बाद में आशा ने अपने उद्यम को पंजीकृत करने के बाद पीएम युवा के तहत अपने व्यवयाय को व्यापार मेलों और अन्य व्यापार मेलों में प्रतिभाग करके अपने माल को बेचने में सफल रही। आशा प्रतिमाह 10000 से 20000 तक कमाती है। और साथ ही अपने साथ तीन और महिलाओं को भी रोजगार दिया है। आशा ने अपने व्यवसाय का जीएसटी रजिस्ट्रेशन भी करवा लिया है। आशा ने पंचायत लाइसेंस, स्वच्छता लाइसेंस, और कानूनी मेट्रोलॉजी पंजीकरण भी ले लिया आज आशा पीएम युवा की आभार व्यक्त करती है।

48. अभिनव प्रयोग

उद्यमी का नाम	अभिनव
उद्यम का नाम	मशरूम अर्गनिक प्राईवेट लिमिटेड
उद्यम लागत	50000 रू0
उद्यम का स्थापित वर्ष	नवम्बर 2019
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	1.0 – 1.5 लाख
उद्यमी का पता	राजबत्ती, 125 एम सी घोस, हुगली, वेस्ट बंगाल
कर्मचारियों की संख्या	02
उद्यम का प्रकार	मशरूम अर्गनिक प्राईवेट लिमिटेड

मशरूम अर्गनिक प्राईवेट लिमिटेड नवम्बर 2019 में शुरू किया गया था और यह एक सामाजिक प्रभाव और लाभदायक मशरू उत्पादन उद्यम है जिसे द्वश्टिबाधित उद्यमियों द्वारा सह–स्थापित किया गया है।

इस पहल की शुरूआत 7 द्वश्टिबाधित युवाओं को ब्लाइड बांयज अकादमी, रामकृश्णा मिशन आश्रम, नरेंद्रपुर, पश्चिम बंगाल मे प्रशिक्षित करने के साथ की गई थीं इसे टोटलस्टार्ट के ब्लाइंड यूथ एंटरप्रेन्योरशिप के तहत रूपये के शुरूआती निवेश के साथ समर्थित किया गया था। एग्रीबिजनेस स्टार्ट–अप मशरूम बनाने के लिए 24 लाख राजबती में, कोलकाता के पास श्योराफुली और मशरूम की खेती की भूमि मनसाई नदी दिप कूचविहार पश्चिम बंगाल में है। यह क्षेत्र पूर्वी भारत

में मशरूम की खेती के केंद्र के रूप मे जाना जाता है।

वर्तमान में, मशरूम उत्पादन छोटे सीमांत के साथ—साथ भूमिहीन किसान महिलाओं और ग्रामीण युवाओं के लिए एक बहुत ही लाभदायक व्यवसाय है। जिले के विभिन्न क्षेत्रों में महिला एंव ग्रामीण कृशक युवाओं को लाभकारी रोजगार मिल रहा है तथा मशरूम उत्पादन से उनकी आय में वृद्धि हो रही है। कृशि विज्ञान केंद्र (KVK) जैसी कई कौशल विकास एजेंसियां पूरे क्षेत्र मे कौशल उन्मुखीकरण प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कर रही है।

उद्यम के संस्थापक पायलट प्रोजेक्ट से जुडे और 3 दिवसीय मेंटरिंग कैंप में भाग लिया। इस शिविर मे दौरान एक अभिनव पहल की गई, जिसमे पश्चिम बंगाल के विभिन्न जिलों के 30 अन्य द्वश्टिबाधित रोजगार उम्मीदवारों को ब्लाइंड्स बांय हांस्टल से आमंत्रित किया गया था। यह संस्थापकों और आकांक्षी को एक साथ लाने का एक सम्मेलन था।

3 दिवसीय परामर्श शिविर ने नए उम्मीदवारों को गहन सहायता प्रदान की जिसमे उन्हें मशरूम की खेती की मूल बातों पर प्रशिक्षित किया गया। शिविर के माध्यम से उद्यम में भूमिका के अनुकूल होने के लिए उनके कौशल और क्षमताओं का मानचित्रण किया गया।

मौजूदा संस्थापकों के सत्रों के लिए बाजार अनुसंधान पर सुविधा प्रदान की गई, मशरूम आंनलाइन बेचने के लिए जियो मार्ट, अमेजन पेंट्री, बिग बास्केट और ग्रोफर्स पर आनलाइन विक्रेता खाता बनाना। वेबसाइट विकास और प्रबंधन के निर्माण में सोशल मीडिया का समर्थन दिया गया। उन्हें विभिन्न परोपकारी सगठनों और सीएसआर के माध्यम से धन जुटाने के लिए समर्थन दिया गया ताकि वे अपने व्यवसाय का विस्तार कर सकें। उद्यम अपेक्सित वार्शिक कारोबार रु0 5–6 लाख का है।

पायलट प्रोजेक्ट ने उन्हें अन्य द्वश्टिबाधित उम्मीदवारों को लाभकारी रोजगार प्रदान करने के लिए एक मंच प्रदान किया। इसके अलावा इसने मौजूदा संस्थापकों को विभिन्न डिजिटल प्लेटफार्मो के माध्यम से अपने उत्पादों के विपणन के अधिक अवसरों का पता लगाने और उन्हें धन जुटाने के लिए संगठनों से जोडने में सक्षम बनाया। यह उद्यम के लिए एक बडा ग्राहक आधार बनाने का मार्ग प्रशस्त करेगा।

49. बढते कदम

उद्यमी का नाम	मोनिका शर्मा
उद्यम का नाम	पिकअप सेंटर आफ आरसीएम
उद्यम लागत	50000रू0
उद्यम का स्थापित वर्ष	2021
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	3.5 –04लाख रू0
उद्यमी का पता	अमूरा अमोशी, सरोजनी नगर, लखनऊ
कर्मचारियों की संख्या	02
उद्यम का प्रकार	सेवा का क्षेत्र

मोनिका शर्मा एक जनरल स्टोर खोल कर अपना उद्यम शुरू करना चाहती थी जहां विभिन्न प्रकार के उत्पाद बेचे जाये। इसके लिए उन्होने कई प्रयास किये परन्तु विफल रही, फिर वह निसबड संस्थान से जुडी जहां मोनिका को अपना उद्यम स्थापना से सम्बन्धित जानकारी के लिये प्रशिक्षण प्राप्त किया। मोनिका ने पीएमयुवा के तहत आयोजित परामर्श शिविर मे भी भाग लिया। एक महिला होने और कम उम्र की होने के कारण उन्हें अपने परिवार से भी चुनौतियों का सामना करना पडा, जो कि कम उम्र को देखते हुए उनके व्यावसायिक विचार से आशंकित थे। कि उसके पास अनुभव न हो लेकिन मोनिका मे साहस था कि उन बाधाओं को दूर कर सके, परन्तु मोनिका को अपनी मेहनत पर पूरा भरोसा था।

परामर्श शिविर के दौरान मोनिका ने अपना उद्यम का पंजीकरण कराया जिससे वह अपने उद्यम के लिए बैंक से ऋण प्राप्त कर सके ओर अपना उद्यम को आगे बढा सके। मोनिका ने सन् 2021 में 50000/– की लागत से पिकअप सेंटर के नाम से एक किराना स्टोर खोला, जिसमे सस्ती कीमत में सामान उपलब्ध हो। आज मोनिका रु0 25000/– महिना कमा रही है।

50. जीवन रेखा

उद्यमी का नाम	श्री पी रमेश
उद्यम का नाम	श्री दुर्गा ऐजेंसी
उद्यम लागत	3,00,000 रू0
उद्यम का स्थापित वर्ष	2017
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	06लाख रू0
उद्यमी का पता	6/65 मेलाकाल रोड, कोचाडाई, मदुरै
कर्मचारियों की संख्या	07
उद्यम का प्रकार	मेडिकल डिस्ट्रिबियूशन

केवल मनुष्य ही नही हर जीवित प्राणीके जीवन में विभिन्न प्रकार की बिमाारियों का आना जाना लगा रहता है। समय के साथ चिकित्सा पद्वाति और दवाओं में व्यापक विस्तार और सुधार देखने को मिला है। यही कारण है कि आज दवा उत्पादन और वितरण जीवन रक्षा के साथ ही आजीविका के एक व्यापक क्षेत्र के रुप में विकसित हो रहा है। इसे अपनाकर आज लोग न केवल अपने लिये स्वरोजगार के द्वार खोल रहे है बलकि साथ साथ रोजगार के अवसरों को भी सृजित कर रहे है।

मदुरैके रहने वाले पी.रमेश भी एक ऐसे उद्यमी है जो अजीविका संवर्धन अर्जित करने के साथ चिकित्सा व्यावस्था को सुगम करते हुए श्री दुर्गा एजेंसियों के नाम से चिकित्सा वितरण कंपनी चला रहे हैं। अपने उद्यम को विस्तार देने

के विचार से और उद्यमिता पारिस्थितिकी तंत्र के बारे में और अधिक समझने के लिए, उन्होंने मदुरै में संस्थान द्वारा पीएम युवा योजना के अंतर्गत आयोजित परामर्श शिविर में प्रतिभाग किया। शिविर के दौरान उन्होंने अपने वर्तमान व्यवसाय को बढ़ाने के बारे में जानकारी प्राप्त की,उद्योग के विशेषज्ञों, सरकारी अधिकारियों और सलाहकारों ने लघु और सुक्ष्म उद्यमों के सामने आने वाली बाधाओं पर विचार–विमर्श किया और व्यवसाय के विकास और विकास के लिए संभावित रणनीतियाँ प्रदान कीं। वह प्रशिक्षण कार्यक्रम में मिली जानकारी से काफी प्रभावित हुए।

उन्होंने शुरू में एक चिकित्सा वितरण कंपनी स्थापित करने के लिए अपने स्वयं के अंश से रु0 3,00,000 का निवेश किया। आज वह संस्थान से प्राप्त मार्गदर्शन से रु0 50,000 की मासिक आय अर्जित करने के साथ 07 लोगो के रोजगार का साधन भी है।

परामर्श शिविर में भाग लेने के बाद, पी. रमेश ने अपने निरंतर प्रयास से अन्य क्षेत्रों में अपने उद्यम का विस्तार करने का फैसला किया है। जिससे वहयुवाओं को स्वरोजगार के प्रति प्रेरित करने के साथ रोजगार के अवसरों को बडाने में अपना योगदान देकर आत्मनिर्भर भारत के संकल्प को साकार रूप देने में लगे है

51. जय माँ चंडिका

उद्यमी का नाम	श्रीमती अंजनी देवी
उद्यम का नाम	जय माँ चंडिका उद्योग
उद्यम लागत	20000
उद्यम का स्थापित वर्ष	
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	1.0 –1.5लाख रू0
उद्यमी का पता	डब्ल्यू–9, महना, बेगूसराय, बिहार
कर्मचारियों की संख्या	
उद्यम का प्रकार	अगरबत्ती निर्माण

मनुश्य अपने जन्म के साथ ही अपने सामाजिक परिवेश को बेहतर करने के लिए आर्थिक सार्मथ्य और सशक्त्ता के लिए आजीवन सत्त रूप से प्रयासरत रहता है और इसी प्रयास की कड़ी में कुछ लोग उपलब्धि की नई गाथा लिखकर आने वालों के लिए प्रेरणा बन जाते हैं। यह कहानी भी एक ऐसी महिला की है जो अभावों से सिंचित होकर उद्यम के आभा पटल पर प्रकाश मान हुई।

नारी को अपने कई गुणों से जाना जाता है। नारी चाहे तो अपना सर्वस्व अपने परिवार की सलामती के लिए लगा सकती है। बात अगर कार्यक्षेत्र की हो तो भी वह किसी से पीछे नहीं रहती। इसी कथन को सही साबित किया है अंजनी देवी जो कि बेगूसराय के आंगनबाड़ी में कार्यकत्री है। अंजनी का विवाह बेगूसराय के भूमिहीन किसान परिवार में हुआ। असमायिक पति की मृत्यु से दैनिक आय पर निर्भर आर्थिक रूप से कमजोर परिवार की रीढ़ मानों टूट सी गयी। पति को खोने के बाद भी अंजलि ने हिम्मत नहीं हारी । विधवा होने के कारण परिवार में एकमात्र कमाने वाली सदस्य है जिनके ऊपर एक बच्चे को पालने की जिम्मेदारी भी है।

थोड़ा बहुत कार्य करके परिवार की दो वक्त की रोटी चल रही थी परन्तु सीमित आय के कारण परिवार के लालन पाशण लॉकडाउन की भयावह परिस्थिति के कारण हर कोई परेशान था क्योंकि कई लोगों के कमाई के साधन खत्म हो गये थे।

ऐसी ही परिस्थिति को झेलते हुए अंजनी ने आगे बढ़ने का मन बनाया। और बजाए निराशा की तरफ जाने के उसने आय के नये साधन ढूँढने का प्रयास किया। अभी वह प्रयास कर ही रही थी कि तभी वह कुछ महिलाओं से मिली जो अगरबत्ती निर्माण का कार्य कर रही थी। उसका भी मन इस कार्य को करने का हुआ जिसके तहत उसे अपने कुछ जानकारों के माध्यम से बेगूसराय में संस्थान द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम की जानकारी मिली। अंजनी ने अपने आप को उस प्रशिक्षण कार्यक्रम में खुद को पंजीकृत किया। जिसमें उन्होने उद्यम स्थापना, संचालन एवं प्रबन्धन के विशय में जानकारी प्राप्त की। प्रशिक्षण से प्राप्त मार्गदर्शन के आधार पर अंजलि ने अपने घर के निकट अगरबत्ती निर्माण का कार्य प्रारम्भ किया। जिसका विक्रय स्थानीय बाजार में कर आर्थिक लाभ भी प्राप्त कर रही है। अंजनी ने अपने उद्यम का उद्यम रजिस्ट्रेशन भी कराया जिसके तहत उसने उद्यम को ''जय माँ चण्डिका अगरबत्ती उद्योग'' के नाम से पंजीकृत कराया। आज वह लगभग रू0 8000 से 10000 प्रति माह तक कमा रही है तथा कुछ अन्य महिलाओं को भी रोजगार दे रही है। आज अंजनि देवी क्षेत्र के आस पास की महिलाओं के लिए भी प्रेरणा श्रोत बन चुकी है।

52. उद्यम से महकता जीवन

उद्यमी का नाम	सोनी देवी
उद्यम का नाम	जय मां चंडिका उद्योग,
उद्यम लागत	35000
उद्यम का स्थापित वर्ष	
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	3.0 –4.0 लाख
उद्यमी का पता	डब्ल्यू–7, महना, बेगूसराय, बिहार,2021
कर्मचारियों की संख्या	
उद्यम का प्रकार	अगरबत्ती निर्माण

मन में अगर कुछ करने की इच्छा शक्ति हो तो मनुश्य हर कार्य को आसानी से कर सकता है। ऐसी ही कहानी है 23 वर्शीय श्रीमती सोनी देवी की जो कि टेट्राबाद, खगड़िया की रहने वाली है। उनका विवाह बरौनी, बेगूसराय में हुआ है। पेशे से ड्राइवर उनके पति की आमदनी भी बहुत अच्छी नहीं थी और परिवार के भरण पोशण में भी काफी परेशानी हो रही थी। सोनी अपने परिवार की आमदनी बढ़ाने के लिए काफी प्रयासरत थी परन्तु कुछ समझ नहीं आ रहा था कि किस तरह से परिवार को सहयोग किया जाए। इसी कसमकस में सोनी की जिंदगी भी गुजरी जा रही थी।

इसी क्रम में कुछ समय पश्चात सोनी ने अपने कुछ सहयोगियों की मदद से व्यवसाय करने की सोची जिसमें उन्होने अपने रूचि अनुसार अगरबत्ती निर्माण का व्यवसाय करने की सोची। क्योंकि एक महिला होने के नाते

पारिवारिक जिम्मेदारियों के ओत प्रोत उनके पास सीमित समय था। उस ही समय में उनको अपना कार्य भी करना था जिसमें उनके पति ने भी अपनी सहमति पहले ही जता दी थी। बस फिर क्या था ''जहाँ चाह वहाँ राह'' कथन को सोनी ने अमलीजामा पहनाना शुरू कर दिया था। बस जरूतर थी वित्तीय सहायता एवं मार्गदर्शन की। इसी सोच के साथ सबसे पहले वर्श 2021 में उन्होने अगरबत्ती निर्माण का प्रशिक्षण लेना शुरू किया।

समय रहते सोनी ने शुरूवाती निवेश के लिए कुछ पूंजी की व्यवस्था करी और अपने सहयोगियों की मदद से छोटे स्तर से हस्त निर्मित अगरबत्ती निर्माण का कार्य शुरू किया जिसमें उनके द्वारा अच्छा मुनाफा भी कमाया। मुनाफे को देखते हुए उनके मन खुशी से समाने लगे और उनको अपने अन्दर एक नई ऊर्जा का एहसास होने लगा और उनका मनोबल बढ़ने लगा। इस के साथ ही उनके कौशल में भी निखार आने लगा था परन्तु उनको अभी कुछ अधूरापन लग रहा था क्यों कि व्यवसाय में और भी कई चीजें होती हैं जिसमें अभी वे पारंगत नहीं थी।

कहते हैं कि अगर नियत साफ हो तो नियती भी साथ देती है। सोनी अभी अपने आप को पूर्ण प्रशिक्षित नहीं समझ रही थी क्यों कि वह अभी अपने व्यवसाय को बड़े स्तर तक पहुँचाना चाहती थी, जब तक वह कुछ समझ पाती तभी सोनी को बेगूसराय में निसबड संस्थान द्वारा संचालित पी0एम0युवा योजना के अन्तर्गत तीन दिवसीय मेन्टरिंग कैम्प के बारे में पता चला। उसने तुरन्त प्रशिक्षण केन्द्र में पहुँचकर अपना पंजीकरण कराया और उस प्रशिक्षण में प्रतिभाग किया। वह बताती है कि इन तीन दिनों में उसने वह सब कुछ सीखा जिसकी उसे तलाश थी। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में उन्हे विभिन्न विभागों की योजनाओं, वित्तीय प्रबन्धन हेतु सरकारी योजनाओं द्वारा ऋण हेतु आवेदन के बारे में बताया। उत्पादों के विपणन में एक उद्यमी को क्या क्या तरीकों का इस्तेमाल करना होता है इसके बारे में भी प्रशिक्षण कार्यक्रम में बताया गया। उन्हें व्यवसाय के बारे में बहुत सी नई बातें पता चलीं, जैसे बाजार में कैसे व्यवसाय करते हैं, व्यवसाय का विस्तार कैसे करें, विपणन कैसे करें और कई अन्य चीजें जिससे उनके मनोबल में काफी बढ़ोत्तरी हुई।

प्रारम्भ में सोनी को शिव अगरबत्ती उद्योग के साथ जोड़ा गया जिससे उसने व्यवसाय हेतु मार्केटिंग के गुण सीखे और अपने आत्मविश्वास को बढ़ाया और इसके बाद सोनी ने ''माँ चंडिका उद्योग'' के नाम से अपना उद्यम पंजीकृत कराया और इसे आगे बढ़ाया। अब सोनी बैंक से ऋण लेने की योजना बना रही है ताकि वह अपने कार्य का विस्तार कर सके और धूप/अगरबत्ती को विविधता के साथ बाजार में उपलब्ध करा सके।

आज सोनी को काफी खुशी होती है और वह धन्यवाद देती है निसबड संस्थान का जिसने उनके जीवन में एक नई उमंग भरी और उसके उत्पादों का मार्केट लिंकेज भी कराया है और साथ ही साथ उनके उत्पादों को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म भी उपलब्ध कराया जिसके तहत उनके उत्पाद उनके फेसबुक पेज पर भी उपलब्ध है।

53. सेल्वमुरुगन

उद्यमी का नाम	एस शशी कुमार
उद्यम का नाम	सेल्वमुरुगन ट्रेवल्स
उद्यम लागत	1500000 रू0
उद्यम का स्थापित वर्ष	2020
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	1200000 रू0
उद्यमी का पता	आमनी बस स्टैण्ड काम्पलेक्स मत्तूथवनी, मदूरै
कर्मचारियों की संख्या	12
उद्यम का प्रकार	ट्रांसपोर्ट

अपने व्यवसाय को सहजता के साथ अन्य स्वरूपों में विस्तारित करने वाला ही सही मयानों में उद्यमी होता है। यह वाक्य हम आप ने कही बार सुना जरूर होगा पर मदुरै के रहने वाले शशिकुमार ने इसे अपने जीवन में अपनाकर उद्यमिता को सही मायानों में चित्रार्थ किया है। वह पिछले सात वर्षों से मदुरै में ''सेल्वमुरुगन ट्रेवल्स'' के नाम से परिवहन व्यवसाय संचालित कर रहे हैं, जिसके द्वारा वह मदुरै से चेन्नई के लिए परिवहन सेवाएं संचालित करते थें।

सदैव से ही उद्यमी विचारों से प्रेरित रहने वाले शशिकुमार ने परिवहन व्यवसाय को चुना। व्यवसाय में मिली सफलता ने उन्हें अन्य व्यापारिक क्षेत्रों की तरफ आकृषित किया पर क्या किया जाये इस दुविधा में समय ही बढ रहा था।

उन्होंने किसी निजी मित्र से प्राप्त जानकारी के आधार पर संस्थान से सम्पक्र किया, जहॉ से उन्हें मदुरै (तमिलनाडु), में आयोजित पीएम युवा योजना के परामर्श शिविर कार्यक्रम में भाग लिया ओर अपना पंजीकरण कराया। परामर्श शिविर मे श्री शशिकुमार को कई महत्वपूर्ण जानकारियां प्राप्त हुई। जो कि यह उद्यम ग्राहक सेवा संबंधों के महत्व पर केंद्रित था।

शिविर के दौरान, उन्हें उद्यम शुरू करने के विभिन्न पहलुओं से अवगत कराया गया। शिविर में जिला उद्योग केंद्र के विशेषज्ञ, बैंक के अधिकारी और चार्टर्ड अकाउंटेंट फर्म शामिल थे। सत्रों में उद्यम शुरू करने के लिए सरकारी मानदंडों, बैंकों के वित्तीय मानदंडों, बैंक योग्य परियोजनाओं, सरकारी योजनाओं, बहीखाता पद्धति और लेखांकन की मूल बातें शामिल थीं। उन्होंने बैंक द्वारा विस्तृत परियोजना रिपोर्ट को कैसे स्वीकार या अस्वीकार किया जाता है, इस पर व्यावहारिक सत्र में भी भाग लिया।

श्री शशिकुमार ने परिवहन व्यवसाय के साथ–साथ स्नैक्स व्यवसाय शुरू करने के लिए अपने स्वयं के फंड से रु0 15,00,000 का निवेश किया। अब, वह रु0 1,00,000 की मासिक आय अर्जित करते है।

प्रशिक्षण शिविर में भाग लेने के बाद, शशिकुमार तमिलनाडु के अन्य महत्वपूर्ण शहरों में अपनी परिवहन सेवाओं का विस्तार करने और अपनी व्यावसायिक गतिविधियों को बढ़ाने का कार्य कर रहे है।

54. आरंभ से अयाम तक

उद्यमी का नाम	श्री तमिलारसन
उद्यम का नाम	एस0एस0 एन्ट्रप्राइसेस
उद्यम लागत	ए008, साउथ पाक्र, बेंगलुरू
उद्यम का स्थापित वर्ष	2015
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	स्नेक्स उत्पादन
उद्यमी का पता	400000
कर्मचारियों की संख्या	10.0 –15.0 लाख
उद्यम का प्रकार	05

श्री तमिलारासन बैंगलुरू मे पिछले छः वर्शो से एस0एस0 एन्ट्रप्राइजेज के नाम से स्नैक्स निर्माण का उद्यम चला रहें है। उन्होंने संस्थान द्वारा पीएमयुवा योजना के मेंटरिंग केम्प मे प्रतिभाग किया। कार्यक्रम मे उद्यम शुरू करने एवम् उद्यम से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार की जानकारियां प्राप्त हुयी। शिविर के दौरान उद्यम शुरू करने के लिये बैक के अधिकारी, जिला उद्योग केन्द्र के विशेशज्ञ, चार्टेड एकाउंट, बैंक परियोजना, सरकारी योजनाओं, बहिखातें, लेखाकंन एवम् विस्तृत परियोजना रिपोंर्ट को कैसे बनाया जाये तथा अन्य जानकारियां आदि शामिल थी।

शिविर के दौरान उन्हें उद्यम शुरू करने के विभिन्न पहलुओं से अवगत कराया गया। सत्रों मे उद्यम शुरू करने के लिये सरकारी मानदंडों, बैंकों के वित्तीय

मानदंडों, बैंक योग्य परियोंजनाओं सरकारी योजनाओं,आदि के बारे मे विस्तृत जानकारी प्राप्त की। तमिलारासन ने उक्त कार्यक्रम प्रतिभाग कर उन योजनाओं का लाभ उठाया। शुरू में उन्होंने स्वंय की 400000/— की लागत से अपना स्नैक्श उद्यम स्थापित किया, जिसमे वह हर महिने 35000/— कमाते है। तमिलारासन जी ने 5 लोगों को रोजगार भी दिया है।

श्री तमिलारासन कहते है कि उन्हें संस्थान के माध्यम से अपने कार्यो को विस्तार से करने में मदद मिली ओर वह अपने कार्य को सुचारू रूप से कर रहें है। उनका कहना है कि इस तरह के कार्यक्रमों के द्वारा देश के युवाओं में स्वरोजगार के प्रति अभिप्रेरणा बडेगी और वोस्वरोजगार स्थापित करने के अवसर को उपलब्धि में परिवर्तित कर पाने में सफल हो पायेगे।

55. पहाड की बेटी

नाम	प्रीति बर्तवाल
पता	बड़ेथी, उत्तरकाशी
उद्यम का नाम	बर्तवाल क्रोक्ररी शॉप
उद्यम स्थापित वर्ष	2021
कुल लागत	300000 रू0
वार्षिक आय	240000रू0
स्वीकृत ऋण	260000रू0 (मुख्यमुत्री स्वरोजगार योजना)

प्रकृति की गोद में बसा उत्तराखण्ड राज्य का एक खुबसूरत जिला है उत्तरकाशी है। भारत की पवित्र नदियों गंगा तथा यमुना का उद्वगम स्थल उत्तरकाशी अपने आप में प्राृकृतिक सौदर्य के साथ साथ अपने आप में उद्यम के अनेकों अवसरों को समेटे है। जहां के अधिकतर युवा नौकरी की तलाश में अपने घरों को छोड़कर महानगरों की तरफ पलायन कर रहे है। वहीं प्रीति ने स्वरोजगार को अपनाकर उद्यमिता को चितार्थ किया है। मूलरूप से टिहरी की रहने वाली प्रीति के पिता स्वयं का व्यवसाय करते थे, उद्यमी परिवार में पली बढ़ी प्रीति का विवाह जनपद उत्तरकाशी में स्वयं का व्यवसाय करने वाले शिवरंजन के साथ हुआ।

उनके पति हार्डवेयर का व्यवसाय करते है। शादी के बाद प्रीति अपने गृह कार्यों में व्यस्त रहने लगी, कोविड के

संक्रमण काल ने उन्हें यह एहसास करा दिया की एकल आय पर परिवार की निर्भरता से आर्थिक परेशानियां कभी भी हालातों को बिगाड़ सकती है। अपने परिवार और बच्चों का भविष्य को लेकर उन्होंने परिवारिक आय को बडाने में अपना योगदान देने का निश्चय किया। कही पर नौकरी करे या परिवारिक अनुभव के आधार पर स्ंवय् का व्यवसायघ इस दुविधा को लेकर आंशकित प्रीति को अपने पति का पुरा साथ मिला।

प्रीति ने संस्थान के मार्गदर्शन से मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना के अन्तर्गत 260000रू0 का ॠण प्राप्त कर बर्तन भंडार खोला।

आज प्रीति अपने परिवार को समय देने के साथ साथ अपने उद्यम से मासिक 20000रू0 की आय अर्जित कर अपने परिवार को आर्थिक रूप से भी मजबूत कर रही है।

56. यारा

लाभार्थी का नाम	श्री आन्नद प्रभु
उद्यम का नाम	यारा टेक्नोलॉजीज
उद्यम का पता	12/1 कोडीकुलमए केपुडूर, मदूराई
उद्यम की स्थापना	2020
उद्यम का प्रकार	सेवा क्षेत्र
उद्यम लागत	650000रू0
टर्नओवर	8.0 –10.0 लाख

फिजिकल से डिजीटल होते इस युग में आज हमनें अपने उपयोग के अधिकतर साधनों को डिजीटल प्रारूप में प्रयोगात्मक बना लिया है। यह क्षेत्र जीवन को सहज बनाने के साथ साथ उद्यम की असीम सम्भावनाऐं भी लेकर आया है।आनंद प्रभु भी उन्हीं टेक्नोक्रेट उद्यमी में से जो प्रौधोगिकी को और भी सहज बनाने के साथ साथ युवाओं को इस क्षेत्र में कौशलता प्रदान करने का कार्य भी कर रहे है।

अपने प्रौधोगिक ज्ञान को अपने उद्यम में बदलने की खोज में अपने साथियों

के माध्यम से वह संस्थान के सम्पक्र में आये उन्होंने संस्थान द्वारा मदुरै में आयोजित पीएम युवा योजना के तहत आयोजित परामर्श शिविर में एक प्रतिभागी के रूप में खुद को पंजीकृत किया। परामर्श शिविर के दौरान, उन्होंने अपने व्यवसाय की स्थपना और विस्तार, वित्तपोषित योजनाओं, आदि उद्यम से सम्बन्धित जानकारियॉं प्राप्त करने का अवसर मिला। उनके द्वारा प्रौधोगिकी कौशल विकास अभ्यास का वित प्रस्ताव बैंको को पेश किया गया,जो बेरोजगार इंजीनियरों और टेक्नोक्रेट को रोजगार योग्य बना सकता है जिससे लाभकारी रोजगार प्राप्त हो सके।

सन् 2020 में उन्होंने ''यारा टेक्नोलॉजीज'' के नाम से अपनी सॉफ्टवेयर कंपनी की स्थापना करी है। अपनी कंपनी के माध्यम से, वह सॉफ्टवेयर विकास और उसी क्षेत्र में टेक्नोक्रेट को प्रशिक्षण देने का कार्य कर रहे है। उनके प्रशिक्षु या तो उनकी कंपनी में शामिल होते हैं या अन्य स्थापित सॉफ्टवेयर कंपनियों में प्लेसमेंट प्राप्त करते हैं।

उन्होंने अपने उद्यम में आाधारभूत और सॉफ्टवेयर में रु0 6,50,000 रुपये का निवेश किया था। आज वह रु0 8,00,000 का वार्षिक कारोबार कर रहे है। अपने लक्ष्य तक पहुॅंचने के संकल्प को लिये वह आत्मनिर्भर भारत के संकल्प को भी सिद्वि तक पहुॅंचाने में अपना योगदान दे रहे है।

57. अन्नपूर्णा

लाभार्थी का नाम	श्री जी एम कपिलदेव
उद्यम का नाम	अन्नपूर्णा फूड प्रोडक्टस
उद्यम का पता	3 मालाउरानी लेन, काराकुडी, मदुरै
उद्यम की स्थापना	2013
उद्यम का प्रकार	बेकरी उत्पाद
कुल निवेश	3000000रू0
अनुमानित आय(वार्षिक)	1200000रू0

भोजन मानव विकास के लिये एक अत्यन्त महत्वपूर्ण स्रोत है। आजकल के अजैविक आवरण में पोष्टिकता के साथ शुद्व भोजन की मांग लगातार बड रही है। ऐसे में खाद्यय एक व्यापक उद्योग के रूप में विकसित हो रहा है। बहुत से युवा आज इसे अपनी आजीविका के माध्यम के रूप में अपनाकर न केवल स्वरोजगार स्थापित कर रहे बंलकि अन्यों के लिये भी रोजगार के अवसरों को बढा रहे है। उनमें से ही एक हैजी.एम. कपिलदेव।

कपिलदेव नेअपनी शिक्षा एक इंजीनियरिंग स्नातक के रूप में करने के बाद उन्होंने अपनी शिक्षा से इतर खाद्य उत्पादों के निर्माण और विक्रय को अपने आजिवीका संवर्द्धन के रूप में चुना। वर्श 2013 को मदुरै,तमिलनाडु में कपिलदेव ने रू0 30,00,000 के

निवेश के साथ अन्नपूर्णा खाद्य उत्पादों की स्थापना की थी, जिसमें वह रस्क,बिस्कुट,कैक, पैस्टी के साथ और अन्य बेकरी वस्तुओं का निर्माण करते है।. कपिलदेव अपने खाद्य पद्वार्थो की गुणवत्ता के लिए बेहद सजग रहते है।

वर्ष 2019 में कोरोना के द्वारा सारे कारोबार को काफी धक्का लगा। उद्यम का स्वरूप अधिकतम फिजीकल से डिजीटल हो गया था। कारोबार में बदलाव और उसके विकास की चाह में उन्होंने संस्थान द्वारा आयेजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिभाग किया। प्रशिक्षण से प्राप्त मार्गदर्शन के आधार पर उन्होंने टर्चलैंस पद्वाति पर कार्य किया। उत्पादों को ग्प्रहको तक कम से कम टच के साथ पहुॅचाने के लिये अपनी वित्तीय प्रक्रिया में व्यापक बदलाव किया।

कपिलदेव आज लगभग 25 व्यक्तियों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार प्रदान करने में सक्षम हूए हैं और वे प्रति वर्ष लगभग रु0 12,00,000 रुपये की आय को सृजित करने में सक्षम हो पाये है।आज कपिलदेव अपने उद्योग को आगे विस्तार करने के लिए ओर ज्यादा मेहनत व लगन के साथ काम करने को प्रयास कर रहे हैं। ताकि अन्य बेरोजगार युवको को भी अपने इस उद्योग से जोड कर उनके भविश्य को उज्जवल बना पाने में अपनी भूमिका अदा कर पाये।

58. रेवोल्टस एनर्जी

लाभार्थी का नाम	श्री जे मोहन राज
उद्यम का नाम	रेवोल्टस एनर्जी
उद्यम का पता	3/318 ठन्डरल नगर सरवेयर कालोनी, मदूराई
उद्यम की स्थापना	2014
उद्यम का प्रकार	सोलर पेनल सेल्स एण्ड इस्टोलेशन
कुल निवेश	1500000रू0
अनुमानित आय(वार्षिक)	1300000रू0

दुनिया में बडते प्रदुषण और तेजी से खत्म होने की स्थिति में आ रहे ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोतों ने हमारी निर्भरता के लिये विभिन्न स्रोतों को उन्नत रूप में विकसित किया जा रहा है।

मौजुदा समय में सोलर की बडती उपयोगिता को लेकर लोगों का उत्साह इसे एक व्यवसाय के रूप में भी विकसित हुआ है। यही कारण है कि यह तकनीकी शिक्षार्थियों को अपनी ओर अकर्षित कर रहा है। जे. मोहन राज भी उन्हीं उद्यमियों में एक है।

जे. मोहन राजअपनी इंजीनियरिंग डिग्री के साथ एक तकनीकी उद्यमी भी हैं। उन्होंने रु0 15,00,000 रुपये के शुरुआती निवेश के साथ 2014 में''रेवोल्ट्स एनर्जी'' नाम सेअपना सौर उद्यम स्थापित किया। अपने उद्यम को विस्तारित करने की योजना के तहज उन्होंने संस्थान द्वारा

मदुरै,तमिलनाडु में आयोजित उद्यमिता शिविर में भाग लिया।

वह उन्होंने अपने व्यवसाय के संचालन का विस्तार करने के लिए उद्योगके विशेषज्ञों और सलाहकारों के साथ विस्तृत चर्चा कर मार्गदर्शन प्राप्त किया।

सलाहकारों ने उन्हें सलाह दी कि वे वाणिज्यिक प्रतिष्ठानों और घरों को छत पर सौर पैनल स्थापित करके और उन्हें तमिलनाडु बिजली बोर्ड (TNEB) के पावर ग्रिड से जोड़कर सौर ऊर्जा उत्पन्न करने के लिए प्रोत्साहित करें। यह ग्राहकों की बिजली की खपत को कम करेगा और टीएनईबी की लोड आवश्यकताओं को भी कम करेगा।

उद्यमी ने स्वीकार किया कि वह केवल ग्राहकों से सौर पैनल स्थापना अनुरोध का जवाब दे रहा था और उसने कोई मार्केटिंग रणनीति शुरू नहीं की थी। प्रशिक्षण शिविर में भाग लेने के बाद,उन्होंने अपनी व्यावसायिक गतिविधियों को बढ़ाने का फैसला किया है। आज सोलर पैनल सेल्स और इंस्टोलेशन बिजनेस से जुड़े जे. मोहन राज लगभग 15 व्यक्तियों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार प्रदान करता है। उनकी वर्तमान वार्षिक आय लगभग 13,00,000 रू0 अर्जित कर रहे है।

59. डिजीटल संसार

लाभार्थी का नाम	बबिता जयाडा
उद्यम का नाम	दिगराज कमप्यूटर सैंटर
उद्यम का पता	बडकोट, उत्तरकाशी, उत्तराखंड
उद्यम की स्थापना	2021
उद्यम का प्रकार	कमप्यूटर सैंटर
कुल निवेश	500000रू0
अनुमानित आय(वार्षिक)	300000रू0

आधुनिक युग जिसे संचार प्रोमें कम्प्यूटर एक ऐसा साधन बन चुका है। जिसका इस्तेमाल आज हर घर में हो रहा है, कम्प्यूटर विज्ञान की एक ऐसी देन है जो लोगों को जागरूक करने तथा तकनीकी कार्यों में सफल बनाने में अपना योगदान दे रहा है। इसी बात को सच किया है बबीता जयाडा ने उत्तरकाशी जनपद के तहसील बड़कोट की रहने वाली बबीता जयाडा का जन्म एक गरीब परिवार में हुआ था। बबीता चार बहनें तथा 2 भाई है, गरीब परिवार से सम्बन्ध रखने वाली बबीता ने अपनी स्नातक की पढ़ाई बड़कोट से पूरी की उसके उन्होने देहरादून से 1 साल का कम्प्यूटर कोर्स पूरा किया, कोर्स पूरा करने के दौरान उनकी शादी अपने नजदीकी गावं में हो गई, जहां उनके पति एक प्रिटिंग प्रेस चलाते थे, बबीता भी शादी के कुछ दिनों बाद अपने पति के साथ दुकान पर बैठने लगी। उनके प्रिटिंग प्रेस में 2 कम्प्यूटर

मौजूद थे जिसपे वह अपना काम करते और प्रिटिंग छपाई करते, बबीता दुकान में कई बार लम्बीं कतार को देखकर अपने व्यवसाय के विकास के विषय में सोचती थी।

आज हर कार्य डिजीटल रूप में हो रहा है इसे अवसर के रूप में लेकर उन्होंने संस्थान के मार्गदर्शन में वित्तीय सहयोग के रूप में मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना के तहत 500000रू0 का ऋण प्राप्त किया और कमप्यूटर के प्रशिक्षण के साथ जन सुविधा केन्द्र भी स्थापित किया।

आज बबिता मासिक 30000रू0 की आय अर्जित कर खुद को माहिला उद्यमी के रूप में विकसित किया है। वह तकनीक क्रान्ति की उदद्योषक के रूप में पहाड की माहिलाओं को प्रशिक्षित और शिक्षित कर रही हैं।

60. पवित्रा भवः

लाभार्थी का नाम	टी ओम शान्ती
मोबाइल न0	**99408 32328**
उद्यम का नाम	पवित्रा एसोसियट
उद्यम का पता	के पुदूर, मुदराई–625402
उद्यम की स्थापना	दिसंबर ,2019
उद्यम का प्रकार	इन्सेंस अगरबत्ती यूनिट
उद्यम निवेश	500000रू0
कुल आय	4000000रू0

श्रीमती टी ओम शान्तीजो कि एक सफल उद्यमी बनना चाहती थी परन्तु उनके सामने एक बडी वित्तीय समस्या थी, कि कैसे अपन उद्यम को शुरू किया जाये। और किस तरह का व्यवसायकिया जाय। इस पर विचार–मंथन सत्र की एक श्रृंखला थी, टी ओम शान्ती अपने उपनगरीय स्थान में महिला श्रमिकों को सशक्त बनाने के लिए माइक्रो पर आधारित उद्यम शुरू करने पर जोर दे रही थी। उन्होने अपने पति के साथ मिलकर अगरबती या लोबान सूक्ष्म विनिर्माण व्यवसाय पर ध्यान केंद्रित किया। टी ओम शान्ती ने दिसंबर 2019 में उद्यम पंजीकृत किया और जनवरी 2020 में पीएम युवा कार्यक्रम में भाग लिया। जिसके तहत टी ओम शान्तीने पीएम युवा कार्यशाला मे भाग लेने के बाद उन्होंने अपने उद्यम के शुरू करने का फैसला किया। टी ओम शान्ती ने अगरबती या लोबान बनाने का कार्य शुरू किया ओर अपने ही क्षेत्र में इन्हे बेचना शुरू किया टी ओम शान्ती को केवल स्थानीय ऑर्डर मिल रहे थे। इसलिए वह संतुश्ट नहीं थी वह चाहती थी कि उनका उद्यम पूरे जिले व राज्य मे भी

फैले। जिसके लिए उनके पति व स्वमं टी ओम शान्ती ने अखबार ओर पब्लिसिटी के माध्यम से भी अपने व्यवसाय को प्रगति की ओर अगसर किया। जिसके लिए उन्होने अगरबती या लोबान की क्वालिटी गुणवत्ता पर भी ध्यान दिया।

उन्होंने अपने सामान अन्य जिलों में स्थापित कंपनियों तक पहुंचना शुरू कर दिया, बहुत आक्रामक पहुंच के साथ और बिक्री के दृष्टिकोण को कभी नहीं छोड़ा। जैसे जैसे परिणाम आने लगे उन्हें कंपनियों से सीधे ऑर्डर मिलने लगे, जो अपने निर्माण को आउटसोर्स करना चाहते थे। महामारी के संघर्षों के बावजूद, कॉरपोरेट निर्माताओं ने उनके टर्नअराउंड समय और गुणवत्ता के प्रति परिश्रम को प्रभावित किया। उसके लिए जो काम किया वह उसकी दक्षता और उनके कर्मचारियों की लगन का ही नतीजा था। जो थोडे ही समय मे उन्होने इस उद्यम को ऊंचाइयोंतक पहूंचा दिया।टी ओम शान्तीने अपने उद्यम में 35 लोगों को अपने रोजगार से जोड कर एक मिसाल कायम की।

जो चीज सबसे ज्यादा प्रेरित करती है वह यह है कि इतने कम समय में, उसने एक अच्छी तरह से काम करने वाले नियोक्ता के अनुकूल और बाजार संचालित उद्यम बनाया है। एक सूक्ष्म उद्यम के रूप में कठिनाइयाँ होती हैं, क्योंकि प्रत्येक खेप के भुगतान में देरी होती है। इन चुनौतियों के बावजूद, वह सुनिश्चित करती हैं कि उनके कर्मचारियों को उनका वेतन समय पर मिले। ऐसे परिदृश्य हैं, जहां उन्हें अपने कर्मचारियों के वेतन का भुगतान करने के लिए पैसे उधार लेने पड़े। लॉकडाउन के माध्यम से और जनवरी 2020 से फरवरी 2021 तक–उन्होंने 40 लाख से अधिक का कारोबार किया है। आज वे साइकिल अगरबती से विस्तार इकाई लगाने के लिए बातचीत कर रही हैं। वह अब और अधिक महिलाओं को उद्यमिता अपनाने के लिए प्रोत्साहित कर रही हैं। ताकि वह अपना उद्यम स्थापित कर देश ओर समाज को मजबूत कर सके ओर अन्य महिलाओं को भी स्वरोजगार से जोड पाये।

61. रोशनी की और

उद्यमी का नाम	शुभ्म गोला
उद्यम का नाम	शुभा लैम्प्स
उद्यम लागत	300000
उद्यम का स्थापित वर्ष	2017
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	9.5 – 10.0लाख
उद्यमी का पता	काशीपुर, उत्तराखण्ड
कर्मचारियों की संख्या	08
उद्यम का प्रकार	उत्पादन

शुभ्म का जन्म एक मध्यम वर्गीय परिवार में हुआ था। पिता नगर निगम काशीपुर में कार्यरत हैं और माता एक गृहणी है। बचपन से ही शुभम पढ़ाई–लिखाई में बहुत होशियार थे। उनकी प्रारम्भिक से लेकर इण्टरमीडिएट तक की शिक्षा काशीपुर में ही हुई। उसके उपरान्त उन्होने राजकीय पॉलिटेक्निक, पन्तगर से इलेक्ट्रॉन्क्सि में डिप्लोमा किया। शुभम ने अपनी शिक्षा को जारी रखते हुऐ वर्ष 2016 में आम्रपाली संस्थान, हल्द्वानी से बी0टेक (इलैक्ट्रॉनिक्स) में डिग्री प्राप्त की। दो बहनों के अकेले भाई शुभ्म ने अपनी शिक्षा पूर्ण करने के बाद एक अच्छी सी नौकरी करने की सोची तथा कई जगह साक्षात्कार करने के बाद उन्हे हरिद्वार स्थित HQ Lamps कम्पनी में नौकरी मिल गई।

एक वर्ष की नौकरी करने के पश्चात मन उदास एवं अशान्त सा रहने लगा तथा कभी कभार ऐसा लगता था कि

मानों जीवन में कुछ अधूरापन सा रह गया हो। जीवन के उस अधूरेपन को दूर करने के लिऐ शुभम ने वह नौकरी छोड़ दी और वापस अपने घर आ गया।

कुछ समय पश्चात उनकी वार्ता निसबड संस्थान के परामर्शदाता से हुई, जिन्होने उनको संस्थान द्वारा चलाऐ जा रहे विभिन्न कौशल विकास कार्यक्रमों के बारे में बताया तो मुझ में एक ऊर्जा का संचार सा होने लगा। ऐसा लगा कि मानों निर्जीव शरीर में फिर से प्राण आ गये हों। उसके बाद मैने उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिभाग किया जिसमें मुझे कई छोटी – बड़ी जानकारी प्राप्त हुई जो कि मेरे लिए बहुत उपयोगी साबित हुयी।

प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात मुझे लगा कि अब जीवन को एक नई राह मिल गई हो जिससे प्रेरित होकर तथा मेरी रूचि अनुसार मैने अपना स्वरोजगार करने की सोची। स्वरोजगार की ओर प्रेरित होते देख मेरे घर वालों ने भी मेरा सहयोग किया और मैने वर्ष 2017–18 में ऋण हेतु आवेदन किया था परन्तु किसी कारण वश मेरा ऋण स्वीकृत नहीं हो पाया जिससे वर्ष 2017 में स्वयं की पूंजी रू0 300000 से अपनी एल0ई0डी लाईट उत्पादनकी इकाई स्थापित की जो कि सभी प्रकार के बल्ब,टयूब, फैन्सी लाईटस्आदि का उत्पादन करती है। आज मेरी ईकाई शुभा लैम्प्स के नाम से जानी जाती है।

समय की गति के साथ साथ शुभम के जीवनशैली और कार्यक्षेत्र में भी बदलाव आने लगा। जीवन के उतार चढ़ाव के साथ वह उस मुकाम पर पहुँच रहा था जो कभी उसके लिए सपने जैसा था। उसकी मेहनत का ही परिणाम है कि आज उसकी इकाई में सात कर्मचारी हैं तथा उनकी इकाई द्वारा निर्मित उत्पाद उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, केरला, राजस्थान, कलकत्ता आदि के बाजारों में भी बिक रहे हैं। जिससे शुभा लैम्प्स का टर्नओवर लगभग 9,50,000 रूपये तक पहुँच चुका है जिससे कई और लोगों का रोजगार जुड़ा हुआ है। आज शुभ्म अपने साथ साथ कई ऐसे युवाओं के लिए प्रेरणा स्त्रोत का माध्यम बने हुऐ हैं जो अपने जीवन में कुछ अपना स्वरोजगार करना चाहते हैं।

62. नाप तौल

उद्यमी का नाम	नवल किशोर पाण्डे
उद्यम का नाम	रजत एन्ट्रप्राईजेस
उद्यम लागत	650000 रू0
स्वीकृत ऋण	600000 रू0 (पीएमईजीपी)
उद्यम का स्थापित वर्ष	2018–19
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	4.0– 4.5 लाख
उद्यमी का पता	रानीखेत, अल्मोडा,उत्तराखंड
योजना का नाम	पी0एम0ई0जी0पी
कर्मचारियों की संख्या	03
	इलैक्ट्रनिक वैट मशीन

उत्तराखंड की संस्कृतिक राजधानी अल्मोडा के अन्तर्गत प्रकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण रानीखेत एक विश्वविख्यात पर्यटक स्थल होने के साथ साथ कुमॉऊ रेजिमेन्ट का मुख्यालय भी है। पहाड पर्यटन की द्श्टि से जितना अक्रशक है, वह का जीवन उतना ही जटिल है। प्रकृतिक आपदाऔं के दंश झेलने के साथ शहर की तुलना में जन सुविधाऔं की कमी भी जीवन संधर्श को और भी बढाती है। अपने इस संघर्श को विराम देते हुऐ अधिकतर युवा रोजगार की तलाश में पहाडों से पलायन कर शहरों को अपना मुकाम बना बैठे है, वही कुछ ऐसे भी है जो अपना वर्तमान और भविश्य लगा कर पहाड के जीवन को निखारने में लगे है। ऐसे ही एक युवा है नवल किशोर पाण्डे जिन्होंने पलायन को रोकने के लिऐ स्वय् उदाहरण बन कर दुसरों को प्रेरित करने का कार्य किया है।

नवल किशोर पाण्डे का जन्म अल्मोंडा जिले के रानीखेत में एक सैनिक परिवार में हुआ। पिता भारतीय सेना में थे,जिस कारण शिक्षा के साथ अनुशासन का महौल बचपन से मिला। नवल ने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा रानीखेत से पुरी करने के बाद 1997 से 1999 तक इलैक्ट्रनिक ट्रेड से आई0टी0आई किया। पहाड के हर युवा की तरह भविश्य की संभावनाऔ को तलाशने वह पहाडों से दुर देश की राजधानी दिल्ली जा पहुॅचे।

नवल ने 11 वर्शों तक विभिन्न कम्पनियों में इलैक्ट्रनिक वैट मशीन तथा अन्य उपकरणों के उत्पादन और मरम्मत के क्षेत्र में वृहद अनुभव प्राप्त किया। एक दशक से भी अधिक का समय निजी कम्पनियों देने के बाद उन्होंने महसूस किया,क्यों नही अपने पहाड में अपनों को समय और सुविधा प्रदान की जाये। इस विचार को धारण कर वह लौट आये रानीखेत।

एक नई शुरूआत करने को कौशल और अनुभव तो था पर पूॅजी और मार्गदर्शन की कमी बाधा बनकर हौसलों को चुनौती दे रही थी। लगातार प्रयसित रहने वाले नवल को संस्थान के द्वारा चलाये जा रहे कार्यक्रमों के विशय में पता चला, संस्थान के परामर्शदाता से मिलने के बाद नवल ने प्रशिक्षण कार्यक्रम हेतु पंजीकरण करवाया। प्रशिक्षण अवधि में ही उन्होंने ऋण (पी0एम0ई0जी0पी) के लिये आवेदन कर दिया। 6 लाख रूपये के ऋण स्वीकृति के पश्चात उन्होंने अपनी इलैक्ट्रॅानिक सेवा ईकाई ‘रजत एन्ट्रप्राईजेस’ स्थपित कर पहाड के दुरस्थ क्षेत्रों तक सेवाऐं देने का कार्य प्रारम्भ किया। दो बच्चों के पिता नवल एक खुशहाल दाम्पत्य जीवन के साथ एक संन्तुश्ट जीवन भी जी रहे है।

वो कहते है प्रकृति ने हमें इस स्वर्ग रूपी धरा पर जीने का अवसर दिया है, हमें अपना योगदान इस संसाधन पुर्ण धरा को उद्यम उत्प्रेरणा से और भी संकुल बनाने में देना चहिए।

63. सुई धागा

उद्यमी का नाम	आरती
उद्यम का नाम	सिलाई केन्द्र
उद्यम लागत	30000
उद्यम का स्थापित वर्ष	2020 –21
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	4.0 – 5.0 लाख
उद्यमी का पता	रसीला नगर, बस्ती दानिशमंदा, जालंधर
योजना का नाम	पी0एम0ई0जी0पी
कर्मचारियों की संख्या	03
उद्यम का प्रकार	सेवा का क्षेत्र
उद्यमी का माबाईल नं0	8195984841

मन में लगन हो, हाथों में हुनर तथा खुद पर विश्वास हो तो कोई भी लक्ष्य बड़ा नहीं होता। इन्ही पंक्तियों को चरितार्थ किया है जालंधर निवासी आरती ने। आरती एक ऐसा नाम जिसकी कहानी जीवन जीना के मूल्यों को और जीने की कला सिखाती है। आरती के पति का नाम अशोक कुमार है। । आरती शुरू से ही बहुत होनहार एवं मेहन्ती प्रवृत्ति की है। इस ही प्रवृत्ति के कारण आरती को कार्य सीखने का बहुत शौक था। वह बचपन से ही मिलनसार है। उसको पता था कि जीवन में सफलता हासिल करने के लिए बहुत सारी बातें जरूरी हैं लेकिन सबसे महत्वपूर्ण होता है आत्मविश्वास। जीवन में किसी मुकाम पर पहुँच चुके व्यक्तियों और कामयाब लोगों में हमको यह काबिलियत दिखाई देती है। आरती भी उन्ही में से एक थी जो अपने जीवन में कुछ बड़ा मुकाम हासिल करना चाहती थी परन्तु कोई मार्गदर्शक न होने के

कारण वह अपने निर्धारित किए लक्ष्य को हासिल नहीं कर पा रही थी। लॉक डाउन की वजह से मेरे पति का काम भी ठीक ढंग से नहीं चल पा रहा था।

अपनी बात कहते हुए आरती कहती है कि एक दिन जब वह अपने भविष्य और अपने परिवार को लेकर चिंतित थी। मैने नौकरी करने की भी सोची परन्तु मन दुविधाओं से घिरा होने के कारण कोई ठोस निर्णय नहीं ले पा रही थी। तभी किसी माध्यम से मुझे पता चला कि हमारे शहर में ही राष्ट्रीय उद्यमिता विकास एवं लघु व्यवसाय विकास संस्थान (निसबड) द्वारा उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। जो कि स्वरोजगार से सम्बन्धित था। स्वरोजगार शब्द तो मेरे लिए नया था क्यों कि मैंने कभी उद्यमिता के बारे में सोचा नहीं था। कहते हैं कि जब इन्सान को कोई रास्ता नहीं दिखता तब हल्की सी राह दिखने पर उसही रास्ते पर चल पड़ता है। इस ही सोच के साथ मैनें विज्ञापन में बताए गये पते पर जाकर उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम के बारे में जानना चाहा। मैने वहाँ पर मौजूद संस्थान के प्रतिनिधियों से उद्यमिता की जानकारी ली। फिर हमें साक्षात्कार के लिए भी बुलाया गया तथा चयन होने पर हमारा प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रारम्भ हो गया। ऐसा लग रहा था कि शायद भगवान ने मेरे लिए यह ही रास्ता चनु रखा है।

भगवान की मर्जी समझ कर एक ऊर्जा के साथ मैने उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिभाग करा। वहाँ पर मेरे कई साथी भी बनें। प्रशिक्षण कार्यक्रम में हमें विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों द्वारा भिन्न–भिन्न प्रकार की जानकारियाँ दी गयी जिसमें हमें बहुत सारी जानकारियाँ हासिल हुई। उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम में हमें स्वरोजगार स्थापना हेतु राज्य एवं भारत सरकार द्वारा चलायी जा रही विभिन्न योजनाओं के बारे में बताया गया जिसमें पी0एम0ई0जी0पी योजना अहम है। हमें मुद्रा लोन के बारे में भी बताया गया। इन योजनाओं में हम किस तरह ऋण हेतु आवेदन कर सकते है तथा योजना के अन्य लाभों के बारे में बताया गया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में बैंक अधिकारियों द्वारा हमें वित्तीय प्रबन्धन पर भी जानकारी दी गयी तथा हमें ऋण सम्बन्धी बहुत महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्रदान की गयी। योजना के अन्तर्गत ऋण लेकर हम किस तरह अपना स्वरोजगार शुरू कर सकते हैं, हमें यह भी समझाया गया। जो कि मेरे लिए एक सपने जैसा था। समस्त विशेषज्ञों ने हमें समय समय पर बहुत अच्छी एवं महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्रदान करी जिससे मेरा मार्गदर्शन हुआ और मैं बहुत ही प्रोत्साहित हुई। हमें बाजार सर्वेक्षण के बारे में जानकारी दी गयी जिसमें हमें बाजार मूल्य, भाव के बारे में जानकारी हासिल हुई।

हमारे प्रोत्साहन हेतु संस्थान के प्रतिनिधियों द्वारा एक सफल उद्यमी के साथ हमारा साक्षात्कार कराया जिससे हमारा मनोबल और बढ़ गया। अब मुझे लगने लगा था कि मेरा जीवन सफल तभी हो सकता है जब मैं प्रशिक्षण

कार्यक्रम में सीखी गयी जानकारियों को अपने हुनर में शामिल करूँ और अपने जीवन में उतार सकूँ क्यों कि सीखी गयी जानकारी अगर हम अपने जीवन में न उतारें तो सभी जानकारियाँ हमें वह लाभ नहीं दे पाऐंगी। इस ही सोच के साथ मैंने अपना स्वरोजगार स्थापित करने की सोची।

जब मैं अपने अतीत और आज की तुलना करती हूँ तो मुझे बहुत बड़ा अन्तर दिखता है। मैं दिल से उन सभी वक्ताओं/विशेषज्ञों का धन्यवाद देना चाहूँगी जिन्होने मुझे इस उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का महत्व बताया और इन्ही की वजह से मैंने अपना सिलाई केन्द्र खोला जिससे मौजूदा समय में मुझे रू0 6000 तक की आमदनी हो जाती है और अपने इस हुनर से अपना खुद का खर्चा निकाल लेती हूँ तथा किसी पर बोझ न बन, आत्म निर्भर बन चुकी हूँ। निसबड संस्थान के सहयोग के लिए मैं उन सभी का आभार प्रकट करती हूँ जिन्होने हमें अपनी पहचान कराई और हमारे हुनर को बाहर निकालकर हमें एक नई पहचान दिलाई।

64. डिजीटल प्वांईट

उद्यमी का नाम	राजकुमार तलवार
उद्यम का नाम	तलवार डिजीटल प्वांईट
उद्यम लागत	1.20 लाख रू0
उद्यम का स्थापित वर्ष	2018
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	1.5 –1.8 लाख रू0
उद्यमी का पता	कपूर कॉम्प्लेक्स, मेन मार्केट, उत्तरकाशी
कर्मचारियों की संख्या	01
उद्यम का प्रकार	सेवा

कहते हैं अगर मनुश्य में हौसला एवं हिम्मत हो तो वह हर बाधा को पार कर सकता है, चाहे वह उम्र के किसी भी पड़ाव में हो। संसाधनों का अभाव कभी भी योग्यता पर भारी नही होता है। इस कहावत को हकीकत में बदला है श्री राजकुमार तलवार ने। श्री राजकुमार तलवार जी कई वर्शों पूर्व उत्तरकाशी में आकर बसे थे। श्री मंगत राम जी के घर जन्में राजकुमार बचपन से ही बहुत मेहनती थे और किसी भी कार्य को बिना झिझके करना उनका स्वभाव था।

पाँच भाईयों एवं एक बहन में तीसरे नम्बर के राजकुमार तलवार ने 10

तक की शिक्षा ग्रहण करने के बाद उंन्होने कुछ समय तक नौकरी करने का फैसला किया। वह हमेशा से उद्यमी विचारों के थे और यही कारण था कि वह स्वंम् का उद्यम स्थापित करना चाहते थे । कुछ समय बाद वह काम के सिलसिले में दिल्ली भी गये जहाँ पर उन्होने कपड़े का काम भी किया। परन्तु उस कार्य में उनको सफलता न मिलने के बाद राजकुमार वापस उत्तरकाशी आ गये।

राजकुमार पहले से ही कार्य को सीखने की क्षमता रखते थे इसलिए उन्होने अपना कम्प्यूटर सेन्टर खोला और धीरे धीरे उसमें ऑनलाईन कार्य करने शुरू किये। साथ ही साथ उन्होने सी0एस0सी0 आई0डी के लिए भी आवेदन किया। हालांकि उन्हे पहले से कम्प्यूटर का अनुभव नहीं था लेकिन उन्होने हौसला बनाए रखा और दुकान में ही कम्प्यूटर सीखा।

उस सेन्टर को सी0एस0सी0 सेन्टर का रूप दिया और अस्तित्व में आया तलवार सी0एस0सी0 सेन्टर। वर्तमान में उनके इस सी0एस0सी0 सेन्टर में राजकुमार तलवार, उनका पुत्र सुधीर एवं एक अन्य लड़की कार्य कर रहे हैं। वर्तमान में उनके सी0एस0सी0 सेन्टर में वह कई तरह की सेवाऐं /सुविधाऐं प्रदान कर रहे हैं जिसके अन्तर्गत रेलवे टिकट, हवाई टिकट, पैन कार्ड, अन्य ई–डिस्ट्रिक्ट की सुविधाऐ प्रदान कर रहे हैं। कई तरह के प्रमाण पत्र भी उनके द्वारा बनाऐ जा रहे हैं। वे एल0आई0सी का प्रीमीयम भी जमा कर रहे हैं और साथ ही साथ वे कई अन्य तरह की सुविधा क्षेत्रवासियों को दे रहे हैं जिससे लोगों को अपने कार्य के लिए अपने क्षेत्र से दूर नहीं जाना पड़ रहा है जिससे लोगों में काफी उत्साह है और लोगों का जीवन आसान बन चुका है। राजकुमार ने बहुत कम समय में अपने क्षेत्र में बहुत नाम कमाया है और साथ ही साथ उन्हाने अपने सी0एस0सी को भी एक नई पहचान बनाई है।

आज राजकुमार के सी0एस0सी से लगभग रू0 30000 प्रति महीना की आय हो रही है अच्छी आय के साथ ही साथ वह अन्य लोगों को भी रोजगार दे पाने में सक्षम हो पाये है।

65. वस्त्र संसार

उद्यमी का नाम	रीना देवी
उद्यम का नाम	रीना बुटीक
उद्यम लागत	5,50,000 रू0
उद्यम का स्थापित वर्ष	2020 –21(पी0एम0ई0जी0पी)
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	2.5 – 3.0 लाख रू0
उद्यमी का पता	सहसपुर, देहरादून– 248197
कर्मचारियों की संख्या	03
उद्यम का प्रकार	सेवा क्षेत्र

जिस के ऊपर मॉ पिता का साया होता है, वह दुनिया में सबसे खुशनशीब इन्सानों में होता है। इस रहमत से दूर रीना ने अपना बचपन पिता के गुजर जाने के कारण अभावों और संघर्षो में बिताया पर आगे बड़ने का जज्बा उन्हें एक सफल उद्यमी बनाने में काफी सिद्व हुआ।

जसमत सिंह के घर जन्मी रीना बचपन से ही लगनशील थी। पढ़ाई हो या कोई हुनर सब कार्य दिल लगा कर सीखा करती थी। सहज 13 वर्श की आयु में रीना के सर से पिता का साया उठा उसका जीवन मानों बदल सा गया। पढाई 7वी कक्षा के बाद घर के हलातों के कारण रूक गई। 19 वर्श की उम्र में रीना का विवाह हो गया, उसके पति एक निजी विद्यालय में अध्यापन का कार्य करते थे।

गॉव में अभावों, सुविधा और आय के साधनों की कमी को देखते हुये वह सपनों की तालाश में देहरादून आ गये।

रीना के पति ने एक कम्पनी में कार्य करना प्रारम्भ किया। जिन्दगी कुछ बेहतर तो हुई थी पर वैसी नही हो पाई, जिसकी आस में वह अपना घर ऑगन छोड आये थे।

रीना के घर के नजदीक सिलाई सीखाने के लिये स्वयं सहायता समूह गठित किये गये। एक समूह की सदस्य के रूप में उन्होनें सिलाई सीखी। अपनी लगन और हुनर से वह कम समय में व्यवसाय के रूप में घर से सिलाई कार्य करने लगी। बढ़ते ग्रहको ने उसके उद्यम को एक स्वरूप देनें का मन तो बना पर कहॉ से यह सम्भव हो पायेगा। इसकी जानकारी और मार्गदर्शन के अभाव में वह मन मार कर बैठ जाती।

किसी परिचित के माध्यम से रीना को निसबड़ के बारे में पता चला। संस्थान में सम्पक्र कर उसने पी0एम0ई0जी0पी0 योजना के तहत 500000 रू0 के ऋण हेतु आवेदन किया। ऋण स्वीकृति के पश्चात् रीना की सिलाई ईकाई स्वरूप में आई। संस्थान से प्राप्त मार्गदर्शन और सहयोग से रीना नें अपनें उद्यम का पंजिकरण उद्योग आधार एवं जी.एस.टी पंजीकरण करवा कर अपना उद्यम कार्य प्रारम्भ किया।

आज रीना 25 से 30 हजार की मासिक आय के साथ 3 अन्य लोगों के रोजगार का साधन है। रीना कहती है हमें अपने प्रयासों मे कभी भी कमी नही रखनी चाहिये क्योंकि हमारी सफलता असफलता हमारे द्वारा किये गये प्रयासों पर निर्भर होती है।

66. सशक्त नारी : सशक्त राष्ट्र

उद्यमी का नाम	ए धनलक्ष्मी
उद्यम का नाम	डब्लू 2 डब्लू एन्टप्राईसेज
उद्यम लागत	20,00,000 रू0
उद्यम का स्थापित वर्ष	1,02,2019
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	45,00,000 रू0
उद्यमी का पता	4–1–110 कम्बन स्ट्रीटं पारवी मदुरै –625402
कर्मचारियों की संख्या	10
उद्यम का प्रकार	ग्रीन एन्टरप्रेनियरशीप प्लास्टिक बोतल कर्सर मशीनं

आवयश्कता ही अविष्कार की जननी है, यह वाक्य हमनें कही बार सुना है पर इसे चित्रार्थ करने वाले लोग ही असल में उद्यमी है। अक्सर लोग समास्यों के विषय में व्यापक बहस तो करते नजर आते है पर स्थाई समाधान कुछ बिरले ही खोज पाते है।

यह कहनी मदुरै की रहने वाली ए धनलक्ष्मी की है, जो एक जागरूक और शिक्षित परिवार से आती है। यही कारण था अपनी उच्च शिक्षा के तौर पर उन्होंने पीएचडी की उपाधि. मदुरै कामराज विश्वविद्यालय प्राप्त की है। अपने शैक्षणिक जीवन में वह सदैव ही जिज्ञासु छात्रा के जानी एंव पहचानी गई। उनका यही जिज्ञासु स्वभाव नौकरी की बजाय स्वरोजगार के लिये उन्हें प्रेरित करता था।

अपनी सोच को स्वरूप देने की खोज उन्हें संस्थान के करीब ले आई, जहॉ उन्होंने उद्यमिता में प्रशिक्षण प्राप्त

किया। एक व्याख्यान के दौरान साथी प्रशिक्षु ने लगभग व्यंग्यात्मक टिप्पणी करते हुए कहाकि ''उद्यमिता के बारे में बात करना इतना आसान नहीं है, आप एक उद्यमी के संघर्ष को कैसे जानते हैं।'' इसने उन्हें अंदर तक झकझोर दिया और फिर उसने एक व्यावसायिक विचार की तलाश शुरू कर दी।

प्लास्टिक एक ऐसी समास्या के रूप में हमारे जीवन का हिस्सा बन गया है, जिसे हम चाहकर भी हटा नही पा रहे है पर इसके निस्तारण के लिये हरित प्रयास के लिए ए धनलक्ष्मी आगे आई। एक कार्यशाला आयोजित करने के बाद पुणे से यात्रा करते समय, वह यात्रा के दौरान यह देखकर चौंक गई कि सड़क के दोनों ओर खाली पानी की फालतू बोतलों का ढेर पडा था। इसके समाधान के तौर पर उन्होंने हरित परियोजना को शुरू करने का निर्णय लिया। एक साल के शोध के बाद, वह उन्नत सेंसर के साथ उपयोग की गयी एक बोतल लेकर मशीन पर पहुंची। उसकी मशीन यह सुनिश्चित करती है कि फेंकी गई प्लास्टिक की बोतलों को कुचल दिया जाए। उसकी मशीन में किसी भी आकार की प्लास्टिक की बोतल को काटने के लिए विशेष सेंसर हैं। अगर कोई कांच की बोतल या कोई अन्य वस्तु फेंक देता है, तो सेंसर इतनी अच्छी तरह से काम करते हैं कि वे कुचले नहीं जाते।

मेंटर कैंप (प्रशिक्षण कार्यक्रम) के बाद, उनके द्वारा नगर निगम, रेलवे स्टेशनों के साथ स्थानीय प्रशासनिक कार्यालयों में अपनी श्रेडिंग मशीन को पेश किया गया, जो खाली फालतू बोतलों के कूड़े और अन्य प्लास्टिक अपशिष्ट को पुनः प्रयोगात्मक बनाने की दिशा में एक सकारात्मक पहल के रूप में सिद्व हुई।

हाल ही में ए धनलक्ष्मीने मदुरै जिला कलेक्टर से सर्वश्रेष्ठ सामाजिक उद्यमी का पुरस्कार भी जीता, क्योंकि वह हरित उद्यमिता में हैं और उनकी कंपनी की प्लास्टिक सेंसर गहन श्रेडिंग मशीनों ने अब तक 14 से अधिक प्रमुख बस स्टॉप और रेलवे स्टेशनों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है।

उसका दृढ़ संकल्प है कि प्राइम फुट फॉल क्षेत्रों, जैसे बस स्टॉप, रेलवे स्टेशन, हिल स्टेशन आदि में अपनी श्रेडिंग मशीन लॉन्च करे इसके लिए वह सीएसआर के तहत कॉर्पोरेट समर्थन के साथ प्राइम फुट फॉल क्षेत्रों, जैसे बस स्टॉप, रेलवे स्टेशन, हिल स्टेशन आदि में अपनी श्रेडिंग मशीन लॉन्च करने में सक्षम है। वह अब देश भर में महिला उद्यमिता कार्यशालाओं में एक नियमित वक्ता हैं। वह हरित उद्यमिता के प्रति अधिक महिला उद्यमियों को मार्गदर्शन प्रदानकर पर्यावरणको संरक्षित करने के साथ उनको आर्थिक रूप से सशक्त कर ही है।

67. विश्वास से भरी ममता

उद्यमी का नाम	मंमता देवी
उद्यम का नाम	ममता डेयरी
उद्यम लागत	5 लाख
उद्यम का स्थापित वर्ष	2020
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	3.5–4.0 लाख रू0
उद्यमी का पता	विकास नगर, देहरादून
कर्मचारियों की संख्या	4
उद्यम का प्रकार	डेयरी

ममता देहरादून के विकास नगर क्षेत्र की रहने वाली है और वह हमेशा से ही अपना कुछ व्यवसाय करना चाहती थी। कम उम्र में ही उसकी शादी हो चुकी थी। उसके पति एक इलैक्ट्रिशियन हैं जो कि बिजली का कार्य करते हैं। परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी न होने के कारण उन्हे कई सारी परेशानियों का सामना करना पड़ा जिससे उनकी व उनके परिवार की जरूरत पूरी नहीं हो सकती थी।

उसके कुछ कर गुजरने के जुनून ने उसको निसबड संस्थान का पता चला और वह उद्यमिता के बारे में जानकारी जुटाने के लिए संस्थान आई और उसे कई योजनाओं के बारे में पता चला जिससे वह अपना काम शुरू कर सके । ममता के पास पहले से ही दो गाय थी और वह अपने आस पास के क्षेत्र में एक डेरी शुरू करना चाहती थी परन्तु वह इससे अनभिज्ञ थी कि कैसे वह अपना डेरी का काम शुरू कर सके क्यों कि उसे डेरी से सम्बन्धित जानकारी नहीं थी। पी0एम0युवा योजना के अन्तर्गत निसबड के मेन्टरों द्वारा ममता को हैण्डहोल्डिंग सहायता प्रदान की गयी। इसके बाद उसने मै0 ममता डेरी के

नाम से अपनी एक डेरी शुरूआत हरिपुर, विकासनगर, देहरादून में करी।

ममता ने अपनी गायों का दूध इकट्ठा करना शुरू करना किया एवं कुछ दूध वह अपने आस पास के गाँव के घरों से इकट्ठा करना शुरू किया। उसने दूध एवं दूध से बनी वस्तुऐं जैसे पनीर, दही , घी , मावा और लस्सी बनाकर बेचना शुरू किया। उसके कुछ प्रमुख ग्राहक उसके आस पास क्षेत्र के गाँव के लोग हैं जो ममता से यह सब खरीदते हैं।

मेन्टरिंग सहायता के द्वारा ममता को प्रोजेक्ट रिपोर्ट बनाना सिखाया गया जिससे उसने पी0एम0ई0जी0पी लोन के लिऐ ऋण हेतु आवेदन किया। इसके बाद उसको खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड द्वारा 500000 रूपये का ऋण स्वीकृत किया गया।

उसने उन रूपयों का उपयोग कुछ मशीनरी, सामान एवं फर्नीचर खरीदने में किया। वह आजकल 25000 रूपये महीने की आय अर्जित कर रही है और साथ ही साथ उसने दो लोगों को भी रोजगार दिया हुआ है जिसे वह 12000 एवं 6000 रूपये की मासिक वेतन दे रही है।

68. जस्ट क्लिक

उद्यमी का नाम	संगीता रांगड
उद्यम का नाम	देवभूमि जन सुविधा केन्द्र
उद्यम लागत	1.5 लाख रू0
उद्यम का स्थापित वर्ष	2018
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	4.5 –5.0 लाख
उद्यमी का पता	मातली, उत्तरकाशी
कर्मचारियों की संख्या	01
उद्यम का प्रकार	सेवा

कहते हैं कि मुश्किलें मनुश्य इंसान का रास्ता नहीं रोक सकती बशर्ते उसमें इच्छाशक्ति होनी चाहिए। हर मनुष्य में कुछ न कुछ कौशल होता है बस जरूरत होती है अपने हुनर और कौशल को पहचानने की और साथ में जरूरत होती है सकारात्मक सोच की जो कि व्यक्ति को आगे बढ़ने में मदद करती है। ऐसी ही कुछ कहानी है जुझारू प्रवृत्ति की स्वामिनी संगीता रांगर की। संगीता के पिताजी का नाम श्री मोती सिंह कण्डासी जी हैं जो कि पूर्व में ग्राम प्रधान भी रह चुके हैं एवं संगीता की माता जी का नाम श्रीमति सूमा देवी है। संगीता के परिवार में उनके दो भाई और दो बहन है। संगीता की शिक्षा एम0ए0 तक की है।

जिस तरह हर माँ बाप का सपना होता है उस ही तरह संगीता के माँ बाप ने भी अपनी बेटी को अच्छी शिक्षा दीक्षा दी और उम्र के एक पड़ाव में पहुँचते ही संगीता का भी विवाह उत्तरकाशी के श्री सुनील रांगर से हो गया। हर लड़की की तरह संगीता को भी एक नया परिवार, एक नया माहौल मिला। परन्तु अपने मृदु व्यवहार के कारण संगीता ने ससुराल वालों का दिल जीत लिया। संगीता के एक देवर और ननद भी है। संगीता के पति नेस्ले कम्पनी में कार्य करते थे और स्वयं संगीता ने भी एक रियल इस्टेट कम्पनी (भूमि सेल्स) में लगभग एक साल तक कार्य किया।

सब कुछ ठीक ठाक चल रहा था परन्तु समय ने करवट बदली और संगीता के पति की तबियत खराब रहने लगी और उन्ह पैरालिसिस का अटैक पड़ा जिस के चलते उनको अपनी नौकरी छोड़नी पड़ी। नौकरी छोड़ने के बाद उनके सामने आर्थिकी का संकट खड़ा हो गया। एक तरफ परिवार की जिम्मेदारी और दूसरी ओर नौकरी छूटना, एक बुरे ख्वाब जैसा लग रहा था। जीवन बड़ा मुश्किलों भरा सा गुजरने लगा।

धीरे धीरे सुनील का मनोबल टूटने लगा ऐसे में उनकी पत्नी संगीता उनका सहारा बनी। कम्प्यूटर का ज्ञान होने के चलते दोनो ने कम्प्यूटर से सम्बन्धित कार्य करना शुरू किया जिसके चलते उन्होने कई कार्य करने शुरू किऐ। धीरे–धीरे उन्होने डिजिटल सेवा केन्द्र खोलने की सोची और कॉमन सर्विस सेन्टर के लिए आवेदन किया और अस्तित्व में आया रांगर कम्प्यूटर एण्ड सी0एस0सी0 सेन्टर, जिसके अन्तर्गत बहुत सी सरकारी एवं गैर सरकारी सेवाऐं प्रदान की जाती हैं जैसे हवाई टिकट, रेलवे टिकट, पैन कार्ड बनाना, बिजली/पानी बिल भुगतान आदि सेवा प्रदान की जाती है। साथ ही साथ संगीता अपने सी0एस0सी से ई–डिस्ट्रिक्ट सेवा जैसे जाति प्रमाण पत्र, आय प्रमाण पत्र एवं अन्य कई प्रमाण पत्र बनाने का कार्य कर रहे हैं।

संगीता के सी0एस0सी में आज वे स्वयं उनके पति एवं एक लड़का कार्य कर रहे हैं जिससे उनकी आय लगभग रू0 35000 से 40000 प्रति माह हो रही है और उनके परिवार की आर्थिकी भी बेहतर हो रही है और साथ ही साथ संगीता का सी0एस0सी अपने क्षेत्र में एक जाना माना नाम बन चुका है जिससे और लोगों को भी प्रेरणा मिल रही है।

69. आकार से साकार तक

उद्यमी का नाम	नेहा
उद्यम का नाम	नेहा सिलाई सेन्टर
उद्यम लागत	40000
उद्यम का स्थापित वर्ष	2020–21
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	1.0 –1.20 लाख
उद्यमी का पता	59, चण्डीगढ़ मौहल्ला, बस्ती, दानिशमन्दा, जालंधर
कर्मचारियों की संख्या	01
उद्यम का प्रकार	सेवा का क्षेत्र

मेरा नाम नेहा है तथा मेरे पिता का नाम श्री यश पाल है। बचपन से ही संघर्ष पूर्ण जीवन बिताने वाले मेरे परिवार में सिर्फ मेरे पिता ही काम करते हैं तथा उन्की ही आमदनी से हमारा घर का खर्च मुश्किल से चलता है और मेरी माता जी एक गृहणी हैं। विगत दो वर्षों से लॉकडाउन के कारण पिता जी का काम भी बंद हो गया है और परिवार का भरण पोषण एवं गुजारा भत्ता भी नहीं हो पा रहा है। कहते हैं कि मनुष्य को जीवन में सफल होने के लिए ऊँचे लक्ष्य साधना आवश्यक है क्योंकि लक्ष्य ही हमें सफलता की ओर अग्रसर होने के लिए प्रेरित करते हैं।

जैसे संसाधनों का अभाव कभी भी योग्यता पर भारी नहीं पड़ता और किसी का भी जीवन भी पूर्व निर्धारित नहीं होता। सब कुछ आपके कर्मों पर निर्धारित होता है। हमारा परिवार बहुत मुश्किल हालातों से गुजर रहा है, मैं भी अपने

परिवार की इस स्थिति को देखते हुए बहुत परेशान होती हूँ, लॉकडाउन की वजह से भी मेरे पिताजी का काम सुचारू रूप से नहीं चल रहा है। मैं भी अपने परिवार की आर्थिक हालात में सुधार करना चाहती हूँ जिससे मैं अपने पैरों पर स्वयं खड़ी हो सकूँ और परिवार की भी आर्थिक हालात सुधार सकूँ। इस ही कशमकश में एक दिन अचानक मुझे सूत्रों से पता चला कि राष्ट्रीय उद्यमिता विकास एवं लघु व्यवसाय विकास संस्थान (निसबड) जो कि कौशल विकास एवं उद्यमशीलता मंत्रालय के अधीन एक संस्थान है द्वारा 15 दिवसीय कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारम्भ किया जा रहा है जिससे बेरोजगार युवक और युवतियाँ अपना स्वरोजगार खोलने हेतु अपने हुनर को निखार सकते हैं।

मैने प्रशिक्षण स्थान पर जा कर वहाँ पर मौजूद संस्थान के प्रतिनिधियों से मिली और उन्होने मुझे उद्यमिता विकास कार्यक्रम के बारे में बताया जिससे मुझे लगा कि शायद मैं भी स्वरोजगार के क्षेत्र में अपना कैरियर बना सकती हूँ। साक्षात्कार के बाद मेरा भी चयन उद्यमिता कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम में हो गया।

उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमों में बहुत सारे विशेषज्ञों द्वारा विभिन्न प्रकार की जानकारियाँ दी गयी जिसमें हमें बहुत मूल्यवान जानकारियाँ हासिल हुई। उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम में हमें स्वरोजगार हेतु राज्य एवं भारत सरकार द्वारा चलायी जा रही विभिन्न योजनाओं के बारे में बताया गया जिसमें पी0एम0ई0जी0पी योजना में हम किस तरह ऋण हेतु आवेदन कर सकते है तथा योजना के अन्य लाभों के बारे में बताया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में उद्योग विभाग के अधिकारियों ने समय समय पर हमारा मार्गदर्शन किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में बैंक अधिकारियों द्वारा भी हमें ऋण सम्बन्धी बहुत महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्रदान की गयी। समस्त विभागों के प्रवक्ताओं ने हमें समय समय पर बहुत अच्छी एवं महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्रदान करी जिससे मेरा मार्गदर्शन हुआ और मैं बहुत ही प्रोत्साहित हुई। धीरे धीरे मुझे लगने लगा कि जैसे मेरे अंधेरे जीवन में प्रकाश की किरण समाहित हो रही हो।

इन सभी प्रवक्ताओं एवं प्रशिक्षण से मेरे अन्दर एक ऊर्जा का संचार होने लगा। क्योंकि मुझे सिलाई का शौक पहले से ही था और इस हुनर को मैने अपने रोजगार का जरिया बनाया जिससे शुरू शुरू में मुझे नाममात्र की कमाई हो रही थी परन्तु धीरे धीरे मुझे लगा कि मैं अपना खुद का खर्चा तो निकाल ही सकती हूँ। मैने पहले से थोड़ी और मेहनत करी तथा अपने प्रशिक्षकों से प्रोत्साहन लेती रही। कुछ समय बाद मेरा काम और अच्छा चल पड़ा और मैं आज रू0 10000 तक कमा लेती हूँ तथा आत्म निर्भर बन चुकी हूँ। मैं धन्यवाद देती हूँ संस्थान एवं उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का और उन प्रशिक्षकों का जिन्होने मेरा समय समय पर मनोबल बढ़ाया और मुझे टूटने नहीं दिया तथा आत्म निर्भर बनाया और जिन्होने मेरी जिंदगी बदल कर मुझे औरों के लिए प्रेरणा स्त्रोत बनाया।

70. डर्बी

लाभार्थी का नाम	श्री भूमिनाथन
उद्यम का नाम	डर्बी' गारमेंटसे
उद्यम का पता	शॅाप न0 4 विशाल डी माल गोखले रोड, मदुरै
उद्यम की स्थापना	2013
उद्यम का प्रकार	रेडिमेड गारमेंटस
कुल लागत	1500000रू0
टर्नओवर	1200000रू0

मानव सभ्यता के विकास क्रम में मनुष्य के पहनावे में व्यापक बदलाव आया है। आज यह राष्ट्रीय आय में महत्वपूर्ण स्रोत होने के साथ ही स्वरोजगार और रोजगार की असीम सम्भावना भी साथ लिये है।

आज वस्त्र उद्योग अपने आप में निर्माण,विक्रय,डिजाईनिंग आदि क्षेत्रों में स्वरोजगार के प्रति युवाओं को अकर्षित कर रहा है। भूमिनाथम भी एक ऐसे युवा है जिन्होंनें इस क्षेत्र को अपनी आजीविका संवर्द्वन के रूप में चुनने के साथ ही अन्यों के लिये भी रोजगार के अवसरों को भी बढाने का कार्य किया है।

मदुरै, तमिलनाडु के रहने वाले भूमिनाथम ने अपनी एमबीए की शिक्षा प्राप्त कर किसी बहुराष्ट्रीय कम्पनी में काम करने की जगह अपना स्ंवय् का कार्य करने का मन बना लिया। वर्ष 2013 में उन्होंने1500000रू0 का निवेश कर ''डर्बी''क्लाथ स्टोर की स्थापना कर रेडिमेड गारमेंन्टस्

के विक्रय का कार्य प्रारंभ किया। अपने उद्यम की प्रगति और विस्तार की योजना को किस रूप में क्रियान्वित करे, इसके मार्गदर्शन के लिये वह संस्थान के सम्पक्र में आये।

बूमिनाथन ने मदुरै में संस्थान द्वारा आयोजित परामर्श शिविर में भाग लिया और सलाहकारों, उद्योग विशेषज्ञों, सरकार और बैंक अधिकारी के सत्रों से जानकारी प्राप्त उन्होंने अपने उद्यम में इनर वियर को भी जोड़कर अपने व्यवसाय में विविधता लाने का फैसला किया है। उन्होंने तिरुपुर में अग्रणी इनर वियर निर्माताओं के साथ व्यापार स्थापित कर अपने उद्यम को विस्तारित किया।

आज बूमिनाथन लगभग 10 व्यक्तियों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार प्रदान करने के साथ साथ प्रति वर्ष लगभग 12,00,000 रुपये का कार्य कर रहे हैं।

71. डिजीटल पथ पर बढ़तें कदम

उद्यमी का नाम	सीता कठैत
उद्यम का नाम	कठैत डिजीटल केन्द्र
उद्यम लागत	1.50 लाख रू0
उद्यम का स्थापित वर्ष	2018
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	2.5 – 3.0 लाख
उद्यमी का पता	पीपल मण्डी, चिन्यालीसौर, उत्तरकाशी
कर्मचारियों की संख्या	01
उद्यम का प्रकार	सेवा

जहाँ चाह होती है, वहीं राह भी बन जाती है ऐसी ही कहावत को चरितार्थ किया है चिन्यालीसौर की सीता ने। स्वर्गीय हुकुम सिंह जी जो कि एक किसान थे के घर जन्मी सीता एक होनहार लड़की है। उनकी माता जी का नाम श्रीमति माला देवी है। सीता के दो भाई और दो बहन है। सीता का बचपन काफी संघर्षो भरा रहा है। काफी चुनौतियों के साथ उनका जीवन व्यतीत हुआ। सीता की शुरूवाती शिक्षा दीक्षा उत्तरकाशी से हुई।

टी0एच0डी0सी के अन्तर्गत चलने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रम में उन्होने वहाँ प्रशिक्षण भी लिया जिसमें चालीस छात्रों के बैच में सीता को प्रथम स्थान भी मिला। जिसके बाद उनके सपनों को हौसला भी मिला।

तदोपरान्त सीता ने पढ़ाई के बाद नव ज्योति जन कल्याण समिति, टिहरी में एक एन0जी0ओ में लगभग तीन साल तक कार्य भी किया जिसमें उन्होने कई सामाजिक कार्य भी किये एवं टी0एच0डी0सी के माध्यम से कई प्रशिक्षण कार्यक्रम भी कराये। वहाँ पर सीता ने कम्प्यूटर प्रशिक्षक के रूप में कार्य किया।

हर लड़की के सपनों की तरह कुछ समय बाद सीता का विवाह भी उत्तरकाशी के श्री आदित्य रमोला जी के साथ हो गया। उनका अपना गाड़ियों का कारोबार था। परिवार की आय बढ़ाने के लिए सीता ने भी कुछ कार्य करने की सोची। क्योंकि उनको कम्प्यूटर का काफी अच्छा ज्ञान था जिसके चलते उन्होने सी0एस0सी केन्द्र खोलने की सोची और इस तरह शुरूवात हुई उनके कॉमन सर्विस केन्द्र की जिसका नाम रखा गया नव ज्योति जन सेवा केन्द्र की। जिसे दोनों पति पत्नी मिलकर चला रहे हैं। संगीता ने आई0आई0बी0एफ की परीक्षा भी पास की है।

वर्श 2016 से इसके अन्तर्गत वे काफी सुविधाऐं लोगों तक पहुँचा रहे हैं जिसमें एल0आई0सी प्रीमियम, रेलवे टिकट, एयर टिकट, बिजली/पानी का बिल भुगतान, मोबाइल/डी0टी0एच इत्यादि जैसी सेवाऐं जन जन तक पहुँचा रहे हैं। उनके द्वारा ई–डिस्ट्रिक्ट जैसी सेवाऐं भी प्रदान की जा रही हैं जिसमें कई तरह के प्रमाण पत्र भी बनाऐ जाते हैं जैसे जाति प्रमाण पत्र, आय प्रमाण पत्र, आयुश्मान कार्ड एवं अन्य कई तरह की सुविधाऐं लोगों तक पहुँचाई जा रही है जिससे लोगों में काफी जागरूकता भी फैली है।

72. कोशिश से कामयाबी तक

उद्यमी का नाम	अनीता सतपसे
उद्यम का नाम	प्रियांक मशरूम फार्म
उद्यम लागत	20000
उद्यम का स्थापित वर्ष	2020
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	3.0–3.5 लाख
उद्यमी का पता	सतगांव, जिला नागपुर
कर्मचारियों की संख्या	**05**
उद्यम का प्रकार	उत्पादन का क्षेत्र

महिला न केवल सृजन का प्रतीक है बंलकि अपनी जीवटता और रचनात्मकता से सभी को प्रेरण प्रदान करने वाली प्रकृति की बनाई अद्वितीय कृति भी है। सतत प्रयासित रहकर अर्थिक,समाजिक रूप से परिवार को सशक्त बनाने का कार्य करने वाली,देश की आधी आबादी महिला ही है। लगातार नये खेजने के प्रयासों का परिणाम है कि आज आय/अजीविका सवर्धन के नये नये क्षेत्रों को भी विकसित कर रही है।

महाराष्ट्र राज्य के साथ पुरे देश मे अपने संतरो के लिये प्रसिद्व तेजी से आईटी उद्यम संकुल क्षेत्र के रूप में विकसित नागपुर जिले में पड़ने वाले सतगांव की रहने वाली अनीता सतपसे की कहानी भी महिला सहभागिता को बताती है।

अनिता एक कर्मठ महिला है जिन्होने अपनी पहचान बनाने के लिए बहुत मेहनत की और आज अपनी मेहनत से सफलता के मुकाम को हासिल किया।

एक किसान परिवार से आने वाली अनीता के परिवार में कुल 5 सदस्य रहते है। कृषि कार्यों के साथ साथ उनके पति का बकरी पालन का व्यवसाय भी करते है। स्नातक तक की पढ़ाई पूरी कर चुंकि अनीता घर के काम के साथ साथ अपने पति के व्यवसाय में भी उनका सहयोग करती थी। हमेशा कुछ नया सिखने की जिज्ञासु प्रवृति ने अनिता को संस्थान से मिलाया। अनीता ने सन् 2020 में पीएमयुवा योजना के अन्तर्गत प्रशिक्षण प्राप्त किया जिसमें उन्होने व्यवसाय प्रारंभ करना, व्यवसाय करने के लिए सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओ, बैंक से ऋण लेने का क्या प्रावधान है और उद्यम संचालन,प्रबंधन आदि विषयों की जानकारी प्राप्त की, प्रशिक्षण से मिले मार्गदर्शन ने उनके मन में भी उद्यम के बीज को अंकुरित किया। अपने पुर्व ज्ञान,कौशल और प्राप्त प्रशिक्षण के आधार पर अनीता ने मशरूम के कार्य को करने का मन बनाया।

अनिता के विचारों और संस्थान के मार्गदर्शन को उसके परिवार का भी पुरा सहयोग मिला। अपनी स्वंम् की भूमि पर उसने मशरूम प्लाटं लगाया। जहॉ अनीता ने मशरूम उगाने के साथ साथ उससे निर्मित कई प्रकार के उत्पाद जैसे आचार, पॉपपैडम,मशरूम पाउडर,कुकीज और नुडल्स बनाना शुरू कर दिये। जिनका विक्रय वह अपने नजदीकी बाजार में करने लगी। जिससे उनको अच्छी आय होने लगी।

प्रतिमाह 30000 से 40000 रूपये कमाने वाली अनिता आज स्वरोजगार स्थपित कर आज न केवल अपनी आय अर्जित कर रही है बंलकि 5 अन्यों लोगों की अजीविका का माध्याम भी है।

अनिता कहती है अभी तो यह महज शुरूआत भर है। अपने उत्पादों की श्रृंख्ला और व्यापार क्षेत्र को विस्तृत करने की योजना बन रही अनिता कहती है " मुझ जैसी ग्रामीण परिवेश की महिला आज आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में अपना योगदान दे पा रही है, तो सभी महिलायें अपने कौशल और उद्यमिता मार्गदर्शन से अपने, अपने परिवार और राष्ट्र को समृद्व बनाने में अपना योगदान दे सकती है"।

73. बदलती नारी : निखरता देश

उद्यमी का नाम	अनीता सतपसे
उद्यम का नाम	प्रियांक मशरूम फार्म
उद्यम लागत	20000
उद्यम का स्थापित वर्ष	2020
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	3.0–3.5 लाख
उद्यमी का पता	सतगांव, जिला नागपुर
कर्मचारियों की संख्या	**05**
उद्यम का प्रकार	उत्पादन का क्षेत्र

कौशल के माध्यम से कुशल भारत की संकल्पना को साकार करने के लिए समाज के सभी वर्ग विशेशकर युवा वर्ग प्रतिबद्व होकर अपना योगदान दे रहा है। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ के गॉव माती की रहने वाली गीता ने कौशल को न केवल आजीविका का आधार बनाया बल्कि अन्य लोगों को भी कौशल प्रदान कर स्वरोजगार एवं रोजगार के अवसर उपलब्ध कराये है।

हरियाणा के यमुनानगर जिले के जयधर गांव में शेर सिंह के यह बृजमोहिनी का जन्म हुआ। ग्रमीण परिवेश में कृशक पिता की देखरेख में उसका बचपन गुजरा। गृहकायों के साथ साथ बृजमोहिनी सिलाई बुनाई के कायों में अपना समय देने लगी। समय बडता गया और बलिग होने पर बृजमोहिनी का विवाह ग्रम पो0 ओ0 सभावाला, देहरादून के रहने वाले सुरेश कुमार के साथ हो गया।

शादी के बाद भी उसने सिलाई कार्य को जारी रखा। अपने गुणवत्तापूर्ण कार्य और मधुर व्यवहार से बृजमोहिनी अपने आस पास की महिलाऔं के लिये प्रेरणा बन गई। वह अपने कार्य से आय अर्जित कर न केवल अपनी परिवरिक आय में अपना अहम योगदान दे रही थी बलंकि उसके साथ साथ अन्य महिलाऔं को भी प्रशिक्षित कर कुशल बनाने का कार्य भी करने लगी। अभी तक यह सारा काम घर से ही चल रहा था पर बृजमोहिनी ने इसे अब व्यवस्थित और व्यापक रूप से प्रारम्भ करने का मन बना लिया। बृजमोहिनी की कार्य इच्छा, उसके प्रयास उसे उस दिशा की तरफ ले आये जहॉ से उसे अपना उद्यम शुरू होता नजर आने लगा। प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम योजना के अन्तर्गत बृजमोहनी ने 10 लाख रू0 के ऋण हेतु आवेदन किया। इस बीच बृजमोहिनी ने संस्थान से प्रशिक्षण प्राप्त कर उद्यम स्थापना एवमं उद्यमिता की प्रेरणा, वित्तिय प्रबन्धन, बाजार सर्वेक्षण एवं समस्त विभागों की उद्यम स्थापित करने हेतु योजनाओं का उपलब्ध अवसरों की जानकारी प्राप्त की ।

बृजमोहनी कहती है आज संस्थान के सहयोग से मैं सिलाई का कार्य बडे स्तर पर करने में सक्षम हो पाई जिससे मैं अपने गांव और आस पास की लडकियों और महिलाओं को भी रोजगार उपलब्ध करवा पाई। हमारा रेडिमेड गारमेन्टस का कार्य भलीभांति चल रहा है जिसमें हम रेडिमेट शर्ट, प्लाजो, कुर्ती इत्यादि तैयार करते है और अच्छे काम के अच्छे दाम भी बाजार से पाते हैं।

बृजमोहनी उन महिलाओं के लिए एक प्रेरणा है जो आभावों को अपनी नियती मान कर कश्टपूर्ण जीवन जी कर खुद को और देश को कमजोर कर रही है। अपने संबल और साकारात्क मार्ग दर्शन से न केवल अपने जीवन को बेहतर किया जा सकता है, बल्कि औरो को भी रोजगार के अवसर उपलब्ध कराये जा सकते है। बृजमोहनी महिलाओं को आर्थिक के साथ–साथ सामाजिक स्तर पर सशक्त होने के लिए प्रेरित कर रही है।

74. बढ़तें कदमों का साथी

उद्यमी का नाम	राजेन्द्र मलुडा
उद्यम का नाम	गढवाल फुटवियर
उद्यम लागत	04 लाख रू0
उद्यम का स्थापित वर्ष	2019
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	4.0 –5.0 लाख
उद्यमी का पता	उत्तरकाशी
कर्मचारियों की संख्या	02
उद्यम का प्रकार	मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना

प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण उत्तराखंड का सबसे बडा जनपद उत्तरकाशी जो गंगा,यमुना के उदगम स्थल के रूप में भी विख्यात है,एक खुबसूरत पर्वतीय नगर है। सभी को दिखने वाली सुन्दरता के बीच,ये पहाड कही पीडाऔ को भी अपने में समेटे हुए है। हिमालयी राज्यों में से एक उत्तराखंड अपने युवाऔं के पलायन का दंश झेल रहा है। जहॉ एक ओर युवा अपनी अजीविका और सुविधापूर्ण (कृत्रिम) संसाधनों की चाह में पलायन कर रहा है वही दुसरी ओर राजेन्द्र मलुडा अपना स्वरोजगार स्थपित कर अपनी जन्मभूमि को अपनी कर्मभूमि बना कर अन्यों को प्रेरित करने का कार्य कर रहे है।

नारायण सिंह मलूडा के घर जन्में राजेन्द्र की शिक्षा दीक्षा उत्तरकाशी में हुई। पिता का स्वंम का व्यवसाय था। राजेन्द्र ने माध्यमिक शिक्षा उत्तरकाशी से प्राप्त कर अभियांत्रिकी में

डिप्लोमा उत्तीर्ण करने के बाद विभिन्न निर्माण कम्पनियों में कार्य किया। भविश्य के स्थायित्व की चिंता उसे अक्सर भयभींत करती रहती। इसी बीच उसका विवाह भी हो गया। बडतें समय के साथ उसकी जिम्मेदारी बडने के साथ अजीविका संवर्धन की चिंता और भी बडती जा रही थी। अपने मित्रों से मिली जानकारी के आधार पर राजेन्द्र ने निसबड के अधिकारियों से परामर्श प्राप्त कर अपना स्वमं का उद्यम स्थापित करने का निर्णय लिया।

बाजार संर्वेक्षण करने के बाद राजेन्द्र ने 2021 में मुख्यमंत्री स्वरोजगाार योजना के तहत 3.60 लाख का ऋण प्राप्त करं फुटवेयर व्यवसाय को अपनी आजीविका का साधन चुना। अपने कुशल व्यवहार से जल्द ही राजेन्द्र ने बाजार में अपनी पकड बनाकर अपने उद्यम में उन्नति पाई।

आज राजेन्द्र गढवाल फुटवेयर के व्यापार को बडाने में लगे है। वहॉ अपने काम से खुश तो है पर संतुश्ट नही है। वो कहते है सन्तुश्ट होना मनुश्य की प्रवृति नही है। हमें सतत रूप से प्रयास करते रहना चहिये क्योंकि हमारे प्रयास ही हमें मिलने वाली सफलता को तय करते है।

75. डोगरा आर्ट

उद्यमी का नाम	डोगरा आर्ट प्राईवेट लिमिटेड
उद्यम का नाम	डोगरा आर्ट प्राईवेट लिमिटेड
उद्यम लागत	5 लाख रू
उद्यम का स्थापित वर्ष	2016
अनुमानित वार्षिक उत्पादकता	10.0 –12.0 लाख
उद्यमी का पता	शिल्पा डांगा, बिकना, बनकुरा, वेस्ट बंगाल–722155
कर्मचारियों की संख्या	11
उद्यम का प्रकार	उत्पादन

पश्चिम बंगाल में बांकुरा जिले का बिकना गांव लगभग 296 कारीगरों का घर है, जो आदिम डोकरा कला का अभ्यास करते हैं और इसे अपने गांव में आने वाले पर्यटकों और ग्राहकों को बेचते हैं।

ये कारीगर समूह के हिस्से के रूप में संगठित नहीं थे और ज्यादातर स्वतंत्र रूप से अपना छोटा सेट–अप चला रहे हैं और अपने उत्पाद बना रहे हैं इससे उन्हें हर महीने एक लाख रूप्ये की आमदनी होती थी।

पीएम युवा ने सहयोगी संगठन के सहयोग से बिकना गांव मे सामुदायिक जागरूकता शिविर का आयोजन किया, जिसमें डोकरा कला में 110 स्थानीय कारीगरों को आमंत्रित किया गया। वे योजना के बारे में उन्मुख थे, और यह समर्थन नए और उद्यमों को हैंडहोल्डिंग

और सलाह समर्थन के माध्यम से प्रदान करता है। उन्हें एक संगठित सेट–अप का हिस्सा बनने की आवश्यकता और अधिकतम सरकारी लाभ प्राप्त करने के लिए एक उद्यम को औपचारिक रूप देने की आवश्यकता के बारे में बताया गया।

जगरूकता शिविर मे भाग लेने वालों में से तीस पगतिभागियो ने इस विचार को आगे बडानें मे रूचि दिखाई। तत्पश्चात उनके लिए एक कठोर 3 दिवसीय परामर्श शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें उन्हें एक प्राईवेट लिमिटेड कंपनी बनाने का गहन विवरण प्रदान किया गया। यह उन्हें पूरे भारत में सामूहिक रूप से अपने उत्पादों को बेचने, और अधिक लाभ अर्जित करने और सरकारी लाभ प्राप्त करने में सक्षम बनाएगा। यह बिचौलियों/एजेंटों की भागीदारी को और कम करेगा और इस प्रकार उनकी सौदेवाजी और आय शक्ति में सुधार करेगा। उन्हं राश्ट्रीय और अंतर्राश्ट्रीय बाजार में नवीनतम डोकरा कला के डिजाइन और वीडियो दिखा गये।

ये कारीगर कार्यान्चयन भागीदार इनक्यूबेशन सपोर्ट सिस्टम का भी हिस्सा है जिसके माध्यम से उत्पाद बनाने के लिए कच्चे माल और अन्य आवश्यक वस्तुओं की खरीद के लिए धन जुटाया जाता है। एक बार कंपनी औपचारिक रूप से पंजीकृत हो जाने के बाद, यह कार्य शेयरधारकों के आवंटित किया जायेगा। वर्तमान में 11 शेयरधारक अपने व्यक्तिगत उतपादों को आंगतुकों को बेचते है। यदि वे डोकरा आर्टस के माध्यम से बेचते हैं तो शेयरधारकों के रूप मे, लाभ सदस्यों के बीच विभाजित किया जाता है।

सत्यमेव जयते

भारत सरकार

कौशल विकास एवं उद्यमशीलता मंत्रालय

राष्ट्रीय उद्यमिता एवं लघु व्यवसाय विकास संस्थान

मुख्य कार्यालय - ए-23, सेक्टर-62, (संस्थागत क्षेत्र), नोएडा-201309, उ0प्र0

दूरभाष - 0120-4017000

वेबसाइट - www.niesbud.nic.in

मूल्य : ₹ 500/-